

UnEven Page Numbers Within The
Book Only

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_222620

UNIVERSAL
LIBRARY

قیمت تیس روپے

مূল्य रु. ३०

U 4630

सूची

भूमिका ११

भजन ३३

शब्दावली २७४

1915 d 11

म

नियंत्रण

4

891.4311

1915 d 11

फहरमत

१०

दियाचे

२२

बेहजन

२१२

ترجمہ

२८०

فرہنگ

भजन १९१

१५१ भजन

पाना पाना
पिंड रोग पंढरूक
छाने छहाने
लांघन लान्गोन
राम मिलनके जोग राम मन के जोग
छोई लुनी
दाधी दहाही

मांस गले गल मानस गले कल
छीजयो जेजियो
करक करी
गल कल
आंगुग्या अंगुरिया
री री
मुदडी मडरी
आवन लागी बांह ओन लाकी बांह
रहो रहो रहो रहो
सामले सामले
खिन कहेन
मंदिर मंदर
बिथा बिथा
बूभे बूभे
कौवा कौवा

भजन १९२

भुमंग भुमंग
उमंग उमंग

पत्रा पत्रा
कमल रोग یرقان
छानने (पानी) छहानने (पानी)
छानने का टोटका () छहानने का टोटका ()
नांवने (रस्सी) नांनगहनने (रसी)
नांवने का टोटका नांनगहनने का टोटका
राम से मिलने के लिये राम से मिलने के लिये
लेना لینा
जलाई हुई, तपी जलानी हुनी
हुई न्ही हुनी
मांस गल गल का मांस गल गल का
कम हुआ कम हुआ
दर्द दर्द
गले में गले में
ऊंगली अंगली
की की
अंगुठी अंगुठी
बांह में आने लगी बांह में आने लगी
रह रह कर रह रह कर
सुने सुने
छिन छिन
वर वर
हालत हालत
समझे समझे
कवा कवा

१५२ भजन

सप सप
लगन लगन

भजन १४७

१४८

आर्द्ध	याद	याद	याद
अकुलावै	व्याकुल हो	व्याकुल हो	व्याकुल हो
वर्णन न जाय	कहा न जाय	कहा न जाय	कहा न जाय

भजन १४८

१४९

सीस	सीख, नसीहत	सीख, नसीहत	सीख, नसीहत
जिय	मन में	मन में	मन में
बेदन	दुःख	दुःख	दुःख
त्रिमि	जिस प्रकार	जिस प्रकार	जिस प्रकार

भजन १४९

१५०

अलूनी	बिना नमक, फीकी	बिना नमक, फीकी	बिना नमक, फीकी
धुमट	उमंडकर	उमंडकर	उमंडकर
उरल आई	टुट पड़ी	टुट पड़ी	टुट पड़ी
बुतावे	बुझावे	बुझावे	बुझावे
जड़ी	अवधि	अवधि	अवधि
आन	भाकर	भाकर	भाकर
बतलावै	चातें करे	चातें करे	चातें करे

भजन १५०

१५१

लाडी	लाडली	लाडली	लाडली
चमक उठी	चौक उठी	चौक उठी	चौक उठी
चंद्रकला	मोहके पंख में	मोहके पंख में	मोहके पंख में
	रुगी जो निशान बने	रुगी जो निशान बने	रुगी जो निशान बने
	होते हैं।	होते हैं।	होते हैं।

भजन १४४

भजन १४४

उमग्यो	अम्बो	उमडी	अम्डी
इन्द्र	अन्द्र	घटा	कहा
अविनासी	अवी नासी	जो नाश न हो	अविनासी
		सके	

भजन १४५

भजन १४५

जित	जित	मत न	मत - न
ढाला दे जावो	ढाला दे जावो	ढाल देना	ढाल देना
राखूं बिराज	राखूं बिराज	मान के साथ	मान के साथ
		बिठा रखूं	बिठा रखूं
सिर ताज	सिर ताज	पति, मालिक	पति, मालिक
पावणा	पावणा	अतिथि	अतिथि
थां के	थां के	तम कव	तम कव
घणेर	घणेर	बहुतों के	बहुतों के
रस राज	रस राज	रसया	रसया
सिरोमनी	सिरोमनी	प्रतिष्ठावान	प्रतिष्ठावान
भान	भान	सूर्य	सूर्य
पुण्य का ताज	पुण्य का ताज	नेकी के ताज	नेकी के ताज

भजन १४६

भजन १४६

धें	धें	तुम	तुम
नेतहडी लगाय	नेतहडी लगाय	प्रेम करके	प्रेम करके
बिस्वास संघाती	बिस्वास संघाती	विश्वासी साथी	विश्वासी साथी
नेह	नेह	प्रेम	प्रेम
रहाइ	रहाइ	रहा ही	रहा ही

अनेक भक्तों का नाम
अनेक भक्तों का नाम
अनेक भक्तों का नाम

भजन १४०

भजन १४०

अनारी	अनारी	अनाड़ी	अनाड़ी
उधारी	अकहारी	खुली हुई, नंगी	कहली हुनी बरहने

भजन १४१

भजन १४१

बिनमाल	बिनमाल	वेदाम	बे दाम
ओरहि ओर ओर	ओर ही ओर बोलै	ओरही ओर बाले	ओर ही ओर बोलै
बोलै		कुछ का कुछ बोलै	कुछ का कुछ बोलै

भजन १४२

भजन १४२

न्योरी	न्योरी	अनोखी न्यारो	अनोखी न्यारी
जोवती	जोवती	देखती है	देखती हैं
चहुँ देत	चहों दित	चारों ओर	चारों ओर
सबन पर	सबन पर	सबपर	सब पर
धमार राग	धमार राग	एक विशेष गाना	एक खास गाना
		जो होलीमें गाया	जो होली में गाया
		जाता है	जाता है
तह	तह	उसपर	उसपर
कल	कल	कर	कर
करतारी	करतारी	ताली बजानेकी	ताली बजाने की
		एक क्रिया	एक क्रिया

भजन १४३

भजन १४३

बिलमाई	बिलमाई	वहला लिया	बेलाया
बादरा	बादरा	बादल	बादल
बिज्ज	बिज्ज	बिजली	बिजली
दिस	दिस	ओर	ओर
दाहुर	दाहुर	मेंडक	मेंडक

مانی	مانی	مانو	گويا
ہوں	ہوں	میں	میں
داہ	داہے	تپے، جلے	تپے - جلے

بج ۱۳۷

بج ۱۳۷

کلس	کلس	گاجر	کاگر
ماپہ	مانہے	سیر	سر
کسور	کسور	۱۱ سے ۱۵ سال	۱۱ سے ۱۵ سال
		تک کی عمر کا بچہ	تک کی عمر کا بچہ
		بالک	
کارج سرہو	کارج سرہو	کارہی پورہ ہوا	کارہی پورہ ہوا

بج ۱۳۸

بج ۱۳۸

لنگر	لنگر	ڈگر	ڈگر
گاہو	گاہو	پکڑو	پکڑو
نہن جور	نہن جور	آنکھیں ملا کر	آنکھیں ملا کر
ٹارے ٹارونا	ٹارے ٹارونا	ہٹا ہٹا	ہٹا ہٹا

بج ۱۳۹

بج ۱۳۹

کوسمل	کوسمل	کوسم کے رنگ کا	کوسم کے رنگ کا
پاگا	پاگا	پگڑی	پگڑی
کھل ہزاری	پھل ہزاری	گندے کا پھول	گندے کا پھول
دریائی	دریائی	ایک طرح کا کپڑا	ایک طرح کا کپڑا
کھوی	کھوی	ڈنگ	ڈنگ
امی	امی	کھڑی	کھڑی
سٹونجو	سٹونجو	سٹونجو	سٹونجو

अवलोकन	اولوکن	देखकर	دیکھکر
वारिज बदन	बारज بدن	कमल जैसा मुख	کمل سا چہرہ
लकुट	لکٹ	लाठी	لاٹھی
पीत	پیٹ	पीला	زرد
वसन	بس	कपडा	کپڑا
गुल्म	گلم	बेल	بیل
लता	لٹا	टहनी	شاخ
काळी	کالھی	बनाकर	بناکر
चरुं	चरु	चलू	چلوں
पसू	پسو	पशू	جانور
मरकट	مرکٹ	बन्दर	بندر
श्रवन	شرون	कान	کان
बैना	بینا	आवाज	آواز
गुरुजन	گروجن	बुजुर्ग	بزرگ
कानि	کان	लाज	لاج
कासू	کاسوں	किस से	کس سے

भजन १३५

بھجن ۱۳۵

हेडो डोले	ایزو ڈولے	रुठा फिरे	روٹھا پھرے
धमार	धमार	धमा चौकड़ी	धमाचوکڑی
मोरे	मोरे	मरोड़े	मरोड़े
आंचरा	आंचरा	आंचल	आंचल
रंगरसया	रंग रसिया	रंगका रसया	रंगिन مزاج

भजन १३६

بھجن ۱۳۶

द्रष्ट	درشت	निगाह	نگاہ
व्यापो	व्यापो	चारो ओर फेल गया	चारوں طرف پھیل گیا

भजन १३०

भजन १३०

वलो	वलो	चलो	चलो
सीतल	सीतल	शीतल	शीतल

भजन १३१

भजन ३१

कला प्रवीन	कला प्रवीन	कलामें पूर्ण	कलामें पूर्ण
जसुमतिजु	जसुमतिजु	यशोदामताजी	यशोदामताजी
बाखरियां	बाखरियां	घरमें	घरमें
जरि राखूं	जरि राखूं	जड रखू, लगारखू	जड रखू, लगारखू

भजन १३२

भजन १३२

भले ही आयो	भले ही आयो	शुभागमन	शुभागमन
फेटा	फेटा	पटका	पटका
अरगजा सुबासी	अरगजा सुबासी	अरगजे की सूबास	अरगजे की सूबास
		वाला	वाला

भजन १३३

भजन १३३

रजनी	रजनी	रैन	रैन
सुनियत	सुनियत	सुनाई देती है	सुनाई देती है
कंगना के	कंगना के	कंगना	कंगना
झनकारे	झनकारे	झनकारे	झनकारे
गवाल बाल	गवाल बाल	गवाल के लडके	गवाल के लडके
कुलाहल	कुलाहल	शोर	शोर

भजन १३४

भजन १३४

गोहने	गोहने	गोहन अर्थात् 'साथ'	गोहन अर्थात् 'साथ'
		गोहने अर्थात्	गोहने अर्थात्
		'साथसाथ'	'साथसाथ'

भजन १२७

भजन १२८

रोरे	दोरू	रवरै = राव + रे अर्थात् हे राव राव जनो	दोरू राव + रे भुँ रावरू (अरे राऊ) صاحبो
निहाई	नहानी	निवाई	नियानी
नाल	नाल	डंडल, नली	डंडल - नली

भजन १२८

भजन १२९

राती	राती	लाल हुई, रंगी हुई	नियानी
न्याती	नियानी	न्याती = जाती	नियानी
		या नियानि =	मिरा ने कल की
		बन्धन मिराने 'कुल	नियानी
		की न्याती' कहा	है यहाँ बन्धनका
		अर्थ उचित है	मैय मनसब हैं
		(नियानि)	अमल होगा
अरजहुं	अरजहों	अर्ज करे	अरु करु
आकुस	आकुस	हाथीके भाला	हान्ही के भाला
		चुमाना	चुमाना
निरख निरख	निरख निरख	देख देख कर	देख देख कर
चित राती	चित राती	चित रंग लिया	चित रंग लिया

भजन १२९

भजन १३०

मुगट	मुगट	मुकुट	मुकुट
सबद	सबद	शब्द	शब्द
फीको	फीको	स्वाद हीन	स्वाद

अनहद

انحد

कबिर रचरित

کبیر کی بنائی

परभाषा जो नाद

اصطلاح جو نادر

पंथ परभाषा

پن্থ کی اصطلاح

“आहत” या

» آہت « یا

‘आहत’ या

» ان آہت « سے

‘अनहत’ से बनी

وضع ہوتی ہے

है। ईसका अर्थ

اسکے معنی ہیں

है वह शब्द जो

बद्विर پیدا کی ہوئی

किसीके पैदा किये

आवज-ये आवाज مقام

बिना पैदा हो।

होमیں آکر یوگی

यह शब्द सुन्य

स्ता ہے

अवस्थामें योगी

सुनता है।

रंग सार

رنگ سار

अपार

اپار

लोक लाज सबहार

لوک لاج

रंगमें रचा हुआ

रंग میں رچا ہوا

जो पारन हो सके

جو پار نہ ہو سکے

सब लोक लाज

سب لوک لاج

फेककर

پھینک کر

घट भीतर

گھٹ بھتر

निरंजण

نرنجن

मन मुद्रा फेरें

من مدار پھیروں

शरीरके अन्दर

جسم میں

अद्रव्य, न दिखाई

غیر مرئی

देनेवाला

यहां मुद्राका अर्थ

یہاں مدر کا مطلب

है ‘माझा’, अर्थात्

ہے مالا - یعنی

मनकी माला फेरें

من کی مالا پھیروں

भजन १२३

بھجن ۱۲۳

निसंक	नसंक	शंका बिना,	शक के بغیر
		बिना किमक	बे जेहिک
संक	संक	किमक	जेहिک
न्यौछावर	न्योछावर	निछावर	नेछावर
आतुर	आतुर	व्यकुल	बिचिन
बिलम	बलम	देर	दیر
तमोला	तमोला	पान	पान
कपोला	कपोला	गाल	गाल
घुन्डी	कण्ठी	गांठ	कर

भजन १२४

بھجن ۱۲۴

भोलगिया	अलिया	पति	शुपर
वन की धुन	कन की दहन	काले बादलका	काले बादल की
		शब्द	करज
आनन्द	आनन्द	अनन्द	लطف
भो	भो	भवता	وجود
दग्द	दग्द	भय	दغدगे
कमोदनी	कमोदनी	वह कमल जो	वह कमल जो चानद
		चन्द्रको देखकर	को देखकर केहता
		खिलता है	है
हरखी	हरिके	हर्ष	खुश
काया	काया	शरिर	जस
सिधाया	सिधाया	आया	आया
दुन्द	दुन्द	उथल पुथल	भजानद
न्हसाया	न्हसाया	नाश हुआ	नाश हुआ

آپ بھوش
بھوگو بھوک اپار
جو تھی
محیل
سو گئی
بھاؤ بھکت
سیل
سنتوں
بھرتور
تاسوں

آبھوش	جیور
بھوگو بھوک اپار	بیحد سکھ بھوگو
جو تھی	یہاں سے
محیل	محل
سو گئی	قسم
بھاؤ بھکت	بھکتی بھاؤ
سیل	عمل
سنتوں	سنتوں
بھرتور	بھتار - شوہر
تاسوں	اس سے

بھجن ۱۲۰

اڑتا ہے	اڑت
زعفران ، چندن	ارکجا
اور کافور سے	
مٹی ہوئی خوشبو	
کگری	کاگر

بھجن ۱۲۱

بادل	بادلا
گر جے	گا جے
بجے	با جے
سہانی	مدھریا
آسمان	امبر

بھجن ۱۲۲

جھڑ لگانے کی	جھڑ لاون کی
ٹنڈی	سیتل

جان	جان	जन (लोग) या जानें (आत्माएं)	جن (لوگ) یا جانیں روحیں
तोरन	तورन	तुरन बंधनहार	تر بندھن ہار
अचल	अचल	न चलने वाला अटल	نہ چلنے والا اٹل

भजन ११६

بھجن ۱۱۹

बरज बरज	ब्रज ब्रज	मनाकर कर के	منع کر کے
सार्धो	साधवां	साधवों	سادھوں
दाग	दाग	दाग धब्बा	داغ - دھبہ
निन्दा	नन्दा	बुराई, बदनामी	بدنامی برائی
भारी	भारी	बड़ी	بڑی
खमाई	कमान्नी	गंवाई	گوانی
बड़ा घर थे	बड़ा गहर थे	बड़ो घराने से	بڑے خاندان سے
हिंदवाणों	हिंदवां ने	हिन्दवी मैं	ہندوؤں میں
मीर	मीर	प्यारमे मिगाका	پیار میں میرا کا
		सक्षिप्त नाम	مختصر نام
लारी	लारी	लादली	لالی
ऊदा	अुदा	मिराकी ननदका	میراکی نند کا نام
		नाम	
सुघर	सुगहर	अच्छे घरने वाली,	اچھے گھرانے
		वरको अच्छी तरह	والی گھر اچھی
		संभलने वाली,	طرح رکھنے والی
		सूखड	सुखड़
बिचारी	बिचार	विचार करके,	غور کر کے
		सोचकर	سوچकर
गलहार	गल हार	गलेका हार	گلے کا ہار
रत्न जड़ित	रत्न जड़ित	रत्न जडे हुवे	جواہرات جڑے
		जेवर	ہونے

کو پھو	کویو	گستا خوه	خفا ہوئے
سلسل	سین	سہارا	سہارا
پراکھست	پرچھت	دوہی	خطاوار
دیجیو پیہر مہل	دیجو پیہر میل	بھوج دینا	بھوج دینا
رہتی	رہتی	نرمی، پھار	نرمی - پیار
مہوڈ	مہوڈ	مٹھ	چہرہ
سلسوڈ	سسوڈ	وہ راجپوت	وہ راجپوت
		خانہ دان جو	خانہ دان جو
		چیتوڈ پر راج	چیتوڈ پر راج
		کھرتا تھا	کرنا تھا
‘مہیتا	مہتا	‘مہ’ کا اর্থ	مہ کے معنی
		سرسکرت میں	سرسکرت میں
		دینا’ ہیں، جس سے	امان دینا
		‘مہیتا بننا ہے	ہیں جس سے مہتا
		اُتھات مانوہتی	بنا ہے یعنی عزت
			والی
دھوہی	دھوہی	دہنی	دہنی

भजन ११८

۱۱۸ بهجن

परण गया	परन گیا	प्रण दे गया	وعدہ کر گیا
बिसवा बीस	بسوا بیس	पूरा सच्चा	پورا سچا
गैली दीखों	گیلی دیکھیں	सोला आने सच्चा	سولہ آنے سچا
आल	آल	लगी देखने	لگی دیکھنے
अमाल	अमाल	और	اور
हलदी मैं करी	جهنجال	जंजाल	جنگال
सुधे	हलदी मैं करी	मैंने हलदी लगाई	میں نے ہلادی لگائی
	सुधे	सुधासे, अमृत से	آب حیات سے
			امرت آئے
भीजो गात	بھجوا گات	भीगा शरीर	بھیکا جسم
		नहाई	

भजन ११६

بھجن ۱۱۶

खिजवै
चोकी बिठारयो
दाय

کھجاوے
چوکی بٹھاریو
دائے

चोकी बिठारयी
पहरा लगाया
"दाय" इस संग्रह
में
दो जगह मीरा ने
"पसन्द,, ज अर्धा
में कह है। यहां
इस शब्द का अर्थ
है "दुहाई,,
बैन

چڑھارے
لہرا لگایا
دائے اس مجموعے
میں دو جگہ میرا
نے پسند کے معنی
میں کہا ہے یہاں
اس لفظ کے معنی
ہیں دہائی فریاد
دیکھو ترجمہ ۱۱۶

देखो अनुवाद
भजन ११६

भजन ११७

بھجن ۱۱۷

बिसर
बतलाइयो
टांक

بسروں
بتلائیاں
ٹانک

बतलाया
रिसाय
भोड़तनी

بتلایا
گیارسانے
میڑتنی

भूछें
पुछते है बात
करते है
तोलने का बाट
जो सवा तोलेका
होता है
कहते हैं
क्रोधमें है
मेड़ता वाली,
अर्थात् मीरा (मीरा
का मैका मेड़ता
राज में था

بھولوں
پوچھتے ہیں
بات کرتے ہیں
تول کا بانٹ جو
سوا تولے کے
برابر ہونا ہے
کہتے ہیں
غصے میں ہے
میڑنا والی یعنی
میرا (میرا کامیکا
میڑنا راج میں تھا)

सबल
मोपर

सबल
मोपर

सब
मुकपर

سب
مجھ پر

सूरो	सूरो	सूर वीर	पेदार - सुरमा
भजन ११३			भजन ११३
तने	तने	के	के
बावरी	बावरी	पागल	पागल
मदमाती	मदमाती	शराब के नशे में	शराब के नशे में
आरोगी	आरोगी	रोग दूर करने वाला	रोग दूर करने वाला
भजन ११४			भजन ११४
कंचन	कंचन	सूवर्ण	सूवर्ण
दहत	दहत	तपता है	तपता है
बारह वाणी	बारह वाणी	वारह वाणी-सूर्य	वारह वाणी-सूर्य
		बारह वाणी-खरा	बारह वाणी-खरा
		सोना	सोना
		यहाँ सूर्य का	यहाँ सूर्य का
		अर्थ उचित है	अर्थ उचित है
काण	काण	मान-लाज	मान-लाज
तरकस	तरकस	तरकश, तूण	तरकश, तूण
गरक गयो	गरक गयो	डुब गया	डुब गया
सनकाणी	सनकाणी	सनाकर कर,	सनाकर कर,
		सनसना कर	सनसना कर
भजन ११५			भजन ११५
भूवंगम	भूवंगम	सर्प	सर्प
सालिगराम	सालिगराम	विष्णु	विष्णु

चुड़लो	चोड़ लो	सुहागकी चुड़ियाँ	सहाग की चोड़ियाँ
सुरमो सार	सुर्मे सार	सलाइते सुरमा	सलाने से सालकर
		सालकर अर्थात्	یعنی سرمہ لگا کر
		सुरमा लगाकर	

नकबेसर	नक बेसर	बुलाक	’बلاق
बर बरयो	बर बरियो	बर बनाया, पति	बर बनाया पति बनाया
		बनाया	

लाख चौरासी	लाकھ چوراسی	माना जाता है कि	माना जाना है کہ
मोरचा	मورچہ	जीवको मोक्ष	جیو کو موکش
		प्राप्त करने तक	پانے تک ایک
		एक लाख चौरासी	लाकھ चोरसी
		हजार योनियों में	ہزار یونیوں میں
		जन्म लेना पड़ता	जन्म لینा پڑता ہے
		है। मीराने हर जन्म	मीराने हर जन्म
		को मोक्ष युद्धका	کو موکش جنگ
		एक मोरचा कहा है।	का ایک मोरچہ

गेरया	कीरिया	गिरे	कहा है
विगोय	वगोए	नष्ट होकर	करे
पोल	पोल	दहलीज	नायिद होकर
			दहलिय

भजन ११२			بھجن ۱۱۲
देसलदो रंगकड़ो	देसलदो रंग	देश की रंगरिलयाँ	देस की रंग
	रोडो		रलियाँ
गहना गौंठी	कहना गान्ठी	गहना पाती	कहना पान्ती
लगयो करारा वूड़ो	लगी करार वूडो	लगी कड़ीचोटचुड़ो	
		चोट के अर्थ में	
		आज	
		हिन्दी में प्रचलित	
		नहीं	

भजन ११०

بھجن ۱۱۰

बरजी	برجی	रोकी हुई, मना की हुई	روکی ہوئی منع کی ہوئی
		बंधी हुई	پابند
चेतन होई	چیتن ہوئی	ध्यानसे, चित्त लगाकर	توجہ سے - دھیان لگا کر
जावो	जादु	जाय	جائے
छहूँ	लहो	रक्त	خون
सेती	सी	से	سے

भजन १११

بھجن ۱۱۱

लगनी	لکھی	लगनका दुपट्ट,	شادی کا دوپٹہ
		चुन्दरी	چندری
जहूँगो	लहू	लहूंगा	لہنگا
जोवन	जोवन	यौवन	شباب
परवण	पुन	इस प्रकारका कोई एक शब्द हिन्दी में प्रचलित नहीं। संभव है की यह की यह यर+वन हो जिका अर्थ हूंगा दुसरे का बागीचा।	اس طرح کا کوئی ایک لفظ ہندی میں رائج نہیں ممکن ہے کہ یہ + ون ہو - جس کا مطلب ہوگا دوسرے کا باغیچہ
		इस शब्द का एक रूप 'पर्वणी' हो सकता है जिसका अर्थ है 'पुनम'।	اس لفظ کی ایک شکل پرونی ہو سکتی ہے جسکا مطلب ہے "پونم"

भजन १०८

बेज १०८

आस्था	اسيا	आशा	اميد
आमा	آما	हम	ہم
सैं	سریں	पूरेहों	پورے ہوں
मनोरथ	منورثہ	मन की इच्छाएँ	دل کی خواہش
धामा	گھاما	धूँ	دھوپ

भजन १०९

बेज १०९

निरगुण	نرگن	ब्रह्म जो देश	زمان و مکان سے
		काल की सीमासे	بالائے
		बाहरहो गुण रहित	ذات خدا
			فوق الوصف
तेमें	تے میں	उसमें	اسمیں
सो है	سو ہے	शोभा दे	زیب دے
कूलन कूलन काली	پھولن پھूल کلی	अती सुन्दर	بہت پھولی معلوم
कइला		कइलहा, सुहाग	ہونے والی
		का कंगन	कड़लहा साग का
			کنکن
अधिक खरी	ادھک کھری	और निखर गई	اور نکھر گئی
सेज सुखमणा	سیج سکھ منا	मन को सुख देने	
		वाला सेज	
नहीं सरी	سری	हिन्दी में 'सरना'	ہندی میں سرना
		का अर्थ है 'काम	کے معنی
		चलना'	ہیں کام چلنا
		नहीं सरी का अर्थ	نہیں سری کا مطلب
		हवा काम नहीं	ہوا کام نہیں چلا
		चला अर्थात् निभी	یعنی نبھی نہیں
		नहीं	

निहाळो	نہالو	खुश करो	خوش کرو
महा	مہا	माहका मास	ماہ کا مہنہ
महीं	مہیں	मैं	میں
फागा	پھاگا	फाग (रंग खेलना और गाना)	پھاگ (رنگ کھیلنا اور گانا)
वणराई	ون رائی	वनजंगल	بن - جنگل
झलवे	پھولوے	झले	پھولے
कुरली	کرلی	कूफी	کوکی
जै	جے	जिसमें	جسمیں
जोसी	جوسی	ज्योतिष	جوتشی - نجومی

भजन १०६

بھجن १०६

आज्यो	اچيو	अजाना	آجانا
खारा	कहारा	यहां अर्थ है जिसमें बहुत नमक हो	یہاں مطلب ہے جسمیں بہت نمک ہو
गुणवंत	کن و نت	बदमष्ठा	نمک ہو بدمزہ
औगुणहारा	او گن ہارا	गुण रखने वाले	صاحب اوصاف
त्रिगुणी	ترکی	दोषपूख	عیب سے پھرا ہوا
		सत, रज तम यह	
		तीन गुण	
		रखनेवाला	

भजन १०७

بھجن १०७

रंगराते	رنگ رانے	रंगमें रंग गये	رنگ میں رنگ گئے
बिसार	بسار	मुलाकार	بھلا کر
भव जल तार	بھوجل تار	भवता का जल	بحر وجود پار
		सर पार कराने	کرنے والے
		वाले	

پلک نہ کیجے نیا ری	دھڑ نہ کیرا دیوے	نظر نہ بھرائے
بجن ۱۰۵	بجن ۱۰۵	
بے - بے	بے - بے	بے - بے
ٹہڑ	ٹہڑ	ٹہڑ
اے	اے	اے
کول ہے	کول ہے	کول ہے
دن چائنا	دن چائنا	دن چائنا
تیجاں	تیجاں	تیجاں
سواتی	سواتی	سواتی
اسوچا	اسوچا	اسوچا
جہ	جہ	جہ
بوی	بوی	بوی
پالو	پالو	پالو
بھنا	بھنا	بھنا

سُन्न مہل

سینہ محل

سُन्न شब्द شून्य
کا अपभ्रंश रूप ہے،
یہ بھی योग ساध-
نا سے प्राप्त کی دھڑ
اک अवस्था ہے،
سُन्न مہل کا
بہرہ ہے سُन्न स्थान۔
سن کا لفظ شونیہ
کی بگڑی ہوئی
صورت ہے یہ
بھی یوگ ریاضت
سے حاصل کیا
ہوا ایک مقام
ہے رسن کا مطلب
ہوگا "مقام ہو"

भजन १०२

بھجن ۱۰۲

गास्थां
चरणामृत

گاسیاں
چرن مرث

गाऊंगी
भगवानकी मुर्ती के
चरणोंका जल

گاؤنگی
بھگوان کی مورتی
کے چرنوں کا پانی

नेम
धुंगरिया
धमकास्या

نیم
گھنگریاں
دھمکاسیاں

नियम
धुंगरुं
मनकारुंगी

دستور
گھنگرو
جھنگارونگی

बाड़
ज्यां

बाڑ
جیاں

हाता, कम्पाउन्ड
जो

احاطہ کمپاؤنڈ
جو

भजन १०३

بھجن ۱۰۳

रहज्यो

رہ جیو

रहजाना

رہ جانا

भजन १०४

بھجن ۱۰۴

निवारी
जोवते
भंगल गावे

نواری
جووتے
منگل گاؤے

तजी
देखते
मंगल गायन गावे

تہجی
دیکھتے
خوشی کے گیت

चौक पुराऊं
सगपण

چوک پراؤں
سگ بن

चौक सजाऊं
अति सगे

چوک سجاؤں
اپنے سب کے

طریقہ - رواج	ڈنگ	ریت	ریت
بھجن ۹۸			بھجن ۶۷
گندرا ہوا زمانہ	بیتے دین	آنیت	بھتیات
غیر متحرک	ن ڈینگنے والے	اڈک	بھڈینگ
آنے	آاتے	آت	بھات
جانے	جاتے	جات	بھات
دکھائی دے	دیکھا دے	دیسے	بھات
سمجھ - شعور	چیتنا، سمجھ	چیت	بھات
بھجن ۹۹			بھجن ۶۸
ہمیشہ	سدا	نس پرت	نيس प्रति
سانپ	سर्प	سرپ	सरप
بھجن ۱۰۰			بھجن ۶۹
روک ہو گئی	روک ہو गई	اٹک پری	अटकपरी
عمل کا عہد	آچھن प्रतिज्ञा	سیل برت	सील बरत
سنگار	श्रंगार	سناڑو	सिनाणो
کام - پسند	काम, पसन्द	دائے	दाय
ہانہی	हाथी	گج	गज
گدبا	गदहा	کھر	खर
بھجن ۱۰۱			بھجن ۷۰
کمل	कमल	بنج	वनज
ترکوٹ یوگ میں	त्रीकोट योग साधन	ترکوٹ محل	त्रीकोट महल
ریاضت سے حاصل	से प्राप्त की हुई एक		
کیا ہوا ایک مقام	अवस्था है। त्रिकोट		
ہے ترکوٹ محل	महल का अर्थ है		
کے معنی ہیں	त्रिकोट स्थान।		
ترکوٹ کا عالم			

نہنن کرر لائے	نہنن جھری لائی	نہننوںنے ککڑی لگائی	انکھوں نے جھڑی لگائی
چور ہتار	اور ہتار	دوسرا پتی	دوسرا خیم
بجن ۴۲			بجن ۹۲
سولی	سیلی	خوٹی مالا	چھوٹی مالا
ہاجریریا	ہاجریریا	ہاجریریا مالا	ہزار دانوں کی مالا
بجن ۴۳			بجن ۹۳
پہی	پیڑی	راہ	راستہ
ڈول	ڈول	ڈنگ	طریقہ
جل بال	جل بل	جل جلاکر	جل جل کر
ہسم	ہسم	راکھ	راکھ
بجن ۴۴			بجن ۹۴
تو ملیریا بین	تم ملیاں بین	توہرے ملے بغیر	تمہارے ملے بغیر
کیر	کیر	کیرسے	کیرسے
بجن ۴۵			بجن ۹۵
جیج	جیج	دیر	دیر
بجن ۴۶			بجن ۹۶
نیرموہیریا	نرموہیریا	موہ نہ رکھنے والے	موہ نہ رکھنے والے
بجن ۴۷			بجن ۹۷
بٹپٹی	اٹ پی	بٹھک	الٹ

तीर सम	तीरسم	तीरके समान	तीर جیسا
सालत	सालत	छेदता है	چھیدتا ہے
बिहानी	बिहानी	बीती	گذری
पिछानी	पिछानी	पहचाना	پہچانا
कोई न कहत	कोئی نہ کہت	कोई साफ नहीं	کوئی صاف نہیں
बखानी	बकहानी	बताता	بتاتا
सहदानी	सहदानी	दान	بخشش

भजन ६०

بھجن ۹۰

मिलता जाज्यो	मलता जाज्यो	मिले जाना	ملتے جانا
मीन	मीन	मछली	مچھلی
सूरत	सूरत	मुखड़ा	صورت
तल्प तल्प	تلیہ تلیہ	तड़प तड़प	تڑپ تڑپ
सुखदानी	सुख दानी	सुखका दान देने वाले	سکھ بخشنے والا

भजन ६१

بھجن ۹۱

परतापी	परतापी	प्रताप वाला	اقبال مند
पाइया	पाइया	पाया	پایا
दियना	दिना	दिया	چراغ
बाती	बाती	बत्ती	بتي
पाटी पारो	पाटी पारो	बाल संवारं	بال سنوادران
मति मांग	मति मांग	बिचारकी मांग	خیال کی مانگ
सेजिया	सेजिया	पलंग	بلنگ
बहु रंग	बहु रंग	बहुत रंग	بہت رنگ
पंथ	पंथ	राह	راستہ
जोहो	जोहो	देखूं	دیکھوں
मोहं घटा घन	मोहों को कहां	भवो की काली घटा	بھوں کی کالی گھٹا
घेर के	गेहिर के	घेर कर	گہر کے

भजन ८५

बेहजन ८५

माल	माल	शहद की मल्ली	शहद की मल्ली
कै	कै	केवल	केवल
			बस - - - - -

भजन ८६

बेहजन ८६

मरम	मरम	मेद	राज
ओषध	ओषध	दवा	दवा
जस्या	जस्या	जैसा	जैसा

भजन ८७

बेहजन ८७

नाम रतन	नाम रतन	इश्वर नामका रतन	जवाहर नाम
वस्त	वस्त	वस्तु	चिज
अमूल	अमूल	अनमोल	अमूल
खोवायी	कहोवायी	नष्ट करवा दिया	खाने करा दिया
खेवटया	कहोवटिया	खेवट	मल
हारिख हरिव	हरिख हरिव	हर्षके साथ	खुश होकर
जस	जस	यश	मद

भजन ८८

बेहजन ८८

राम खुमारी	राम केमारी	राम प्रेमका नशा	राम की मीठी नशा
मेहड़ा	मेहड़ा	बादल	बादल
भरम किवारी	भरम कोवारी	सन्देशकी खिड़की	शक की कूँडली
		या दरवाजे	या दरवाजे
इमरत	इमरत	सुधा	अब हिया

भजन ८९

बेहजन ८९

सुरत सेल	सुरत सेल	सुरत का पर्वत	सुरत का पर्वत
			पहाड़

धानी	گہانی	कोल्हूका धान	कोल्हू का क्कान
बालरही	बाल रहीं	जला रही हूं	जला रहीं हों
भट्टी	भट्टी	भट्टी	भट्टी
मद	मद	मधुरा	शुब
पहिरा	पहिर	मैका	मैका
ससुर	ससर	ससुराल	सरल
सैन	सैन	लौ ध्यान	लौ ध्यान
चित	चित	मन	दल

भजन ८४

भजन ८४

उणरथ	अनरथ	उसी ओर	असी तरफ
छलिरिये	छलरिये	छल करें	फरिब दीन
डाबरयो	डाबरियो	तात	तालाब
हालियां मोल्यां	हालाय मोलाय	मुसाहिबों	अपाली व मोली
सीख नही सिरदार	सीख नहैन सरदार	सरदारकी आज्ञा	सरदार का क्कम
कामदारां	कामदारां	न ले	मत् ले
जाब कलं दरबार	जाव कलं दरबार	अमले वाले	अमले वाले
		दरबारमें प्रवेश	दरबार में वरुद
काच (काछ)	काच	करती हूं	करती हों
कांधी	कांधी	वेश बनाना	बेस बनाना
छाहा	छाहा	कांधरी, गुदड़ी	कंधरी - कंधरी
हीना रो	हीना रो	आरा	आरा
		हीन अर्थात्	हना یعنی म्कंदी का
मयो समंद सुं सीर	मयो समंद सुं सीर	मेंदीका	मेंदीका
		सागरसे एक	समंदर से अक
पीपा	पीपा	हो गया	हो गीया
घणी मिल्खा छे	घणी मिल्खा छे	एक भक्त का नाम	अक भक्त का नाम
		बहुत कुछ मिला है	बहत क्कछ मला है

भजन ८१

भजन ८१

करि वारणे	क्रोडारने	छावर वारके	सदके करके
हिरदय घर	परदे देरलिजे	दिलमें रख लिजये	दलमें रक्क लिजे
लीजे			
देखया जीजे	दिकहा जिये	देखकर जिये	दिकेकर जिये
वड भागिन	बड़ा भागन	बड़े भाग्यवाली	खुश قسمت

भजन ८२

भजन ८२

साजि सिंगार	साज सगार	श्रंगार करके	संगार करके
कुमति	कुमती	बुगी मत	बुरे खيال
काल	काल	मृत्यु, समय	मृत - زمان

भजन ८३

भजन ८३

संग	संग	साथ	साथ
राती	राती	खेली	कहली
पंचरंग चोला	पंच रंग चोला	पांचरंग अर्थात्	पांच रंग रंग रंग
		पांच इद्रियों	होस خمسہ
		वाला शरीर	रक्कने والا جسم
भिरमित	जहमत	भाड़ी	जहाزی
तन गांती	तन गांती	तनकी गिरहें	तन की गरीब
धरणि	दहनी	भूमि	زمین
अकासी	अकासी	आकाश	آسمان
अविनाशी	अविनाशी	नाश न होने वाले	غیر فانی
मुरत	मुरत	मुर्ति	صورت
निरत	निरत	ध्यान	دھیان
दिवलो	दिवलो	दिया	چراغ
संजोळे	संजोळे	जलाये हुवे	जलाये हुवे
मनसा	मनसा	मन	دل
अगम	अगम	अपार	نا قابل عبور

भजन ८३

कुटिल	کین	टेढ़ी	لیڑھی
भकुटि	भर कूँ	भर्वे	'ब्रो
चितवनमें ठोना	चितन में ठोना	चितवनमें जादू	نظر میں جادو
खंजन	कहन	एक पक्षी	ایک چڑیا
मधूप	मधुप	भौरा	बहुरा
मृग छौना	मृग चहोना	हरनका बच्चा	پرن کا بچہ
नासिका	नासका	नाक	ناک
सुमीव	सुग्रीव	गरदन	گردن
बिसेखा	बसिका	विपेश	خاص
अधर	अधर	नीचेका होंठ	نیچے کا ہونٹھ
बिब	बिब	गुलाबी	گلابی
अरुण	अरुण	लाल	لال
मधुर मद हांसी	मधुरमद हांसी	मांठी हलकी हसी	میٹھی ہلکی ہنسی
बसन दमक	बसन दमक	कपड़ोंकी दमक	کپڑوں کی دمک
दाडिम दति	दाडिम दति	अनार (दाने) जैसे	انار دانے جیسے
		दांत	دانت
चपला सी	चपलासी	कौधा सा	कुंधासा
छुद	छुद	छोटी	چھوٹی
घंट	कहन्ट	घंटिया	कहियाँ
किंकिनी अनुर	किंकिनी अनुर	छन छन करती	چھन چھन कर सी
धुनि		मिठी	میٹھی
		ध्वनी	آواز
बलि	बलि	वागी	صدقے

भजन ८०

भजन ८०

चिन्त	चिन्त	ध्यान	خیال
उर	अर	छाती	سینه
जीवन मूलजड़ी	जीवन मूल जड़ी	जिन्दगी की जड़	زندگی کی جڑنی
		कां बूटी अर्थात्	बोली یعنی زندگی
		जिन्दगी	

भजन ७८

بھجن ۷۸

निपट	निपट	निगी	نری
बकट	बकट	बांकी, वक्	بانکی - کج
पियत	पियत	पीते हुवे	پیتے ہوئے
मयुलन	मयोकेन	किरणें, ज्योति	شعاعیں - روشنی
बारिज	बारज	कमल	کمل
अलक टेढी	अलक लीझी	बाल, कीलट टेढी	زلف خمدار
पागलर लटके	पागलर लटके	पगड़ी की लर	پگڑی
लुमानी	लुमानी	गीम्मी	فریفتہ ہوئی
नट	नट	नृत करने वाले	ناچنے والے

भजन ७९

بھجن ۷۹

नंद नंद	नंद नंद	नंदके पुत्र	نند کے بیٹے
द्रष्टि	द्रष्टि	नजर	نظر
सीस	सीस	सिर	سر
मुकुट	मुकुट	ताज रुपी टोपी	تاج کی شکل
कुंडल	कुंडल	कानका एक भूषण	کی ٹوپی
अलक भलक	अलक जहलक	चमक दमक	کان کا ایک زیور
कपोलन	कपोलन	गालोपर	چمک دمک
मकर	मकर	घड़ियाल (कृष्णके)	گالوں پر
		कुंडल मकरकी	کھڑियाल
		शक्ल के थे खुद	(کرشن کے कुंडल)
		भीराने एक और	کھڑियाल
		जगह उनको	کی شکل کے
		“मकराकृति”	تھے - خود
		कहा है)	میرا نے ایک
			جگہ ان کی
			مکرا کرتی کہا
			(ہے)

छवि	شوی	शोभा	ادا
मगन भई	मग्न भई	मगन हुई	खुश ہوئی

भजन ७५ ८५

चितवनि	چتون	दृष्टी, नजर	نظر
दोर	दूर	डोर, अर्थात् आसरा	ڈور یعنی آسرا
ऊभी टाढ़ी	او بھی ٹھاڑھی	खड़ी खड़ी	کھڑی کھڑی
भोर	بہور	सवेरा	سویرا

भजन ७६ ८६

बासि गो	باسی گو	बस गया	بس گیا
गिरधर लालसों	گردہر لال سوں	गिरधर लाल सों	گردہر لال سے
सीतल	سیتل	ठडी	ٹھنڈی
दुवखां	दुववां	दरवाजे पर	دروازے پر
बरजहू	برجھو	मना करो	منع کرو
सुर	سر	देवता	دیوتا
नर	نر	आदमी	آدمی
मुसल जल धार	موسل جل دھار	मुसलधार पानी	موسلادھار پانی
चित लाय	چیت لائے	ध्यान से	توجہ سے

भजन ७७ ८८

या	یا	इस	اس
लोचन	لوچن	आंख	آنکھ
मन्द मुसकान	مند مسکان	हलकी मुसकुराहट	ہلکی مسکراہٹ
जमुनाके नीर तीर	جمنا کے نیर تیر	जमुना जलके पाण	جمنا جل کے پاس
धेनू	دھینو	गायें	गायें
मीठी बानी	میٹھی بانی	मधुर ध्वनी	میٹھی آواز

چرخ آدھی	چرخوں کے سہارے ہے	چرخوں کے سہارے ہے	چرخوں کے سہارے ہے
مک مارے سنسار	جھک مارے سنسار	سنسار نے جھک	سنسار نے جھک
		ماری	ماری

بجن ۷۲			
راہری	راوی	راجا کی (کرشن کی)	راجا کی (کرشن کی)
آدی	آدی	شروع	شروع
انت	انت	آخر	آخر
نچ	نچ	ہمیشہ	ہمیشہ
ناؤں تیرو پیامیں	ناؤں تیرو پیامیں	دل میں تیرے نام	دل میں تیرے نام
پہری	پہری	کا ورد کیا	کا ورد کیا
بیری بیری	بیری بیری	بار بار	بار بار
وکار	وکار	خرابی	خرابی
گہری	گہری	پہنسی	پہنسی
ناؤں فٹہی	ناؤں فٹہی	ناؤں بھٹی ہوئی	ناؤں بھٹی ہوئی
بڑن ہے بیری	بڑن ہے بیری	ڈوبنے کا وقت	ڈوبنے کا وقت
راکھ لیونیری	راکھ لیونیری	باس رکھ لیا	باس رکھ لیا

بجن ۷۳			
پراڻ آڏار	پراڻ آڏار	پراڻ کے سہارے	پراڻ کے سہارے
تم بن	تم بن	تمہارے علاوہ	تمہارے علاوہ
منہار	منہار	کھوج کر	کھوج کر
نیرھاں	نیرھاں	دیکھا	دیکھا
وینار	وینار	بھولنا	بھولنا

بجن ۷۴			
اڻکارا کارا	اڻکارا کارا	چمکدار کام	چمکدار کام

गति	कति	अन्त, स्थिति,	अन्त - حالت
कही हजारी	कही हजारी	हजार (कुछ) कही	हजार (कुछ) कही
कंचन	कंचन	सोना	सोना
गुंज	गुंज	धुंगची (जो सुनार	गहो नकची
		तौल में इस्तेमाल	(जैसे सनार وزن
		करते हैं)	करने में
			استعمال करने
			ہیں)
एक सरी	एक सरी	एक तह के	एक तरह के
अनह धनी	अनह धनी	बहुत बड़ा धनी	बहुत बड़ा धनी
कोसरखोलीनी	कोसरखोलीनी	की शरणमें गई	की पनाह गयी
		शरणलीन हुई	शरण में लीं हुनी
सुभिरखी	सुभिरखी	मला	माला
धारी	धारी	लेली	लीली
किया दिलगीरी	किया दिलगीरी	दुःख झेले	صاحب درد نبی
न्यारी	न्यारी	अलग	بے تعلق
चछंगी बुध हमारी	चछंगी बुध हमारी	अपनी बुद्धिपर	اپنی رائے پر
		चलुगी	چلونگی
रतन जडितका टोप	रतन जडितका टोप	रत्न जड़ा हुआ	جواہرات سے
		(फकीरी का) टोप	جڑا ہوا فقیری کا
			ٹوپ
सिर पै	सिर पै	सिर पर	سر پر
हार कण्ठ को भारी	हार कण्ठ को भारी	(फकीरी के) कण्ठ	(فقیری کے)
		का हार असुल्य है	कण्ठ का भार
			انمول ہے
चरण धुंगरु	चरण धुंगरु	पाओं के धुंगरु	پاؤنکے گھنگरो
घसत पड़ते हैं	घसत पड़ते हैं	घिसते हुवे पड़ते हैं	گھستے ہوئے
			پڑتے ہیں
मैं	मैं	मैं	میں
डारी	डारी	कैंक दी	پھینک دی

भजन ६८

६८ भजन

गवालड़ा	गोवाला	हे ग्वाले	अ ग्वाले
ये	ते	तू	तु
लकुटया	लकिया	लाठी	लाठी
कपरिया	कमरिया	कमली	कमली
चोर चोर	चोरचोर	चुरा चुराकर	चुरा चुराकर
दधि	दही	दही	दही
ब्रज की नारी	ब्रज नारी	ब्रज की स्त्रियों को	ब्रज की स्त्रियों को
सताई	सतानी	सताया	सताया

भजन ६९

६९ भजन

नेह	निह	स्नेह	स्नेह
नाद	नाद	नाव	नाव
बही जात	भी जात	बह जाने में	बह जाने में
बेरी	बेरी	समय	समय
मलाहन करत	मलाहन करत	मलाह करते हैं	मलाह करते हैं
झार	झार	धार, बहाव	धार, बहाव
बजाई हथेली	बजाई हथेली	ताली बजाकर	ताली बजाकर
सवेरी	सोवरी	जलदी	जलदी

भजन ७०

७० भजन

मूळ	मूल	जड़	जड़
जेज	जिज	देर	देर
दिवड़ा	दिवड़ा	दिल	दिल

भजन ७१

७१ भजन

मणि	मणि	हिरा	हिरा
कपूर	कपूर	काफूर	काफूर

भजन ६४

भजन ६४

बिना	बना	के अतिरिक्त	के علاوہ
बिजो बोल मा	बिजो बोल मा	दुसरा मत बोल	दوسرا मत بول
शेल्डी	सिलडी	गन्ना	गन्ना
तजीने	तजीने	तजकर	तजकर
लीमडो	लीमडो	नीम	नीम
आगिया संगाये	आगिया संगाये	आगके साथ	آگ کے ساتھ
कथीर	कथीर	रांगा	رانگا
अपुं	अपुं	दिया	دیا
समतोल	समतोल	बराबर तोलकर	برابر تول

भजन ६५

भजन ६५

विपद	विपद	बिपत्ति	مصیبت
निकट	निकट	पास	پاس
सीर	सीर	भाग	حصہ
दी	दी	की	کی

भजन ६६

भजन ६६

दारुका	दारुका	हारिका	दवारका
मोटी	मोटी	बड़ी	بڑی

भजन ६७

भजन ६७

तार	तार	तैर जाये, पार हो जाये	تیر جائے ، پار ہو جائے
निगंतर	निगंतर	जिसका अंत नही	ابدی
सार	सार	तत्व	جوہر - ماحصل

तीखो ने कड़वो	تیکھونے کڑو	मिर्चवाला और कड़वा	مرچ والا اور کڑوا
आंभा केरी	آنبا کیری	आम	آم
शाख	شاخ	डाल	شاخ
आरे	آرے	हे मनुष्य	اے انسان
कायानां गर्व	काया नो क्रो	कायाका गुरु	جسم کا غرور
थवानी छे खाव	تھوانی چھ کھا	मिट्टी होना है	ہونا ہے خاک
बेचडी मा मुक्त	بے گھڑی ماں	दो बड़ी में मुक्ति	دو گھڑی میں
	मुक्त		نجات
बेद पुरे छे साख	बेद परे छे	बेद साथी भरता है	وید شہادت دیتا ہے
	साक		
चित राख	चित राक	मन रख	دل رکھ

मजन ६३

بھجن ६३

कीधी छे ठाकुर	किंधी छे ठाकर	हे ठाकुर थाली	اے ٹھا کر تھالی
थाली	تھالی	पगोसदी है	पगोस दी है
वनमाली	बन माली	कृष्ण	करुषन
पूर जो आशी	पूर जो आशी	पूरी करना आशा	पूरी करना आशा
बासुदी के पूरा	बासुदी के पूरा	खीर या पूरी	कहीर या पूरी
सासु नणंदनी	सासु नन्दनी	सांस नन्दकी कांसी	सांस नन्द की
सुली			पहानसी
रजनी रहेवा	रजनी रहेवा	रात रहने के लिये	रात को रहने के
			किए
शंका	शंका	संदेह, (प्रन्तु यहां मित्रक अर्थमें आया है)	शक (मकरियां जहजक के معنی में आया है)
एं	अ	यह	ये
दीधा	दिदिमी	दिया हुआ	दिया ہوا

विष औधारण	वश ओधारण	विषका हरण करने वाले	उपर ओर करने वाले
धाम	दहाम	स्थान	मقام
भजन ६०		भजन ६०	
माया मेली	माया मेली	धन मैली वस्तु है	दुलत मैली चीज है
धाय धूति	दुध डूध	दौड धूपकर	दुध डूध कर
मेलों करे	मेलो करे	जमा करे	जम करे
केसर वर्णी	केसर वर्ण	केसरी रंग की	केसरानी रंग की
मांही	मांही	(उस) में	(अस) में
विष बेलड़ी	विष बेलड़ी	विषकी बेल	उपर की बेल
पाल	पाल	बादबान	बादबान
पाणी पेहेली	पानी पेहेली	पानीमें पिल पड़ी,	पानी में पल पड़ी
		पानीमें धुस गयी	पानी में गहस की
भजन ६१		भजन ६१	
हरिनाजन	हरी नाजन	हरि के लोग	हरी लोक
तमे शू करशो	तमे शू करशो	तुम क्या करोगे	तुम क्या करोगे
शीध भटको छो	शीध भटको छो	बेकार भटकते हो	बेकार भटकते हो
अरव्य	अरव्य	वन	जंगल
होम हवन	होम हवन	यज्ञकी दो विधियां	यज्ञ की दो विधियां
ने	ने	घोर	और
जगन	जगन	यज्ञ	यज्ञ
भजन ६२		भजन ६२	
सत्संग ना रस	सत्संग नारस	भक्तोंकी संगत का	सत्संगत का
		रस	रस
प्रथम	प्रथम	पहले	पहले

भजन ५६

भजन ५६

मिजमान	जमान	मेहमान	महमान
		(उल्टा अर्थ)	(معنى معكوس)
कुम्भकरण	कम्भ करन	चितोड़ का विर	चतुर् का बहादुर
		कलाकार, और	फनकार और عالم
कीट	किट	पछिछत राणा	राना
		रँगने वाले किड़े	रिन्गने والے
पतंग	पतंग	उड़ने वाले कीड़े	کڑے والے کیڑے

भजन ९७

भजन ९८

हस्ती	हस्ती	हाथी	हान्ही
फाकम फाका	फाकम फाका	फाका मस्ती	फाफे मस्ती
ढोलिया	ढोलिया	बिसतर	बस्तर
तलाई	तलाई	चटाई	चटान्ही

भजन ९८

भजन ९८

ओथ	ओथ	ओठ, बाड़	ओठ, आड़
शूरे पूरे	शूरे पूरे	पूरा शूर	पूरा बहादुर
पारखा	पारखा	किले के चारों	قلعے کے چاروں
		ओर की खंदक	طرف کی خندق
लड़े	लड़े	लड़े, युद्ध कोरे	لڑے، جنگ کرے
घणी	घणी	बहुत	بہت
धनुष्य रुपी	धनुष्य रुपी	धनुष जैसा	دھنس جیسا
नाड़ी	नाड़ी	नली शरीर नसें	نلی، جسم کی نسین
कोठ	कोठ	किला	قلعہ

भजन ९९

भजन ९९

तारण	तारण	मुक्ति दाता	نجات دہندہ

अरधांगा	अर्धाना	पति	शुभ
हमको लगायो	हम को लगीो कारा	हमारे कालक छगाई	पमाये कालक
कारा		अर्थात् हमको	लगायी यि हम को
		बदनाम किया	बदनाम किया
कोट	कोठ	करोर	करोर
व्याप्य	व्याप्य	विदीत हो	खुबर करे
निज	निज	सदा	हममिश
बर	बर	पति	खाوند
निसतार	नस्तार	मुक्ति, उद्धार	मुक्ति, नجات
विरद	विरद	यश बयान करना	मदह सरांनी
धिक	देहक	धिक्षार	लुन्त

भजन ५४

भजन ५४

तरवर	तरवर	बड़ा वृक्ष	बड़ा वृक्ष
पंखिया	पंखिया	छोटी चिड़िया	छोटी चिड़िया
गिरवर	गिरवर	परवत	पहाड़
चार	चार	चारा, घास	चारा, गेहास

भजन ५५

भजन ५५

शशि	शशि	चांद	चांद
रजनी	रजनी	रात	रात
रसोई	रसोई	भोजन	कहाना
गनिका	गनिका	वेश्या, पतिता	प्लुतान
दूँडर	दूँडर	वृक्ष कातना	दुखत का तना
सूम	सूम	कनजूस	शुभ
संचेरित	संचेरित	जमा की हुई	जम की हुनी
माया	माया	धन	दुलत

भजन ९१

भजन ५१

धारी	तुम्हारी	तुम्हारी	तुम्हारी
सगो	सगो	सगो	सगो

भजन ९२

भजन ५२

मेहरम	मेहरम	पति, अर्धांगा	मरम, शूर
एवे	आवे	इसपर	असपर
पावो	पावो	डालो	डालो
तोय	तोय	तोभी	लोभी
मेरी मेरी	मेरी मेरी	अधमरीसी	अधमरी सी
बिछोह	बिछोह	बिछोहना	बिछोहना
खडो है	खडो है	बिराजमान है,	विराजमान है
नेड़ी नेड़ी	नेड़ी नेड़ी	पास पास	पास पास
चंदवा	चंदवा	चंद्र	चंद्र
नटवा	नट	नट (जो तमाशा	नट
		दिखानेमें रस्सीपर	(जो तमाशा कहाने
		चलता है)	में रस्सी पर चलता
			है)
मेरी मेरी	मेरी मेरी	ममनु	ममनु
			पर चित्र को अपनी
			बनाने लोर अपनी
			समजने का जल

भजन ९३

भजन ५३

कला	कला	आर्ट (यहां अर्थ	फन (यहां مطلب
		है माया)	है माया)
तो कल्या हैव्या	तो कल्या हैव्या	तो क्या कूटे है	तो क्या कूटे है
तुमारा	तुमारे	तुम्हारे अर्थात्	तुम्हारे अर्थात्
		तुम्हारी आंखें	तुम्हारी आंखें
		कूटी है।	कूटी है।

आंखों से जल आता है

پیا جیو ساگ	پیا جی دوساک	پیا جیکے بارکا ساگ	پیا جی کے کھرکا ساگ
دیراھے	برانے	پراپے, دوسرے	دوسرے کے
نیاواں	نیاوان	مুক্তی	نجات
اوپجاوے	اوپجاوے	پیدا کرے	پیدا کرے
کھیج	کھیج	ڈاھ, کھوہ	حسد, غصہ
کالر	کالر	کھڑا, بھرمی کی	زمین کی بٹی
		پڑی	

نپجے	نپجے	پیدا ہو	پیدا ہو
ٹھل	چھیل	سुन्दर पुरुष	حسن مرد
لاکھ کی ہے	لاکھ کو ہے	लाखकी भी है	لاکھ کا بھی ہے
سیدھا	سداہار	जाओ	جاؤ
تو ہے	تاں ہے	तुमको	تم کو
वर	ور	पति	شوہر
ہیو	ہینو	घटया	گھٹیا
کھٹی	کھٹی	कोदी	کوڑھی
بالواں	بالواں	बालमा	بالما

भजन ९०

بھجن ۹۰

अचारवती	اچاروتی	सम्य	تمیزدار
कुचीलाणी	کوچیلانی	मेली कुचेली	میلی کچیلی
प्रतीत	پریت	दिखाना	اظہار
रसीलणी	رسلنی	रस रखने वाली	رس رکھنے والی
विमान	ویمان	हवाई सवारी	ہوائی سواری
हेत	ہیت	प्रेम	محبت
झूलणी	جھولی	झूलने वाली	جھولنے والی
पतित पावन	پتیت پاوان	गिरे हुचे को पवित्र	گرے ہوئے کو پاک کرنے والے
		करने वाले	

مانشا اوتار	مانشا اوتار	مनुہی جنم	بصورت آدمی پیدا ہونا
جات	جات	جاتے دھوے	جاتے ہوئے
وار	وار	دیر	دیر
دیر	دیر	درخت	درخت
لاگے نہیں پی ڈار	لاگے نہیں پی ڈار	فیر سے ڈال میں	پھر سے ڈال میں
لگاتا	لگاتا	نہیں لگتا	نہیں لگتا
جسکا منت نہیں	جسکا منت نہیں	ابدی	ابدی
اس پار	اس پار	دوسرے کنارے پر	دوسرے کنارے پر
چوسر ماٹ	چوسر ماٹ	چوسر بچھا کر	چوسر بچھا کر
چوہٹے	چوہٹے	چوک بازار	چوک بازار

بھجن ۴۹	بھجن ۴۹	بھجن ۴۹	بھجن ۴۹
مل لو	مل لو	مل لو	مل لو
پرائے گھر	پرائے گھر	پرائے گھر	پرائے گھر
جانا	جانا	جانا	جانا
چھوڑ کر	چھوڑ کر	چھوڑ کر	چھوڑ کر
ایک ریشمی کپڑا	ایک ریشمی کپڑا	ایک ریشمی کپڑا	ایک ریشمی کپڑا
ٹھاٹ باٹ	ٹھاٹ باٹ	ٹھاٹ باٹ	ٹھاٹ باٹ
ساز و سامان	ساز و سامان	ساز و سامان	ساز و سامان
دکھاوے کے	دکھاوے کے	دکھاوے کے	دکھاوے کے
کپڑے	کپڑے	کپڑے	کپڑے
پاکیزہ	پاکیزہ	پاکیزہ	پاکیزہ
اونسے ہوئے	اونسے ہوئے	اونسے ہوئے	اونسے ہوئے
بگڑے ہوئے	بگڑے ہوئے	بگڑے ہوئے	بگڑے ہوئے
بدبو پیدا شدہ	بدبو پیدا شدہ	بدبو پیدا شدہ	بدبو پیدا شدہ
خراب	خراب	خراب	خراب
نمک بے نمک	نمک بے نمک	نمک بے نمک	نمک بے نمک

अमर पूर	अमर पुर	अमर नगर	खिरानी शहर
अबला	अबला	स्त्री	عورت
रज	رج	जल	پانی
भजन ४५			بھجن ۴۵
युग से	یگ سے	युग जैसे, युगके	یگ جیسے
तम	تم	बराबर	یگ کے برابر
सुल	سول	अधिकार	اندمیرا
कहयां को	کہنے کو	शुल	کالا
पतिपावै	پتیپاوی	कहने को	کہنے کو
पनग	پنگ	विश्वास करे	یقین کرے
उलर बाई	الرائی	सर्प	سانپ
बीज	بیج	उमंड भाई	امڈائی
उर साल	ارسال	बिजली	جلی
		सीना छेद कर	سینہ چھید کر
भजन ४६			بھجن ۴۶
एक सार सा	ایک سار सा	एक तरह का	ایک طرح کا
पण	پن	परन्तु	لیکن
जद	جد	जब	جب
आवरे	اورے	एक जैसे	ایک جیسے
भजन ४७			بھجن ۴۷
सरनागत	سرناگت	शरण आये हुए	پناہ میں آئے ہوئے
कर	کر	हाथ	ہاتھ
भजन ४८			بھجن ۴۸
पुन्य प्रगटे	پنیہ پر گئے	पुन्य का फल	اعمال خیر کی جزا
		प्रगट हुवे	ظاہر ہوئی

तम से छल तम

کہے	کہا	کہا	کہا
کھیل	کھیل	کھیل	کھیل
بجلی ۲۲	بجلی ۲۲	بجلی ۲۲	بجلی ۲۲
سکھ لوگاں	سکھ لوگاں	سکھ لوگاں	سکھ لوگاں
باوڑی	باوڑی	باوڑی	باوڑی
کھل ناسی	کھل ناسی	کھل ناسی	کھل ناسی
دیپ آگاری	دیپ آگری	دیپ آگری	دیپ آگری
رہی	رہی	رہی	رہی
خاٹ ڈھار بھکت	کھاٹ ڈھار بھکت	کھاٹ ڈھار بھکت	کھاٹ ڈھار بھکت
نیاہری	نیاہری	نیاہری	نیاہری
کاٹھ ہے جم کی	کاٹی ہے جم کی	کاٹی ہے جم کی	کاٹی ہے جم کی
فاںسی	فاںسی	فاںسی	فاںسی
سند سروور	سند سروور	سند سروور	سند سروور
ڈانسی	ڈانسی	ڈانسی	ڈانسی

بجلی ۲۲	بجلی ۲۲	بجلی ۲۲	بجلی ۲۲
مند بھاگن	مند بھاگن	مند بھاگن	مند بھاگن
کرم ابھاگن	کرم ابھاگن	کرم ابھاگن	کرم ابھاگن
کیرت	کیرت	کیرت	کیرت
پنجر	پنجر	پنجر	پنجر
باڈ	باڈ	باڈ	باڈ
جی ہلساؤں	جی ہلساؤں	جی ہلساؤں	جی ہلساؤں
دُرمست	دُرمست	دُرمست	دُرمست
ڈنکو نام	ڈنکو نام	ڈنکو نام	ڈنکو نام
نال	نال	نال	نال
موچنگ	موچنگ	موچنگ	موچنگ

خدیٰ سوس چٹایا

لو سوس چڑھائے

سیر پر رست لیا

سیر پر دکھ لیا

بجن ۴۰

بجن ۴۰

چلاں چلاں
پاواں پاواں
کوسملا کومل
بگواں بھگواں
خیرا کاں کس چھرا کاں کس
بیدد بڑد
نرس نرس

چلے پائیں
پاؤں پائیں
کوسملا رنگ
گروا گروا
بکھریں بال
مدح - تعریف
راجا

بجن ۴۱

بجن ۴۱

سد گرو سب
سنا جاگا
سوت سوت

سد گرو کے
بول سن کر جاگا
پوشا

بجن ۴۲

بجن ۴۲

تو تھے تو
اگھاڑو
حاجر ناچر کی
کھڑی
ساجنیاں
لاکون کڑی
ڈکی ناؤ
سمندر
نری
کھا

تم تو
کھولو
کب کی خاطر
ناظر کھڑی ہوں
سہیلیاں
کڑوی لکٹی ہوں
بری لکٹی ہوں
بھنکی ناؤ
بھکی ناؤ
سمندر
نیر گئی نجات پائی
کیا

اردو میں اگھاڑو غلط ہے
اگھاڑو چھل گیا ہے

भजन ३७

بھجن ۳۷

कलम भरत	कलम भरत	कलम पकड़ते	कलम पकड़ते
हिरदो	हिरदो	हृदय	हृदय
चरण कमल	चरण कमल	कमल जैसे सुन्दर	कमल जैसे सुन्दर
नैन रहे कराई	नैन रहे कराई	चरण	चरण
हो	हो	नैनोसे झड़ लगी	नैनोसे झड़ लगी
गहिरों	गहिरों	है	है
		मैं	मैं
		पकड़ूंगी	पकड़ूंगी

भजन ३८

بھجن ۳۸

दे डारों	दे डारों	दे दो	दे दो
लकुटी	लकुटी	लाठी	लाठी

भजन ३९

بھجن ۳۹

बहुत	बहुत	वापस	वापस
नख सिख छबिड	नख सिख छबिड	नाखून से शिराना	नाखून से शिराना
निरखत	निरखत	तक सुन्दरता	तक सुन्दरता
ललकि रहे	ललकि रहे	निरक्षण करते हैं	निरक्षण करते हैं
		दर्शन करते हैं	दर्शन करते हैं
		भीहित हो रहे हैं	भीहित हो रहे हैं
बदन	बदन	मुख	मुख
चंद्र परकासत	चंद्र परकासत	चांद की ज्योति	चांद की ज्योति
हेली	हेली	तैरी	तैरी
वरज	वरज	निषिद्ध	निषिद्ध
बरजहिं	बरजहिं	मनाकरें	मनाकरें
भटक	भटक	रुकावट	रुकावट
पर हथ	पर हथ	पराये हाथ	पराये हाथ

اس لفظ کا یہ مطلب اردو میں عام ہے جیسے میر حسن کہتے ہیں ع کہا جوگی جی نم کو آدیس ہے کبیر نے بھی یہ لفظ اسی معنی میں کہا ہے ع جا ٹھگ نے یا ٹھگنی ٹھگی تا ٹھگ کو آدیس

رवप्यङ्क	कपड़	ठीकरा	ٹھیکرا
रावलया	रावल्या	रावल, राजा	راول - راجا
खोड		ढांचा	ڈھانچہ
तिनका तोड़	तनका तोड़	पुराना महावरा है	پراانا محاورہ
		अर्थ है "नाता तोड़ कर"	مطلب ہے "رشته توڑ کر"
पाला	पाला	पल्ला, दामन	پلا دامن

भजन ३६

بھجن ۳۶

लागे खारी	लाके के क्यारी	अस्वाद लगे	बدمزه लगे
कंत	कंत	स्वामी, पत्नी	شوهر खाوند
ज्वर	ज्वर	ताप	खार
मेहर	मीर	कृपा	मेहरबानी
ज्यो	ज्यो	जाना	जाना
तारी	तारी	ध्यान, लौ	दहियान लो

भजन ३२

३२ भजन

टोना	लुना	जादू	सحر
गुजरया	गजिया	ग्वालन	कुوان
छोना	छोना	छोकरा, बेटा	छोकरा - बिना
बिसर गयो	बसर कियो	भूल गई	बहल गئی
सुधर	सुधर	सुन्दर शरीर	حسن جسم
रसलोना	रस लोन	नमकीन रस	ملیح

भजन ३३

३३ भजन

प्रात	प्रात	थाली	तेहल
बिचरन को	बचरन को	चलने को	चलने को
पग	पग	कदम	قدم

भजन ३४

३४ भजन

निंदो	नन्दो	निन्दा की	برائی (نندا) کی
बिंदो	बन्दो	वन्दना की	تعریف بندना کی
सांकड़ी	सानकड़ी	क्षीन	پتلی
अपूठी	अपूठी	अगुष्ट	برکات سے محروم
		आध्यात्मिक सौंदर्य	حسن روحانی
		बिना	کے بغیر
दुरजन	दुरजन	बुरे लोग	برے لوگ
जा अंगीठी	जा अंगीठी	माड़ में जोए	بھاڑ میں جائیں

भजन ३५

३५ भजन

जोगिया ने	जोगिया ने	जोगिया को	जोगी को
आदेश	आदेश	दंडवत सलाम (यह	دلتوت سلام
		शब्द इस अर्थ में	ہندی میں یہ لفظ
		हिन्दी में प्रचलित	رائج نہیں لیکن

भजन २९

بھجن ۲۹

मने	منے	भुभे	بھبھ
कुंज गलिन मा	کج گلن ما	दृशों से दकी गलयों में	درخون سے ڈھکی ہوئی گلیوں میں
सुमिरन	سمرن	जप	وظیفہ - ورد
भाव भगति	بھاव भगति	भक्तीभाव	جذبہ عقیدت
खरची	कहरची	मजदूरी	مزدوری
सरसी	सरसी	समान	ایک سی
धेनू	دھिनू	गायें	गायें
पहिर	पहर	पहन कर	پہن کر
कुसुम्मी	कुसुमी	कुसुम के रंग की	کسم کے رنگ کی
गहिर	गहर	गहरा	عمیق
गंभीर	गंभीर	द्रदचित्त, सौम्य	میتن - سنجیدہ
धीरा	धीरा	धीर सहित	صبر کے ساتھ

भजन ३०

بھجن ۳۰

ताहि	तापी	उसी को	اُسی کو
रहाऊं	रहाऊं	रहूँ	رہوں
तितहीं	तितहीं	वहीं	وہیں

भजन ३१

بھجن ۳۱

कुसंग	कुसंग	बुरी संगत	صحبت ناقص
सत संग	सत संग	अच्छी संगत	صحبت صالح
काम	काम	वासना	शहوات
क्रोध	क्रोध	गुस्सा	غصہ
मद्य	मद्य	अहम	غرور
लोभ	लोभ	लालच	حرص
मोह	मोह	हादिक सम्बन्ध	تعلق خاطر

ज्वाला हरण	ज्वाला हरण	अग्नि बुझाने वाले	अग ज्वाला के वाले
जिन चरण प्रह्लाद	जिन चरण प्रह्लाद	जिन चरणों से	जिन चरणों से
परसे	परसे	सुकर प्रह्लाद	मस हुकर प्रह्लाद
इन्द्र पदती पाया	इन्द्र पदती पाया	इंद्र पद तक पाया	इन्द्र का मरुतु
			नक पाया
ध्रुव	ध्रुव	भक्त ध्रुव जो	भक्त ध्रुव जो
		भगवान की कृपासे	भगवान की कृपासे
		आकाश का अटल	से आकाश का
		तारा ध्रुव बन गये	अल तारा ध्रुव
			(कुतुब) न कते
ब्रह्मांड भेटयो	ब्रह्मांड भेटयो	ब्रह्मांड नाप दिया	ब्रह्मांड नाप दिया
नख सिखा	नख सिखा	पाके नख से सिर	पाके नख से सिर
		की चोट तक	की चोट तक
सिरी	सिरी	श्री अर्थात शोभा	श्री - अर्थात शोभा
धाण	धाण	रखना	रखना
गोतम धरण	गोतम धरण	गोतमजी की पत्नी	गोतमजी की पत्नी
काली नाग नाथ्या	काली नाग नाथ्या	काला नाग छेक	काला नाग छेक
		दिया	दिया
गोप लीला करण	गोप लीला करण	गोप लीला करने	गोप लीला करने
		में	में
गोवरधन धारयो	गोवरधन धारयो	गोवरधन पहाड़	गोवरधन पहाड़
		उठाया	उठाया
गर्व	गर्व	अभिमान	अभिमान
मधवा	मधवा	इन्द्र	इन्द्र
अगम	अगम	गहरा, जो पार न	गहरा, जो पार न
		हो सके	हो सके
तारण तरण	तारण तरण	पार करने वाली	पार करने वाली
		नाव	कत्ती

ہو سی	ہو سی	ہو گا	ہو گا
پر م سنے ہی	پر م سنے ہی	سب سے بڑھ کر	سب سے بڑھ کر
سنے سو	سنے سو	عبت کرنے والا	عبت کرنے والا
کٹھ لگاवे	کٹھ لگاवे	پیغام	پیغام
		گے لگاوے	گے لگاوے

بجن ۲۶

بجن ۲۷

بالا	بالا	بالم	بالم
بہاں	بہاں	بہس میں	بہس میں
ریجھے	ریجھے	موہت ہو	موہت ہو
سیل	سیل	طریقہ عمل	طریقہ عمل
ستویش	ستویش	صبر، طمانیت	صبر، طمانیت
سمتا	سمتا	مساوات	مساوات
نیرججن	نیرججن	نادیدہ	نادیدہ
مردا	مردا	فراکی ایک نشانی	فراکی ایک نشانی
		جس سے انکا	جس سے انکا
		خانوادہ پہچانا	خانوادہ پہچانا
		جائے	جائے
رشنا	رشنا	زبان	زبان
سادھا	سادھا	سادھو	سادھو

بجن ۲۷

بجن ۲۸

پرس	پرس	مس ہو کر	مس ہو کر
سوبھگ	سوبھگ	اقبال مند	اقبال مند
سیتل	سیتل	شفاف	شفاف
کنول کو مل	کنول کو مل	کمل جیسے نرم	کمل جیسے نرم
تربدھ	تربدھ	تین طرف سے	تین طرف سے
		یعنی اندر، باہر	یعنی اندر، باہر
		اور آنما سے	اور آنما سے

भक्त	بہوت	राख	راکھ
मृग छाला	मृग जहाला	हिरन की खाल	ہرن کی کھال
सुखभेरी	सुख भेरी	सुख की ढोल बजी	سکھ کی ڈھोल بھی (भेरी डहोल)
साता	साना	सुख मिला	सुख मिला
		शान्ति	سکون

भजन २५

भजन २५

पावेली	पावेली	पावेली	पावेली
थारी	तहारी	तेरी	तेरी
रालेली	रालेली	डालेली	डालेली
चांच	चांच	चौच	चौच
कालो रे लोन	कालो रे लोन	काला नमक	काला नमक
कुण	कुण	कौन	कौन
मेला	मेला	मिला	मिला
सोवनी	सोवनी	सोना	सोना
सिर ताज	सिर ताज	सिर का ताज	सिर का ताज
धानन खाय	धानन खाय	कोई पुराना महावरा	कोئی پرانا महावरा
		है जिस का अर्थ है	ہے جس کا مطلب ہے
		दुख भेलना	دुख भेलना
विहाय	विहाय	पुकारे	پکارے

भजन २६

भजन २६

दीपक जार्य	दीपक जार्य	दिया जलाय	दिया जलाय
कदकी	कदकी	कदकी	कदकी
ऊभी	ऊभी	खड़ी	खड़ी
मग जोरुं	मग जोरुं	मार्ग देखू	मार्ग देखू
हिवडो	हिवडो	हृदय	हृदय
बिरयां	बिरयां	समय	समय

भजन २२

بھجن ۲۲

आरति उर में आरती आस जागी
जागी

आरत (दुख) उर आरत
में जागा में जागा
आरती करने की आरती करने की
मनमें आगी खोपसि دل में
पिदा हुनी

काज काज
भूजंग भोजंग
लहर हलहिल लहर पलपल
सांगी सानगी
उकलाणी अकलानी
लवंग अमंग

कार्य काम
सर्प सानप
विषकी लहर डरकी लहर
अंगके साथ, संग जसम के साथ
व्याकुल हुई बिचिन हुनी
भाक जडि
मगर इस जगह
लगन के अर्थ में
आया है

भजन २३

بھجن ۲۳

बिरह बिधा
तुरत

बरे बन्हा
तुरत

वियोग काट बहर की तकलिफ
ततकाल तुरा

भजन २४

بھجن ۲۴

करुणा कठना
कुंज-बन कनिज बन

दूख पूर्ण पर दरद
ताल और वृक्ष से नालाब और
विरी हुई वन की दरखतों से
जगह गहरी हुनी जंगल
की जगह

हेरी हेरी
अंग अंग

खोज खोज कर
शरीर

نيسواسر अविनासी	نس واس او ناسی	प्रतिदिन अमर	पर روز غير فانی
भजन १८			بھجن ۱۸
जित	جیت	जहां	جہاں
तित	تیت	वहीं	وہیں
खरी	کھری	विशुद्ध	خالص
भजन १९			بھجن ۱۹
उमग्यो	امگیو	भाविक हुआ	امنگ سے بھر گیا
दामण	دامن	बिजली	بجلی
दिस	دس	झोर	طرف
मेंहा	منہزا	बादल	بادل
भजन २०			بھجن ۲۰
जोऊ	جوऊ	देखूँ	دیکھوں
दादर	دادر	दादुर	مینڈک
मधुरे साज	مدھرے ساج	मधुर शब्दमें यूँ बोले मानो साज बज रहे हों	مینہی آواز میں یوں بولے جیسے ساز بچ رہے ہوں
इंद्र	اندر	बादल	بادل
बेग	بیگ	शिघ्र	جلدی
सिरराज	سر راج	पति, मालिक	شوہر - مالک
भजन २१			بھجن ۲۱
पलका	پلکا	सेज	بلنک
आदर	آدر	मान	عزت
गमाये	گمانے	नष्ट किया	گنوا یا

نیراچار	نردھار آدھار	نیراچارو کا	بے سہارا لوگوں کا
بھکا ج	اکاج	بھکار	بیکار
بھیر	بھیر	کھٹ	مصیبت
مोक्ष	موکش	آوا گون سے	نجات
		مুক্ত ہونا	

भजन १५			بھجن ۱۵
रपट्टीली	رپٹلی	फिसलन वाली	پھسلنے والی
जुगत से	جگت سے	संभल कर	سنبھل کر
म्हासू	محمہ سے	मुक्त से	محمہ سے
झीनी	جمینی	महीन, पतला	تنگ - پتلا
पेंड पेंड	پیڑ پیڑ	पग पग	قدم قدم
बटमार	بٹ مار	डाकू	ڈاکو
बिधना	بدھنا	इश्वर	خدا
जुगन जुगन से	جگن جگن سے	युग युगान्तर से	یک یک سے
लीनी लाय	لینی لائی	लेलिया	لے لیا

भजन १६			بھجن ۱۶
कोई कहियो रे	کوئی کہیو رے	कोई बात करो	کوئی بات کرو
ललुचावनकी	للچاون کی	ललचाने की	للچانے کی
कबरे	کب رے	कवतक	کب تک
चेरी	چیری	चेली, सेवक	چیلی - سیوک
दांवन	دان ون	दामन	دامن

भजन १७			بھجن ۱۷
चीर	چیر	कपड़े	کپڑے
गल	مگل	गला	گلا
काथा	کاتھا	कंठा, माला	کنٹھا - مالا

माया

निर्गुण ब्रम्ह की

خدائے نا دیدہ کا

मिथ्या

وہ غیر حقیقی ظہور

लीला जो देश

جو زماں و مکمل

काल के कारण

کی وجہ سے نظر

विदित होती है

آتا ہے

धन, इद्रजाल

دولت - اندر جال

भवसागर

بھوساگر

तरनकी

ترن کی

उलट

اُلٹ

भवताका समुद्र

بحر وجود

पार उतरने की

پار اترنے کی

भूल

خطا

भजन १३

بھجن ۱۳

रजनी

رجنی

तुम देखांविन

تم دیکھا بن

आकुल व्याकुल

آکل ویاکل

कथत न आवै

کہن نہ آوے

तपत

تپت

अंतरजामी

انتر جامی

रैन

رات

तुम को देखे बरो

تم کو دیکھے بنیر

बेकल बेचैन

بے تاب

कहा न जाय

کہا نہ جائے

जलन

سوزش

अंतःश्यामी

دلکی بات جاننے

والے

भजन १४

بھجن ۱۴

निभयां सरेगी

نیہیاں سرےگی

बांह गहे की लाज

بانہ گہے کی لاج

समर्थ

سمرتھ

सरण

سرن

सर्व सुधारन काज

سرو سُدھارن کا ج

अपर बल

اُپر بل

निभाना पड़ेगी

نیہانا پڑےگی

बांह पकड़ने की

بانہ پکڑنے کی لاج

लाज

समर्थ, योग्य

مناسب - دوست

शरण

پناہ

सब काम सुधारने

سب کام سُدھارنے

वाले

والے

पार न हो सकने

نا قابل عبور

वाला

कछनी काछना

कچھنی کا چھنا

रुख के लिए एक खास ढंग से कस कर सारी बांधना
رکھ کے لیے ایک خاص انداز سے کس کر ساری باندھنا

मरजादा

مر جا دا

मर्यादा

عزت

पौटूंगी

پوڑھونگی

लेटूंगी

لیٹوں کی

रंगराचूती

رنگ راجونکی

रंग में रचूंगी

رنگ میں رچوں کی

भजन ११

بھجن ۱۱

मोहनी

موہنی

मोहने वाली

پیازی

विसाल

وسال

बड़े

بڑے

अधर

ادھر

निचे का होंट

نیچے کا ہونٹ

सुधा रस

سدھارس

अमृत रस

آب حیات

राजत

راجت

शोभा देती है

زيب دیتی ہے

उर

اُر

छाती

سینہ

वैजंती माला

یجنتی مالا

जंगली फूलों की

جنگلی پھولوں کی

वह माला जिसे

وہ مالا جسے

कृष्ण पहनते थे

کرشن پہنتے تھے

छोटी घनटीयां

چھوٹی گھنٹیاں

छुद्र घाटिका

چھدر گٹکا

कमर पर

کمر پر

कट तट

کٹ تٹ

धुंगर की आवाज

گھنگرو کی آواز

गिर सद्

نور سبد

रसवाली

رس والی

रसाल

رسال

वत्सल, कृपाल

کرم کرنے والے

बछल

بچھل

सुख देनेवाले

سکھ دینے والے

सुख दाई

سکھ دانی

भजन १२

بھجن ۱۲

लटक

لٹک

ललक, चाह

لک - چاہ

जिमी
बिसरानी

जमी
बसानी

जैसे
बिसर गई, भूला

جس طرح
فراموش ہو گئی بھولی

भजन ८

بھجن ۸

रमय्या
छानै
चवई
बजता ढोल
पूर्व जन्म
कौल

रमिया
چھانے
चोड़े
बजा डहोल
پورب جنم
कूल

राम
गुप्त रूप में -
आहिर बजाहिर
ढंके की चोट पर
पूरव जनम
वचन

رام
چھپا کر
ظاہر بہ ظاہر
ڈنکے کی چوٹ پر
اگلا جنم
قول

भजन ९

بھجن ۹

परगट
निसि
दिवस
नासी
विघ्न
कुल कुटुंब
मधुमासी
जग हांसी

परकट
नसी
दिवस
नासी
विघ्न
कुल कुटुंब
मधुमासी
जग हांसी

प्रकट
हरएक
दिन
नाश हुई
छेदकर
खानदान, कुनबा
मध की मक्खियां
जग हंसाई

ظاہر
پر ایک
دن
جاتی رہی
چھید کر
خاندان - کنبہ
شہد کی مکھیاں
جگ ہنسائی

भजन १०

بھجن ۱۰

पीव रासके
जन
सुरत

पीव रासके
जन
सुरत

रसया पीया
जनता
ध्यान, चेतना
(अध्यात्म में यह
परिभाषा कबीर ने
दी)

رنگین مزاج محبوب
لوگ
دهیان - شعور
روحانی (روحانیت
میں بہ اصطلاح
کبیر نے دی)

भजन ४

सालिगराम

सुख

सहाई

विघन

सालक राम

सुख

सहानी

वकन

विष्णु

कांटा, शूक

सहायक

विघ्न

भजन ५

वशु

कांठा - खार

मदुगार

रकाठ

भजन ५

री आली

पोवे

बिहानी

री आली

पोवे

बिहानी

ऐ सखी

पिरोय

बीत गई

भजन ६

अमे सके

प्रोने

कडरुनी

भजन ६

सब्द

निहार

बिथा

बह गई करवत एन

सुख देन

सब्द

नहार

बिथा

भेगी कूत अिन

सके दिन

शब्द, नाद

देखुं

व्यथा, दुख

आरी बिलकुल

आर पार निकल

गई सुख देने काले

भजन ७

लफ़्ज़ - आवाज़

दिकेय

मसिब - दक

आरी बालक आरार

नकल गी

सके दिने वाले

भजन ७

नसानी

सगरी रैन

विहानी

छीन

अंतर बेदन

आतक

वन

नसानी

सगरी रैन

विहानी

छीन

अंतर बेदन

आतक

वन

नाश हुई, क्षय

हुई!

सारी रात

बीली

क्षीन, दुबला

अंतर का दुख

पपीहा

काला (कालीघटा)

नास होती जाती

रही

सारी रात

बिती

लागर - कमर

अडित पनहा

पिपा

सिआ (अरसिआ)

भजन १

सगा	सका	सम्बन्धी	अपना, अपने • रश्तेदार
सोई	सुनी	(वही) वही	(वही) वही
भजन २			भजन २
विध	बध	दंग, रीत	طریقہ - ڈھنگ
गगन मंडल	गगन मंडल	आकाश धाम	مقام فلک عرش
जिन लागी होय	जिन लांकी होئے	जिनके (दिल पर)	جن کے (دل پر)
सांवलया	सानवला	बोट लगी हो	چوٹ لگی ہو
		सांवल्ले रंग बाला,	سانولے رنگ
		कृष्ण	والا کرشن

भजन ३

तात	तात	बाप	बाप
मात	मात	मां	मां
भ्रात	भरात	भाई	भाई
बन्धू	बन्धु	सम्बन्धी	رشته دار
कुल की कान	कुल की कान	कुल की लज्जा	خاندان کی شرم
द्विग	द्विग	निकट	نزدیک
किये टुक	किये टुक	टुकड़े कर दिये	ٹکڑے کر دئے
लोई	लोनी	कमली	कमली
बनमाला	बनमाला	जंगली फूलों का	جنگلی پھولوں کا
पोई	पोनी	हार	हार
अंसवन जल	अंसुन जल	गुंधा, पियेया	گوندھا - پرویا
होई	होनी	आंसुवों का पानी	آنسوؤں کا پانی
बिलोई	बिलोनी	होगा	होगा
मोही	मोही	मथ कर	مٹھ کر
		मोह मैं फैसी	تعلق خاطر کا
			شکار ہوئی
तारो अब मोही	तारो अब मोही	तेरा ही अब मोह	اب تیرا ہی موہ
		करने वाली हूँ	کرنے والی ہوں

فرهنگ پریم وانی

शब्द कोष प्रेम वाणी

U4630

انگلی کو مروڑ کر ہاتھ نکا گیا ہے
 رہ رہ کے باہی پیسے ، پی کا نام نہ لے
 اگر کوئی برہنی سن لے (تو) پی کے لئے جان دے دے گی
 لمحے بھر گھر میں ، لمحے بھر آنگن میں اور لمحے لمحے کھڑی ہوتی ہوں
 گھاٹل کی طرح میں ہمیشہ پھرتی ہوں میری بیچینی کوئی نہیں سمجھتا
 دل نکال کے میں رکھوں ، کوئے تولے جا
 اور جس دیش میں میرا پیارا بستا ہے (وہاں) وہ دیکھے تو کیا
 میرا نانا بس نام (چنے) کا ہے اور کوئی نانا نہیں
 میرا فرقت میں بیچینی ہے مجھے درشن دینا

۱۵۲

رام سے ملنے کے لئے سکھی میرے جسم میں آرئی کا بھاگ جاگ اٹھا
 تڑپتے تڑپتے چین نہیں پڑتا اور برہ کا پتر دل میں لگ گیا ہے
 ہر روز پیا کی راہ دیکھتی ہوں ، پل بھر کے لئے پلک نہیں لگتی
 رات دن میں پیا پیا رلتی ہوں دوسرے سارے خیال چلے گئے ہیں
 برہ کے ناگ نے میرے کلیجہ میں ڈس لیا ہے زہر کی لہر آئی ہے
 میری آرئی کی خواہش پوری کرو ، گوسائیں جلدی آملو
 میرا بہت بیچین اور یقرا رہے پیا سے ملنے کی خواہش بہت تیز ہے

مینڈک، مور پیہا بولے کونل آواز سناے
 اُمڈ کر گھٹا ٹوٹ پڑی، بجلی چمک کر ڈرائی ہے
 آنکھیں جھڑی لگائے ہیں
 کیا کروں، کہاں جاؤں، سجی دکھ بچھانے
 برہ کی ناگن نے میرے بدن میں ڈس لیا، لہر سے جی جانا ہے
 دوا گھس کر لائے
 کون ہے سکھی سہیلی، سجی جو پیا کو لاکر (مجھ سے) ملا دے
 میرا کسے پرہو، کب ملوگے، من موہن مجھے اچھا لگتا ہے
 کب وہ ہنس کر بات کریگا

۱۵۰

نیند ساری رات نہیں آتی ہے کس طرح سے صبح ہوگی
 سہنے سے چونک اُٹھی، سدھ بھولی چندر کلا نہ بھاوے
 تڑپ تڑپ جی جانے کب ملوگے دینا ناٹھ
 دیوانی ہو گئی ہوں تن کی سدھ بھول گئی ہوں، میری بات کوئی نہیں جانتا
 میرا کہے بائیں وہی جانیں مرنا جینا جن کے ہاتھ ہے

۱۵۱

رام نام کا نانا مجھ سے ذرا بھی توڑا نہیں جانا
 پتے کی طرح پیلی پڑ گئی ہوں، لوگ کہیں یرقان ہے
 پانی (چھاتے) اور رسی نانگھتے (کالونکا) میں نے کیا رام ملنے کے لئے
 باپ نے بید بلایا اور پکڑ کر میرا ہاتھ (نبض) دکھایا
 بیوقوف بید نے بھید نہیں سمجھا، کلیجے میں (میرے) کسک ہے
 بید تو اپنے گھر جا، میرا نام نہ لے
 میں تو برہ کی جلانی ہوں تو دوا کاہے کی دے گا
 گوشت گل گل کے کم ہو گیا درد گلے میں آکر رک گیا ہے

ہرم سینہ کی یاد ہمیشہ آوے
 رام ہمارے ، ہم رام کے ہیں ، ہری کے بغیر کچھ نہیں بھانا
 آنے کو کہ گئے آج بھی نہیں آنے ، جی بہت بے قرار ہے
 تمہارے درشن کی آس (رمیا) ہری کب درشن دے گا
 چرن کنول کی لگن لگی ہے ، اور بغیر درشن کے ہمیشہ دکھ پانی ہوں
 میرا کے پرہو درشن دیجئے آند کہا نہ جائے

سکھو میری نیند ختم ہو گئی
 یا کی راہ دیکھتے ساری رات گزر گئی
 سب سکھیوں نے مل کر نصیحت کی دل نے ایک نہ مانی
 بغیر دیکھے چین نہیں آتا ہے من نے ایسا طے کر لیا ہے
 انگ انگ بیچیں ہو گئی منہ پر پیا پیا کی دھن ہے
 انتر میں برہ کا ڈکھ ہے ، وہ درد نہیں سمجھتا
 جیسے پیسا بادل کے اٹے شور کرے (یا) پچھلی بغیر پانی
 میرا بیچیں برہنی سدھ بدھ بھول گئی ہے

رہا کے بغیر نیند نہیں آتی
 نیند نہ آوے ، برہ ستائے پریم کی آج پگھلائے
 یا کی روشنی کے بغیر مندر میں اندھیرا (ہے) دپک کام نہیں دیتا
 یا بغیر میری سیج سونی ہے ، جاگتے رات بیتی
 یا کب تک گھر آئیں گے

مینڈک، مور پیسے بولیں، کوئل کی میٹھی آواز، گویا ساز بجا
میرا کے پرہو گردھر ناگز چرن کمل سے من لگایا

۱۴۴

میں نے پری کے آنے کی آواز سنی ہے
بار بار محل پر چڑھ کر دیکھ رہی ہوں کہ مہاراج کب آئینگے
مینڈک، مور، پیسے بولنے ہیں کوئل کی آواز گویا میٹھا ساز ہے
بادل چاروں طرف برسیں، لاج کا دامن چھوڑ کر
اندر (بادش) سے ملنے کی وجہ سے دھرتی نے نیا روپ دھرا ہے
میرا کے پرہو پری لازوال ہیں (بس) جلدی ملو مہاراج

۱۴۵

میرے گھر ہونے جانا راجا
اب مت بہانا کرنا تمہیں سر پر رکھوں
میں تو جنم جنم کی داسی ہوں، تم میرے سرتاج ہو
میرے مہمان بھلے ہی آئے اب سب کام سدھر جائیں گے
میں تو بری ہوں، تم کیا بھلے ہو ایک سب کے دس راج (بنے) ہو
تمہیں ہم سبھوں کی چنتا رہتی ہے تم سب کے غریب نواز ہو
سب کے سرتاج اور سر پر نیکی کے سورج کا تاج (ہے)

۱۴۶

پرہو جی تم نظر ملا کے کہاں گے
جس ساتھی پر بھروسہ تھا، وہ محبت کی بی جلا کر چھوڑ گیا
برہ کے سمندر میں چھوڑ گیا ہے پیار کی ناؤ چلا کر
میرا کے پرہو کب ملو گے، تمہارے بغیر رہا ہی نہیں جانا

میں پانی بھرنے جتنا میں گئی تھی، کرشن مراری آگیا اے ماں
 اناڑی میری ساڑی لے گیا، جل میں تنگی کھڑی ہوں اے ماں
 سکھی سیانی میری ہنستی ہیں مجھ پر ہنس کر نالی بجاتی ہیں اے ماں
 ساس بُری اور تند ضدی لڑ لڑ کر مجھے گالی دیتی ہیں اے ماں
 میرا کسے پرہو گردھر ناگر، چرن کمل کے واری اے ماں

۱۴۱

» کوئی شیاں منوہر لینا جی « (کی آواز لگانی ہوئی گوالن) سر پر منکی
 رکھی جاتی ہے
 دہی کا نام بھول گئی، گوالن »ہری لو« »ہری لو« کی آواز لگانی ہے
 میرا کسے پرہو گردھر ناگر چلی ہو گئی بغیر مول کے
 کرشن روپ سے مدہوش گوالن کچھ کا کچھ کہہ رہی ہے

۱۴۲

ہولی کھیلتے ہیں گردھاری
 مرلی جنگ، دف، انوکھا بچ رہا ہے ساتھ کی جوان عورتیں ہیں
 موہن بہاری، اپنے ہاتھ سے چندن اور کیسر چھڑکے ہیں
 مٹھی مٹھی بھر کر گلال چاروں طرف سب پر ڈال دیتے ہیں
 چھیل چھیلے جوان کنہیا کے ساتھ میں شیا ما پران پیاری
 ہانہوں سے نالیاں بجا بجا کر چار دھمار راگ الاپتے ہیں

۱۴۳

مائی تند کے تندن نے مجھے بہلا لیا (ازر) میں بارش میں گھر گئی
 ادھر کالی گھٹا گر جے، ادھر کالی گھٹا لرزے، بجلی سوائی چمکتی (نہی)
 اُمڈ اُمڈ کر چاروں طرف سے (بادل) آئے اور پروانی ہوا چلے

سجی میں جل بھرنے جانی نہی کلس سر پر رکھے ہوئے
سانولی سی ٹوجوان مورت نے کچھ جادو کر دیا ہے
لوک لاج بھلا دی . تب کام پورا ہوا
میرا گردھر لال کی داسی چھانٹ کر یہ بر پایا ہے

➤ ۱۳۸ ➤

چھوڑو راستے میں میری باہنہ نہ پکڑو
میں تو دوسرے گھر کی عورت ہوں ، میرے بھروسے گوبال نہ رہو
جو تم باہنیں میری پکڑتے ہو تو آنکھیں ملا کر پران بھی لے لو نا
بندرا بن کی کتنج گلی میں ریت چھوڑ کر ان کی ریت نہ کرو
میرا کے پرہو گردھر ناگر چرن کمل سے دھیان پٹائے نہیں پٹا

➤ ۱۳۹ ➤

میری گلیوں میں آتا ہے گردھاری میں لاج کی ماری چھپ گئی
کسمی رنگ کی پگڑی ، زعفرانی کپڑے اوپر گیندے کے پھول
مکٹ کے اوپر چھتر ہے کنڈل کا ڈھنگ انوکھا ہے
زعفرانی اوڑھنی ، دریانی کا لہنگا ، اس پر بھاری انکیا
کرشن مراری کو دیکھ کر رادھیکا پیاری چھپ گئی
خوبصورت مور مکٹ بھلا معلوم ہونا ہے نتھنی کی خوبصورتی انوکھی ہے
گلے میں موتیوں کی مالا پڑی ہے ، چرن کنول پر بلہاری جاؤں
رادھا پیاری کھڑی عرض کرتی ہے سن لو کرشن مراری
میرا کے پرہو گردھر ناگر چرن کمل پرواری ہے

➤ ۱۴۰ ➤

آج اناڑی (کرشن) لے گیا ساڑی (اور) کدم کی ڈال پر بیٹھا اے ماں
گردھاری میرے گلے پڑ گیا ہے اے ماں

جانوروں، چڑیوں، بندروں کی بولی کانوں سے سنیں
 بزرگوں کی سخت شرم، کس سے کہنے
 میرا کے پرہو گردھر ناگر مل کر ایسے ہی رہنے

➤ ۱۳۵ ➤

شیام مجھ سے رولٹا ہوا پھرتا ہے
 اوروں سے دھماکے لگتا ہے، مجھ سے بات نہیں کرتا
 میری گلی میں نہیں پھرتا، اس کے آنگن میں گھومتا ہے
 میری انگلی بھی نہیں چھوتا، اس کا کھونگٹ کھولتا ہے
 میرا کے پرہو سانورے رنگ رسیا پھر رہے ہیں

➤ ۱۳۶ ➤

اے سکھی سانوے کی نظر جیسے پریم کی کٹاری ہے
 لگے ہی بے حال ہوئی، تن کی سدھ بدھ گئی
 تن من میں پیارا اسطرح آیا جیسے متوال ہو گئی ہوں
 دو چار سکھیاں ملیں، (جنہوں نے کہا) عجیب پاگل ہوئی ہے
 میں نے تو اس کو اچھا سمجھا (کیونکہ) وہ کنج کا بہاری ہے
 چاند کو چکور چاہے دیکھ بٹنگ کو جلانے
 جیسے پانی کے بغیر پھل ویسے ہی اے پیاری محبت ہے
 اے شیام متی کروں میں تمہارے پاؤں پڑوں
 میرا کو پرہو یوں سمجھو جیسے تمہاری داسی ہے

➤ ۱۳۷ ➤

مانی میرا من موہن نے ہر لیا ہے
 کیا کروں، کہاں جاؤں، سچی پران پُرس سے بیاہ کیا ہے

سو گھڑ ، ہنر میں پورے ہاتھوں سے جسودا ماتا نے سنوارا ہے
اگر تم میرے گھر آؤ ، تو چندن کے کواڑ لگا رکھو
میرا کے پرہو گردھر ناگر ، ان زلفوں پر واری جاؤں

➤ ۱۲۲ ➤

گوکل کے باسی (کرشن) خوش آمدید ، گوکل کے باسی
گوکل کی ناریوں میں دیکھتے ہی آتند اور سکھ کا رس پیدا ہوا
ایک گاتی ہے ، ایک ناچتی ہے ، ایک ہنسانی ہے
ارکجا (ایک خوشبو) سے مہکا ہوا پیلا پنکاکمر میں بندھا ہے
گردھر کے ایسے ٹھاکر اور میرا کی ایسی داسی

➤ ۱۲۳ ➤

جاگو بنسی والے لال جاگو میرے پیارے
رات گئی ، صبح ہوئی ہے گھر گھر کے دروازے کھلے
گوپیوں کے دہی مٹھے کی آواز اور کنگن کی جھنکار سنائی دیتی ہے
اتھو لال جی صبح ہو گئی ہے ، دیوتا اور آدمی دروازے پر کھڑے ہیں
جے جے کا شبد کہہ کے گوالوں کے لڑکے شور مچاتے ہیں
گوؤں کے رکھوالے مکھن روٹی ہاتھ میں لئے ہیں
میرا کے پرہو گردھر ناگر تمہاری پناہ میں آنا ہے

➤ ۱۲۴ ➤

جی میں آنا ہے کہ گوپال کے ساتھ پھروں
اس سندد مکھڑے کو دیکھتے ہی بے بس ہو گئی ہوں
ہاتھ میں مرلی اور لالھی لون ، پیلا لباس پہنوں
گوالوہ کا بھیس بنا کر سر پر مکٹ لگا کر گایوں کے ساتھ چلوں
ہم پیل کی ٹہنی ہو کر ورندا بن میں رہیں

تمہیں دیکھے بغیر چین نہیں پڑنا (بس) میرا دل (ہی) جانتا ہے
 اونچے پر چڑھ چڑھ کر راستے کو دیکھتی ہوں، روتے روتے آنکھیں دکھنے
 لگی ہیں
 یہ سنسار (اور) سب جگ جھوٹا ہے اور خاندان کا ناتا بھی جھوٹا ہے
 دونوں ہاتھ جوڑ کر عرض کرتی ہوں میری بات سن لینا
 یہ میرا من بڑا پاچی ہے، جیسے بد مست ہانہی
 ست گرو ہاتھ سر پر دھرا (من کو آنکش دیکر سمجھاتی ہوں
 پل پل تیرا روپ دیکھوں (اور) دیکھ دیکھ کر سکھ پاتی ہوں
 میرا کے پرہو گردھر ناگر، ہری کے چرنوں میں دل رنگ گیا ہے

129

سکھی مجھے بندرا بن اچھا لگتا ہے
 گھر گھر میں تلسی، ٹھاکر، گوہند جی کا درشن
 صاف پانی جمنا میں بہتا ہے (اور) دودھ دہی کا بھوجن ہوتا ہے
 جواہرات کی سنگھاسن پر آپ بیٹھے ہیں، تلسی کا مکٹ پہنے ہوئے
 کچج کچج میں رادھیکا بھرتی ہے (اور) مرلی کی آواز سنتی ہے
 میرا کے پرہو گردھر ناگر، بھجن کے بغیر آدمی پھیکا (ہے)

130

چلو من گنگا جمنا کے پاس
 گنگا جمنا میں صاف پانی، جسم ٹھنڈا ہو جاتا ہے
 کانھا بنسی بجاتا ہے اور گانا ہے، بل بیر کو سانہ لٹے ہے
 مور مکٹ پیتا ہیر بھلا معلوم ہوتا ہے کنڈل میں پیرا چمکتا ہے
 میرا کے پرہو گردھر ناگر جن کے چرن کمل پر سر

131

اے کنہیا کس نے تمہاری کالی زلفیں گوندھیں ہیں

سُر کے بغیر چھتیسوں راگ گائے روم روم میں رنگ بھرا
 کردار اور صبر کا زعفران گھولا پیار اور محبت کی پچکاری (بنانی)
 گلال اڑنے سے لال بادل بن گئے ناقابل عبور رنگ برس رہا ہے
 جسم کے سارے دروازے کھول دیئے ہیں اور لوگ لاج سب چھوڑ دی
 ہوئی کھیلنے ہی گھر آئیں وہی پیاری پریہ کا پیار ہے
 میرا کے پرہو گردھر ناگر، چرن کنول پروادی

➤ ۱۲۶ ➤

سکھی میں جوگن بنوں گی
 جس بھیس پر میرے ساجن خوش ہوں وہی بھیس دھروں گی
 کردار اور صبر کو تن میں دھروں گی مساوات کے خیال کو پکڑ کر رہوں گی
 جس کو نرنجن کہتے ہیں اسی کا خیال کروں گی
 گرو کے گیان میں جسم کے کپڑے رنگ کر من مدرا پھیروں گی
 پریم اور پیار سے ہری گن اور (ہری) کے چرنوں میں لپٹ رہوں گی
 میرا کہے پرہو گردھر ناگر سادھوؤں کے ساتھ رہوں گی

➤ ۱۲۷ ➤

لوگو ہمارے دل کی لکی کیسے چھوٹے
 نہائی پر جیسے پیرے پر چوٹ لگانی جاتی ہے لوگو وہی حالت ہماری ہے
 جیسے سونے میں سہاگا مل جاتا ہے، ویسے ہی لوگو ہمارا دل لگ گیا ہے
 جیسے کمل کا ڈنٹھل پانی میں ہوتا ہے ویسے ہی لوگو ہم نے من میں مان لیا
 جیسے چاند سے چمکور ملتا ہے ایسے ہی لوگو ہمارا جوڑا ہے
 جیسے میرا کا بچی گردھاری ویسے ہی مل گئے کچج بھاری

➤ ۱۲۸ ➤

میرے جنم، موت کے ساتھ ہی، تجھے نہیں بسروں دن رات

بادلوں نے تنہی تنہی بوندیں برسائیں ٹھنڈی ہوا سہانی لگتی ہے
میرا کئے پرہو گردھر ناگر منگل گانے کا آئند ہے

➤ ۱۲۲ ➤

منہ بولے ساجن گھر آؤ
کب سے کھڑی راہ دیکھتی ہوں بھلا تم ہی آگئے ہونے
اؤ شک و شبہ مت کرو، آنے سے پہلے ہی سکھ رہے گا
نن من وار کے نچھاور کردوں مجھے شام کو لادے
بہت بیچین ہوں، دیر مت کرنا، آنے ہی سے رنگ رہیگا
تمہاری وجہ سے سب رنگ، کاجل، تلک اور پان چھوڑا
تمہیں دیکھے بغیر چین نہیں بڑنا ہے کال پر ہاتھ دھرے بیٹھی رہتی ہوں
میرا داسی جنم جنم کی دل کی گرہ کھول دی ہے

➤ ۱۲۳ ➤

میرا شوہر گھر آگیا
نن کی جلن مٹی، سکھ پایا، ہل مل منگل گایا
بادل کی آواز سنکر مور مگن ہوا، یوں آئند آیا
مگن ہوئی مل اپنے پرہو سے وجود کا ڈر مٹایا
چاند کو دیکھ کر (جیسے) کمودنی پھولے (یونہی) میری کایا خوش ہوگئی
رگ رگ ٹھنڈی ہوگئی میری سجنی بری جو میرے محل آیا
جو سب بھگتوں کا کام پورا کرتا ہے وہ پیا میں نے پایا
میرا برہمی کو آرام مل گیا دکھ کا خانمہ ہو گیا

➤ ۱۲۵ ➤

بھاگن کے دن چار ہیں ہول کھیل کر منا لے
بغیر کرنال اور بکھاوج کے »ان حد« کی جھنکار بجتی ہے

میرا :- ”بھگت بھاؤ کے زیور سے سج گئے ہیں اور ”سیل“ ہی سنتوں کا سنگار ہے

میں نے پریم کی چندری اوڑھ لی ہے میرا پتی گردھر جی ہے
اودا باننی اپنے من میں (یہ) سمجھ کر اپنے گھر جاؤ
تم ہی راج پاٹ بھوگو ہم کو اس سے کوئی کام نہیں“

➤ ۱۲۰ ➤

رنگ بھری رنگ بھری رنگ سے بھری
پیاری ہولی آنی رنگ سے بھری
گللال اڑنے سے بادل لال ہو گئے اور چھکاریوں سے جھڑی لگ گئی
چویا ، چندن ، ارگجا (ایک خوشبودار چیز) زعفران کی گاکریں بھری رکھی ہیں
میرا کہے پر بھو گردھر ناگر کی جیلی ہو کر میں پاؤں پڑی ہوں

➤ ۱۲۱ ➤

بادل تو جل بھر کے لے آیا
چھوٹی چھوٹی بوندیں برسے لگیں کوئل کی کوک سنائی دی
گانی بجاننی خوشگوار ہوا ، آسمان میں بادل چھانے
سیج سجاننی یا گھر آنے ، ہل مل کے منگل گانے
میرا کہے پر بھو ہری غیر فانی ہیں جس نے (آنکو) پایا وہ بھاگوان ہے

➤ ۱۲۲ ➤

ساون من بھاون کی بدلیاں جھک آئیں
ساون میں امنگ بھرے میرے دل نے ہری کے آنے کی بھنک سنی
(بادل) امنڈ امنڈ کر چاروں طرف سے آنے بجلی چمکی (اور) جھڑی
لگ گئی

میرا :- ” مائی مجھ سے خواب میں گویا ہمد کر گیا ہے
 انگ انگ ہلدی میں نے لگائی اور امرت سے نہائی
 مائی مجھ سے خواب میں دینا ناٹھ ہمد کر گیا ہے
 جہاں چہین کروڑ آٹمائیں آئیں (ان میں) شری بھگوان دولہا تھے
 خواب میں جب تون بندھا تو خواب میں جان آگئی
 میرا کو گردھر ملا یہ پچھلے جنم کی تقدیر ہے
 خواب میں مجھ سے ہمد کر گیا اب میرا سہاگ اچل ہو گیا ہے

➤ ۱۱۹ ➤

اودا :- ” تمہیں منع کر کر کے میں ہار گئی بھابی ہمداری بات مان جاؤ
 تمہارے اوپر رانا خفا ہونے ہیں سادھوؤں کے سنگ میں مت جاؤ
 خاندان کو داغ لگ رہا ہے . بھابی بہت بد نامی ہو رہی ہے
 سادھوؤں کے سانھ . سانھ . جنگل جنگل بھٹکتی ہوساری لاج گنوا دی
 بڑے گھر میں جنم لیا ہے (اور) نالی بچا بچا کر ناچتی ہو
 نم نے ہندوؤں میں سورج جیسا بر پایا (بھر) یہ من میں کیا آیا ہے
 ہمداری لاذلی میرا گردھر کے سادھوؤں کا سانھ . چھوڑ کر چلی ”
 میرا :- ” میرا کی بات کی جگ نے چھان بین نہیں کی ، سو گھڑ سیانی اودا سمجھو
 سادھو ہی میرے من باپ اور خاندان ہیں (جو) اچھے محبت والے
 اور گیانی ہیں
 سنتوں کے قدموں کی پناہ (میں) دن رات سنتوں کی بانی کہتی ہوں
 جاؤ رانا کو سمجھاؤ میں تو (تمہاری) بات نہ مانوں گی
 میرا کے پرہو گردھر ناگر (میں تو) سنتوں کے ہاتھ بگ گئی ہوں
 اودا :- ” بھابی بات سمجھ کر کہو ”

سادھوؤں کی سنگت میں بہت ڈکھ ہے ہمداری بات مانو
 یہ چھاپا تلک اور مالا اُتارو اور ہزاری ہار پہنو
 رتن جڑے زیور پہنو اور بھر پور سکھ بھوگو
 میرا یہاں سے محل میں چلو تمہیں میری قسم ہے ”

اب نہیں بھولوں گی ، میرے دل پر ہری کا نام نقش ہو گیا ہے
 میرے ست گرو نے بتا دیا ہے پھر کیسے بھول سکتی ہوں
 میرا بیٹھی محل میں ، اٹھتے بیٹھتے رام بس رام (رتی ہے)
 سادھوؤں کی سیوا کروں گی ، اب میرا کوئی دوسرا کام نہیں ہے
 رانا جی بات کرتے ہیں ، انہیں کیا جواب دینا ہے
 میرا من ہری نام میں لگا ہے ، مجھے دن دن دو گنا نفع ہے
 سیپ بھر پانی پیتی ہوں ، ٹانک بھر اناج کھاتی ہوں
 کہتے ہیں بولو نہیں ، رانا جی کو غصہ ہے
 رانا جی نے زہر کا پیالہ بھیجا ہے (کہ اسے) میڑنا والی (میرا) کے
 ہاتھ میں دینا
 چرن امرت سمجھ کر پی گئی ، میرا رکھوالا ہر وقت ساتھ ہے
 زہر کا پیالہ پی کر اسی جگہ بھجن کرنے لگی
 (رانا) تمہارے مارے نہیں مروں گی ، میرا بچانے والا کوئی اور ہے
 اگر میں خطاوار لگتی ہوں تو مجھے میکے بھیج دو
 رانا جی مجھ پر غصہ ہیں . میرا ایک بھی سہارا نہیں ذرا بھی (انکے) منہ
 پر نرمی نہیں ہے
 (پتی) بیکٹھ میں لے جانی ہے سہو (راجپوت) یہ نہیں سمجھا
 تلک مانھے پر لگایا اور سب سنسار چھوڑ دیا
 عزت والی تو رام کے سرن میں ہے بھلے ہی سنسار برائی کرے
 مالا مجھے دو میں نے سنگار کے لئے ” سیل برت “ کر لیا ہے
 اب کی مہربانی کیجئے گا پھر تلوار باندھ لوں گی

میرا : - ” مائی مجھ سے خواب میں جگدیش عہد کر گیا ہے
 سوئی ہوئی کو خواب نظر آیا . جو بالکل سچ تھا “
 ماں : - میرا دیوانی سپنے دیکھنے لگی . یہ اور جنجال آیا “

کوئی کہے میرا باؤلی ہے ، کوئی کہتا ہے کہ نشے سے مجھور ہے
 زہر کا پیالہ رانا نے بھیجا اے شافی اسے امرت کردے
 میرا کہتی ہے پرہو گردھر ناگر (میں) جنم جنم کی داسی ہوں

» ۱۱۴ «

رانا جی تم نے زہر دیا ہے میں جان گئی
 جیسے سونا آگ میں نپ کر سورج کی طرح چمک اٹھے
 میں نے لوک لاج ، دنیا میں خاندان کی عزت پانی کی طرح بہانی
 (رانا) اپنے گھر کا پردا کر لو ، میں پاگل عورت ہوں
 سب سنتوں پر تن من واروں (انکے) چرن کمل سے لپٹی ہوں
 میرا کو پرہو نے اپنی داسی جان کر رکھ لیا ہے

» ۱۱۵ «

میں گوبند کا کن گلوں کی
 راجا روٹھے تو نکری والے رکھیں ، ہری روٹھے تو کہاں جاؤں گی
 رانا نے زہر کا پیالہ بھیجا (اسے) امرت جان کر پی جانا
 ڈیا میں جو سانپ بھیجا ہے اسے سالگرام سمجھ لینا
 میرا تو اب پریم دیوانی ہے ، سانولیا کو ہر کی صورت میں پانا ہے

» ۱۱۶ «

مجھ سے ہری بغیر رہا نہیں جانا
 ساس میری لڑتی ہے ، تند میری چھیڑتی ہے ، رانا غصہ کرتے ہیں
 جو کی پہرہ رکھا اور تالا لکوا دیا ہے
 پہلے جنم کی پرانی ہریت وہ کیوں چھوڑ دی جائے
 میرا کے پرہو گردھر ناگر اور مجھے کچھ نہیں آنا

دینا ناتھ سے دھیان لگا ، تو ناری سہاگن ہے
چندری لہنگا پہنے سہاگن گذری جائے بہار
جوین دھن پونم کی چاندنی ہے جو دوسری بار نہیں ملتی
رام نام کی چوڑیاں پہن کر پریم کا سرمہ لگا کر ہری نام کا ہلاق بنایا
اور پار اُتر چلی

ایسے بر کو کیا کروں جو پیدا ہو اور مر جائے
ایک سانورے کو بر بناؤں ، کہ میری چوڑیاں امر ہو جائیں
میں تو سمجھی تھی ، میں نے ہری کو لہگا (مگر) ہری مجھے لہگ لے گئے
ایک لاکھ چوراسی ہزار (آجام) کے مورچے بل بھر میں گر کر ناپید ہو گئے
روحانی شعور اُدھر ہی چلا جدھر کرشن کا نام جھنکار کر چلی
آبناسی (لافانی) کے دروازے پر میرا آواز لگانی ہے

تیرے دیس کے رنگ ڈھنگ اچھے نہیں لگتے
اے رانا تیرے دیس میں سادھو نہیں ، سب ناکارہ لوگ بستے ہیں
اے رانا ہم نے گہنا پانی سب چھوڑ دیا (دل پر) کراہی چوٹ کھائی ہے
ہم نے کاجل ، ٹیکا سب چھوڑ دیا ، جوڑا باندھنا بھی موقوف کیا
میوہ ، مصری ، شکر کا سفوف ، ہم نے یہ سب ہی چھوڑ دیا ہے
جسم کی پروا کبھی نہیں کی ، جیسے میدانِ جنگ میں بہادر (جسم
کی پروا نہیں کرتا)

میرا کے پرہو گردھر ناگر میں نے پورا بر پا لیا

رانا میں رام کے اور سنوریا کے رنگ میں رچی ہوں
میں تال ، پکھاوچ ، مردنگ بجا بجا کر سادھوؤں کے آگے ناچی

تم آجاؤ راما میری آس لگی ہے
تم سے مل کر بہت سکھ پاؤں اور سب مرادیں پوری ہوں
تم میں اور مجھ میں کوئی فرق نہیں، جیسے سورج اور دھوپ
میرا من سے کسی کو نہ چاہ کر صرف سندر شام کو چاہتی ہے

تجھے کوئی روکنے والا نہیں، خوش ہو کر میرا چل
لاج، شرم، خاندان کی عزت سر سے اتار پھینکی
عزت اور بے عزتی دونوں کو گھر پر رکھ کر کیاں گلی میں نکل آئی
اونچی اتاری، لال دروازہ، زرگن سیج بچھی ہے
جس میں پنج رنگی جھالار زیب دے رہی ہے، پھول ہی پھول کھل رہے ہیں
بازو بند اور کرن پھول زیب دے رہے ہیں، سیندور سے مانگ بھری ہے
سُمرن تھال ہاتھ میں لیا تو زیبائش اور نکھر آئی
من کو سکھ دینے والے سیج پر آج میرا زیب دے رہی ہے
رانا تم اپنے گھر جاؤ، تمہاری میری بقی نہیں

میں کسی کی دلہن نہیں بنوں گی
سکھی تم دھیان سے سنو، میں من کی بات کہہ رہی ہوں
سادھوؤں کا ساتھ کر کے ہری سکھ لوں گی اور دنیا سے دور رہوں گی
تن، من، دھن سب چلا جاوے، چاہے سر سے خون بہ نکلے
میرا من سمرن میں لگ گیا ہے، سب کے طعنے سہتی ہوں
میرا کہے پرہو ہری غیر فانی ہے، ست گرو کی پناہ لیتی ہوں

کنوار وہ ہے (جسمیں) سیپ سیونی (انکھ کن بارش) جھیلی ہے
 اے دیو کانک (وہ ہے) جسمیں تم میرے ہو گے
 مگر میں سردی بہت پڑتی ہے ، مجھے فوراً سنبھالو
 بوس کے مہینے میں بہت پالا (ہے) اب تم (مجھکو) خوش کرو
 ماہ میں بسنت پنچمی (ہے) سب پھاگ گاتے ہیں
 پھاگن میں ہولی کھیلی ہوں اور جنگلوں میں آگ لگتی ہے
 چت میں چیت (فکر) ابھری ، آپ درشن دیجئے
 یسا کہ میں جنگل پھولے ، کوئل شور کرتی ہے
 کوئے اڑانے دن گیا ، پنڈت (اور) جوتشی سے پوچھوں
 میرا برہن بیچن ہے درشن کب ہونگے

➤ ۱۰۶ ➤

میرے گھر آؤ پریم ، یارے تمہارے بغیر سارا جگ بدمزہ ہے
 تن ، من ، دھن ، سب بھینٹ کروں اور تمہارا بھجن کروں
 تم گن والے ، بڑے گن کے ساگر ، مجھ میں سب برائیاں ہیں
 میں زرگنی (ست ، رج ، تم ، والی) مگر مجھ میں ایک بھی گن نہیں
 (اور) تم میں سارے گن ہیں
 میرا کے پرہو کب ملو گے ، بغیر درشن کے دکھی ہوں

➤ ۱۰۷ ➤

میں تم پر قربان جاؤں ، رام اب ہماری گلی آجاؤ
 تم کو دیکھے بغیر چین نہیں پڑتا ، تمہاری راہ دیکھتی ہوں
 (تم) کس سکھی کے رنگ میں رنگ گئے ہو جو ہم سے بھی یاری ہے
 مہربانی کر کے مجھے درشن دینا سب خطاؤں کو بھول کر
 اے پریم دیالو ، میں تمہاری پناہ میں آئی ہوں ، مرا ری
 بحر وجود سے بار لگا دو
 میرا تمہارے قدموں کی کنیز ہے ، اور تم پر بار بار قربان ہوتی ہے

یہ سنسار احاطے کا کاٹا ہے ، جسکو ساتھ نہیں لے جاؤں گی
میرا کے پرہو گردھر ناگر جانچ پرکھ کر کن گاؤنکی

➤ ۱۰۲ ➤

پیاجی میرے آنکھوں کے سامنے رہنا
آنکھوں ہی کی سامنے رہنا اور مجھے بھول مت جانا
ہو ساگر میں بھی جاتی ہوں ، جلدی میری خبر لینا
رانا جی نے جو زہر کا پیالہ بھیجا ہے اسے امرت کر دینا
میرا کے پرہو گردھر ناگر مل کے بچھڑ مت جانا

➤ ۱۰۳ ➤

(اے دل) تجھے کیونکر سمجھاؤں ، میرا گردھاری بالا ہے
چھلے جنم کی ہماری محبت ہے ، اب چھوڑی نہیں جاتی
حسین چہرہ دیکھتے دیکھتے پیار اور بڑھ گیا ہے
گردھر میرے گھر میں آؤ ، ناری منگل گانی ہے
موتیوں کا چوک سجاؤں بالے ، تن من تجھ پر صدقے
میرا تو سب کچھ تم سے ہے (ہے) سانورے جگ سے کیا پوچھوں
میرا کہے گویوں کے بالم ، ہمارے اٹے برہمچاری ہو گئے
تمہاری داسی قدموں میں ہے ، نظر نہ پھرانا

➤ ۱۰۵ ➤

پیا مجھے درشن دیجئے
بار بار پکار رہی ہوں ، اب مہربانی کیجئے
جینہ کے مہنے میں پانی کے بغیر پنچھی کو دکھ ہوتا ہے
ساڑھ میں مود شور کرتے ہیں ، یہی کالا پسپا بھی کرتا ہے
ساون میں جھڑی لگتی ہے ، سکھی تیجاں کھلتی ہیں
بھادوں میں ندی بہتی ہے ، پانی دور دور تک پھیل جاتا ہے

(اُور) پر روزِ خوشی ہوئی ہے
 کیا کروں کہاں جاؤں میری سجنی
 جیسے سانپ نے ڈس لیا ہے
 میرا کہے پرہو کب تک ملوگے
 رسیل پریت (دل میں) بسی ہے

➤ ۱۰۰ ➤

اے میرا ہری کا رنگ لگا (اور) سب رنگوں کی روک ہوگئی
 میرا چوڑا، تلک اور مالا (ایک خاص) عمل کے عہد کا سنگار ہیں
 دوسرا سنگار مجھے پسند نہیں آتا، یہی ہمارا گرو گیان ہے
 کسی نے برائی کی، کسی نے تعریف کی (مجھے کیا) میں تو گوبند کا گن گاؤنگی
 جس رستے پر میرے سادھ (گرو) گئے ہیں اُسی رستے پر جاؤنگی
 چوری نہیں کرونگی، جیونہیں ستاؤنگی (پھر) میرا کوئی کیا کریگا
 ہاتھی سے اُتر کر گدھے پر نہیں چڑھونگی یہ بات ناممکن ہے

➤ ۱۰۱ ➤

آنکھوں کے کمل میں بساؤں، اگر میں صاحب کو پاؤں
 ان آنکھوں میں میرے صاحب بستے ہیں، ہلک جھپکائے ڈرتی ہوں
 ”تر کوئی محل“ میں جھروکا بنا ہوا ہے وہاں سے میں نظارہ کروں
 ”سن محل“ میں بیٹھ کر دھیان کروں اور سکھ کی سیج بچھاؤں
 میرا کہے پرہو گردھرناگر پر میں بار بار قربان جاؤں

➤ ۱۰۲ ➤

رانا جی میں تو گوبند کا گن گاؤں کی
 چرن امرت لینا میرا دستور ہے (اس لئے) ہمیشہ (سویرے) اُٹھکر درشن کوجاؤنگی
 پری مندر میں ناچوں کی اور کھنگھرو جھنکاؤں کی
 رام نام جھانجھ پر گاؤں کی اور بحر وجود سے پار ہو جاؤں گی

محبت توڑنے میں دیر نہیں کرنا سچی جیسے جمیلی کے بھول
کہے ، پر بھو تمہارے درشن بن دل میں کاٹنا لگتا ہے

➤ ۹۶ ➤

جاؤ اے نرموہی تمہاری پریت جان لی
دل لگا جب (تو) پریت اور ہی ، اب کچھ اور ہی طریقہ ہے
امرت پلا کر زہر کیوں دیجئے (یہ) کس گاؤں کی ریت ہے
میرا کے پر بھو غیر فانی ہری (ہس) اپنی غرض کے میت ہیں

➤ ۹۷ ➤

جانے دے جانے دے جوگی کس کا میت
میری سچی (تو) سدا اُداس رہتی ہے (یہ تو) نرا الہڑپن ہے
میٹھی میٹھی باتیں کرتی ہے ، پریت نہیں جوڑتی ہے
میں نے جانا کہ آخر تک نبھے گی (مگر) ادھر بیچ (ہی) چھوڑ چلے
میرا کے پر بھو شام منور ، پریم کا پیارا میت

➤ ۹۸ ➤

رمتے رام کبھی بیتے دن یاد کرو گے
آسن مار کر غیر متحرک ہو کر بیٹھے ہو ، کیا یہی بھجن کا طریقہ ہے
مینے جانا تھا جوگی سانہ چلے گا (مگر وہ تو) ادھر بیچ ہی سے چھوڑ چلا
آئے نہ نظر آئے جانے نہ نظر آئے جوگی کسکا میت
میرا کہے پر بھو گردھر ناگر (آپ کے) جرنوں میں چیتا آتی ہے

➤ ۹۹ ➤

اے جوگی تیری صورت دل میں بسی
ہمیشہ دل میں (تیرا) دھیان کرتی ہوں

جوگی میں تیرا بھید نہیں جان سکی
 آسن مار کر پری دھیان میں مگن گنہا میں بیٹھا ہوا ہے
 گلے میں مالا ڈالے، ہاتھ جوڑے اور تن پر بھبھوت رمانے ہوئے ہے
 میرا کے پرہو امر ہیں۔ جو قسمت کا لکھا تھا وہی میسر آیا

جوگی مت جا، مت جا، دیکھ مت جا، میں تیری داسی ہوں، تیرے
 پیروں پڑتی ہوں
 پریم پوجا کی الگ ہی راہ ہے، اُس پر گامزن رہنے کا طریقہ مجھے
 بتادے

اگر صندل کی چتا بناؤں تو اُسے اپنے ہی ہاتھ سے جلانا
 اور جب جل کر خاکستر ہو جائے تو اپنے انگ میں لگا دینا
 میرا کے پرہو گردھر ناگر تم پریم کی جوت میں جوت ملا لینا

جوگی سے پریم کر کے دکھ ہی حاصل ہوا
 سجنی پریم کر کے سکھ نہیں ملے گا۔ کوئی جوگی اپنا ہمدم نہیں ہے
 تم سے ملے بغیر رات دن بے چین رہتی ہوں
 تمام جگ کو موہنے والی ایسی صورت آج تک نہیں دیکھی
 میرا کے پرہو تم کب ملو گے، اب تو ملاقات پر ہی خوشی نصیب ہوگی

اے جوگی تمام دکھوں کی جڑ پریت ہے
 پہلے ہل مل کر میٹھی میٹھی باتیں بنانا ہے اور بعد میں بھول جانا ہے

گیانی گرو! مجھ سے مل کر جانا۔ تمہاری صورت دیکھ کر ریجھ گئی ہوں
میرا نام تم معلوم کر لینا، میں تو پریم دِرانی ہوں
پچھلی کو بغیر پانی کے قرار نہیں آتا، اسی طرح مجھے تمہارے بغیر چین نہیں ہے
تمہارے دیدار کے علاوہ مجھے کوئی چیز نہیں بھاتی ہے۔ تڑپ تڑپ کر
مر جانا ہی بہتر ہے
اے مرے قرار جاں! میرا تو تمہارے قدموں کی غلام ہے

شیام تمہری آرتی لگی ہے
جس نے گرو کی عظمت کو حاصل کر لیا، اُس کے تمام دُکھ ختم ہو جاتے ہیں
یہ جسم ایک دیک ہے، دل کو اُس کی بستی بنا دو، پریم کا تیل بھر
کر اُسے دن رات جلتے دو
گیان کی اہمیت میں اضافہ کر دو، میری مانگ کو اُس سے سنوار دو
میرے سانولے! تمہارے لئے دولت، شباب سب کچھ چھوڑ دیا
تمہارا انتظار کر رہی ہوں شیام! تم ابھی تک نہیں آئے
کیسے اچھے رنگوں کی سیج ہے اور کتنے پھول اس پر بچھائے ہیں
ساون بھادوں امنڈ رہے ہیں۔ برسات کا موسم اب آیا ہے
پلکوں میں سمائے ہوئے غم کے بادل آنکھوں سے برس رہے ہیں
ماں باپ نے تمہیں کو مجھے دیا ہے، تم تو اچھی طرح جانتے ہو
تم کو چھوڑ کر کسی اور خصم کا خیال بھی دل میں نہیں آسکتا ہے
پرہو! میری دنیا، میرا حق، مجھکو سونپ دو
اس مضطرب اور ییکل میرا کو تم اپنا لو

میں رام کے نشے میں چور ہوں
رم جہم پانی برستا ہے اور میرا تمام جسم اور ساڑی اس میں بھیگ گئی ہے
چاروں طرف بجلی چمکتی ہے اور زور سے بادل گرجتے ہیں
ست گرو نے مغالطے کے تمام بند دروازوں کو کھول کر اصلی راز کی بات بتادی
روح پر جسم میں دکھائی دیتی ہے پھر یہی سب سے جدا رہتی ہے
میں عرفان کا نور دیکھ کر لاعُدود (اگم) کی اٹاری پر چڑھ جاتی ہوں
میرا کہتی ہے کہ رام کے امرت کی بلہاری ہے

میرا کا دل جانتا ہے کہ روحانی شعور کا پہاڑ آسمانی رنگ کا ہے
جب جب اس گھر کی یاد آتی ہے آنکھوں سے پانی بہنے لگتا ہے
دل کی کسک جبھے ہوئے تیر کی طرح ہوتی ہے ۔ اور بار بار یہ کسک
محسوس ہوتی ہے
رات دن نیند نہیں آتی ، کھانا اچھا لگتا ہے اور نہ پانی
جُدائی کا درد تن میں اس طرح رچ بس گیا ہے کہ جاگتے رات کٹی ہے
کوئی ایسا وید ملے اور کوئی ایسا رازداں ملے جو تمام عالم کی سیاحت
کر چکا ہو
جس سے اپنے بدن کی کسک کہوں تو کسی طرح کا شک نہ رہ جائے
اُس گھر کی ، اُس راز کی جستجو کرتی ہوں جس کی بابت کوئی ذکر
نک نہیں کرتا
ریداس جیسے فاضل گرو ملے ، جنہوں نے مجھے روحانی شعور دان دیا
تب میں اپنے پریم (ساجن) کے قدموں میں جا پڑی ۔ پھر کہیں جا کر میرا
کے درد کی آگ بجھی
میرا نے تمام خلق پر خاک ڈال دی تب کہیں اپنا گھر پہچانا

ست گُرو نے جو تیر مارا تھا وہ میرے دل کے پار نکل گیا
ہجر کا زخم میرے دل میں لگا ہے جس سے میرا تمام جسم یقیناً ہے
جب سے من میں پریم کی زنجیر ڈالی ہے وہ ادھر ادھر نہیں بھٹکتا
میرا درد میرا پریم جانتا ہے اور کوئی نہیں جانتا
اے سکھی میں کیا کروں میں لاچار ہوں، آنکھوں سے آنسو بہتے ہیں
میرا کہتی ہے پرہو تم سے ملے بغیر میرے دل کو قرار نہیں آتا

ست گُرو نے ہجر کا روگ لگا کر تیر مارا ہے
پیروں سے لنگڑا اور کانوں سے بھرا کر دیا اور آنکھوں سے اندھا
میں کھڑی راستہ دیکھتی ہوں، میرے دل کی بات کوئی نہیں جانتا
ست گُرو نے ہی ایسی دوا دی کہ مکمل آرام ہو گیا
ست گُرو جیسا کوئی حکیم نہیں ہے، یہ بات وید اور پران میں لکھی ہے
میرا کہے پرہو تو گردھر ناگر ہیں، اسے امر لوک میں رہنا ہے

مجھے رام نام کی دولت مل گئی
میرے ست گُرو نے مہربانی کر کے مجھے اپنا لیا اور مجھے انمول چیز دے دی
میں نے ساری دنیا کو کھوکھلا بھی جنم جنم کی دولت پالی
یہ دولت نہ خرچ ہوتی ہے، نہ اسے چور لے جاتے ہیں۔ یہ دن بدن بڑھتی
رہتی ہے
سچائی کی ناؤ اور ست گُرو اسے کھینے والا، زندگی کا سمندر پار ہو گیا
میرا خوش ہو ہو کر ان کے مگن گاتی ہے

میں گردھر کے ساتھ کھلی، سسٹاں، میں گردھر کے ساتھ کھلی
 بانچ رنگ (حواس) کا لباس پہن کر میں آنکھ پھولی کھلے گی
 وہاں مجھے کرشن مل گئے اور میں ان سے دل کھول کر تمام پردے ہٹا کر ملی
 جنکے پیا پردیس میں رہنے ہیں وہ اسے خط لکھ لکھ کر بھیجتی ہیں

میرا پیا تو میرے دل میں رہتا ہے میں کہیں نہیں آتی جانی
 یہ چاند سورج زمین آسمان سب مٹ جائینگے
 باقی ہوا سب فنا ہو جائینگے، صرف وہ لازوال قائم رہیگا
 سُرتِ زرت کے چراغ میں دھیان کی بٹی لگا کر
 اگم (لا محدود) کی گہائی کے تیل سے میں اس چراغ کو روشن رکھتی ہوں
 میری دوسری سکھیاں تو شراب پیکر مست رہتی ہیں، میں بغیر پیئے ہی
 مست ہوں

میں نے محبت کی بھٹی کی شراب پی ہے، دن رات سرشار رہتی ہوں
 نہ میں مانگے جاتی ہوں نہ سسرال، ہری کو دیکھتی رہتی ہوں
 میرا کے پرہو گردھر ناگر ہیں، وہ ہری کے قدموں سے ہی دل لگانی ہے

بڑے گھر میں قفل لگا ہے (مقام حق ناپید ہے) مگر میرا دل اسکی جستجو میں ہے
 میرے دل میں کوئی چھل کپٹ نہیں ہے میں نہانے کیوں جاؤں
 مجھے گنگا جمنّا سے کیا مطلب میں تو جا کر سمندر سے مل جاؤں گی
 عملے والوں کا کام نہیں ہے، میں تو خود دربار میں پہنچ سکتی ہوں
 آئینے کا کام نہیں (سنگار کی فرصت کہاں) یہاں تو سر پر آرا چلتا ہے
 مجھے سونے چاندی سے کیا کام میرا تو حنا کا بیوپار ہے
 میری قسمت جاگ الہی کہ ساگر سے مل کر ایک ہو گئی
 امرت کا پیالا چھوڑ کر کڑوا پانی کون پیتا ہے
 پیپا (سنت) کو پرہو نے اپنے زمانہ کا پورا خزانہ دے دیا
 میرا کے پرہو گردھر ناگر «اجی حضور اب تو دھنی مل گیا ہے»

سکھی میرے تو نینوں کا تیر لگ گیا ہے
 بہت پریشان ہوں کہ میرے دل میں ایک یحٰد حسین مورت بس گئی ہے
 میں اپنے گھر پر کھڑی کب سے راہ دیکھ رہی ہوں
اپنے محبوب کے بغیر میں اپنی زندگی کی جڑ کو کیسے جمانے رکھوں
 میرا گردھر کے ہاتھ بک گئی ہے ، لوگ کہتے ہیں کہ بگڑ گئی ہے

ایسے پیا کو جانے نہ دیجے
 تن من دھن سب کچھ قربان کر کے اسے دل میں بسا لیجے
 سکھی اس کی صورت دیکھیں اور آنکھوں سے رس پئیں
 جس جس ترکیب سے پری خوش ہوں وہ سب کریں
 سندر شیا م کے حسن کو دیکھ کر ہی جان پڑ جاتی ہے
 وہ بہت ہی خوش نصیب ہوتا ہے جس پر میرا کہے پر ہو خوش ہونے ہیں

میں تو سانورے کے رنگ میں رچ گئی
 پورے ساز سنگار کے ساتھ ، پیروں میں گھنگھرو باندھ کر اور شرم حیا
 چھوڑ کر میں ناچی
 غلط خیالات دور ہونے ، سادھوں کے ساتھ رہ کر میں سچی بھکت بن گئی
 پری کے 'گن گا گا کر میں رات دن موت کے تصور سے بچ گئی
انکے بغیر ساری دنیا بے مزہ اور ہر بات کچی لگتی ہے
 میرا کہتی ہے کہ میں نے اپنے تجربے سے گردھر لال کی بھکتی میں ہی
 رس پایا ہے

نہایت بانکے 'حسن' سے آنکھیں الٹی ہیں
میری آنکھیں نہایت بانکے 'حسن' سے الٹی ہیں
مدن موہن کا حسن دیکھ کر مست مور کی طرح ٹٹکتی ہیں
دھنک جیسے خمدار ابرو، گھنگرالی زلفیں، ہونٹوں پر ترچھی بانسری
اور پگڑی کا سرا لٹکنا ہوا
میرا اپنے پرہو گردھر ناگر کے شوخ 'حسن' پر ریجھ گئی ہے

جب سے تند کے بیٹے کرشن پر میری نظر پڑی ہے
تب سے مجھے دونوں عالم میں کچھ بھی اچھا نہیں لگتا
سر پر مور پنکھ کا چاند جیسا حسین تاج سجا ہوا ہے
اور ماتھے پر کیسر کا تلک تینوں عالم کو 'لبھا' لیتا ہے
کانوں کے کنڈل کی جھلک گالوں کو منور کر رہی ہے
جیسے کوئی پھلی نالاب کو چھوڑ کر 'مکر' سے ملنے آئی ہو
خمدار ابرو، ماتھے پر تلک، چتون میں جادو ایسا
کہ کہنجن جیسی چڑیا اور بھنورے اور پھلیاں اور ہرن کے بچے بھی
رشتہ کریں
بیحد خوبصورت ناک اور حسین گردن میں تین لڑی کا ہار
ناچنے والے پرہو کا یہ رنگ روپ سب سے نرالا ہے
کندرو کے پھل جیسے سرخ ہونٹ، گلابی آنکھیں اور ہلکی ہلکی میٹھی
مسکراہٹ
انار کے دانوں جیسے دانتوں کی چمک بھلی جیسی ہے
کمر میں کردھنی کی چھوٹی چھوٹی گھنٹیوں کی کہن کہن کرنی آواز
بڑی پیاری ہے
میرا تو گردھر کے انگ انگ پر قربان جاتی ہے

میں تمہیں دیکھتی ہوں لیکن تم مجھے نہیں دیکھتے تمہارا دل کتنا سخت ہے
تمہیں دیکھنا ہی میرا واحد سہارا ہے، اور کوئی ثور میرے ہاتھ میں نہیں ہے
میں کب سے کھڑی تم سے عرض کر رہی ہوں، عرض کرتے کرتے صبح ہو گئی ہے
میرا اپنے لازوال سر بہو ہری سے کہتی ہے کہ وہ اپنی جان انکی نذر کرتی ہے

۷۶

میرا دل تو کرشن سے لگ گیا ہے
سر پر موہ پنکھ کا تاج لگانے پلا لباس پہنے اور گلے میں ویجنتی
مالا ڈالے

یشودا کا بیٹا گایوں کے ساتھ گھومتا پھرنا ہے
کنہیا کالندی کے کنارے گاؤں چرانے ہیں
اور قدم کے پیڑ کے نیچے بانسری بجانے ہیں
سب گوالیوں یشودا کے گھر جا کر شکایت کرتی ہیں
کہ آپ کا دلارا بیٹا زبردستی آکر ہم سے الگ ہوتا ہے
ورندابن میں جب کرشن گوپیوں کے ساتھ کھیلنے ہیں
تو دیوتا، انسان اور رشی مئی سبھی کو موہ لیتے ہیں
اندر نے جب غصہ ہو کر موسلا دھار بارش کرائی تھی
تو سیلاب میں ڈوبتے ہوئے برج کو میرے کرشن نے ہی بچایا
میرا اپنے سر بہو گردھر سے کہتی ہے کہ میری بات توجہ کے ساتھ سنو
میں تمہارے دیدار کی بھوکی ہوں مجھے کچھ بھی اچھا نہیں لگتا

۷۷

میں موہن کے روپ پر ریحہ گئی ہوں
خوبصورت چہرہ، کمل کی پتی جیسی آنکھیں، بانکی چتون اور ہلکی سی
مسکراہٹ
جمنے کے کنارے گاؤں چراتا ہے اور بانسری پر میٹھی نان سنانا ہے
جسم و جان اور تمام دھن دولت اس پر قربان ہے، میرا گردھر کے
چرن کمل قدموں سے لپی بنے

میرا کہتی ہے میرے پرہو تو گردہر ہیں ، باقی دنیا جھک مارتی ہے

» ۷۲ «

ہری کے بندہ میرا کیا حال ہے
تم میرے خلاف کچھ کہو میں تو اپنے راؤ (راجہ) کی غلام ہوں
شروع سے آخر تک میں ہمیشہ تیرا ہی نام رلتی ہوں
میں بار بار پکار کر کہتی ہوں کہ پرہو میں تجھ پر قربان ہوں
یہ دنیا بُرائیوں کا سمندر ہے جسکے بیچ میں میں گھری ہوئی ہوں
میری ناؤ ٹوٹی ہوئی ہے ، پرہو تم اس میں بادبان لگا دو نہیں تو میں ڈوب جاؤنگی
بھر کی ماری میں اپنے پیا کا راستہ دیکھتی ہوں ، تم مجھے ابے پاس رکھ لو
داسی میرا رام کا نام رلتی ہے اور کہتی ہے کہ میں تیری پناہ میں ہوں

» ۷۳ «

ہری تم میری زندگی کے سہارے ہو
تینوں عالموں کے بیچ میرا اور کوئی سہارا نہیں ہے
میں نے تمام دنیا دیکھ لی ، تمہارے بغیر مجھے کچھ بھی اچھا نہیں لگتا
میرا کہتی ہے میں تو راؤ کی غلام ہوں یہ بات بھول مت جانا

» ۷۴ «

بانکے بہاری کرشن کو میرا سلام
جسکے سر پر موہ پنکھ کا تاج اور تلک ہے اور سیاہ زلفوں میں کنڈل چمکتا ہے
جسکے ہونٹوں پر بانسری کی میٹھی تان ہے اور اس سے رادھا کو رجھاتا ہے
یہ حسن دیکھ کر میرا گردہاری موہن پر لٹو ہو گئی ہے

» ۷۵ «

ہری ذرا میری طرف دیکھو

وقت گزرتا جاتا ہے لیکن وہ کنارے نہیں لگتی
 ملاحوں کا کہنا ہے کہ ندی کا بہاؤ بہت تیز ہے
 اب گووند تیرا ہی سہارا ہے
 شرم و حیا کا لنگر ٹوٹ گیا ہے
 تیری یہ بغیر دام کی داسی ڈوب رہی ہے
 پر بہو اب تو مجھے پار لگا دو
 نہیں تو لوگ نالیاں بجا بجا کر ہنسیں گے
 میرا اپنے پر بہو گردھر سے کہتی ہے
 تم جلدی آکر میری خبر لینا

۷۰

اے جوگی! محبت تکلیف کی جڑ ہے
 شروع میں تو ہل مل کر بڑی میٹھی میٹھی باتیں بناتے ہیں پھر بھول جاتے ہیں
 اس تعلق کو اتنی ہی آسانی سے توڑ دیتے ہیں جیسے چمیلی کا پھول
 میرا کہتی ہے کہ پر بہو تمہارے دیدار کے بغیر دل میں کاٹھے سے چبھتے ہیں

۷۱

رانا اب میں تمہاری بات نہیں مانوں گی، مجھے تو گردھاری جیسا شوہر مل گیا ہے
 ہیرے اور کافور کا ایک ہی انجام ہے کوئی لاکھ کچھ کہے
 پتھر اور سونے کا ایک انجام ہے، مٹھائی اور مرج ایک ہی جیسے ہیں
 میں تو بیشمار دولت والے کی پناہ میں چلی گئی ہوں، ہاتھ میں میں نے مالا لے لی ہے
 میں نے بڑی تکلیفیں اٹھائی ہیں تب مجھے اتنا بڑا گرو ملا ہے
 سادھوؤں کے ساتھ میرا دل خوش رہتا ہے اسی لئے میں اپنے رشتہ داروں سے
 الگ ہو گئی ہوں
 کوئی مجھے لاکھ سمجھائے لیکن میں اپنی عقل کے مطابق ہی چلوں گی
 سر پر ہیرے جو ابرات سے جڑا تاج پہنتے سے کیا فائدہ، ہار گلے کو بھاری لگتا ہے
 گھنگھرو سے میرے پیر چھلتے ہیں، میں تو شام سے عشق کرتی ہوں
 شرم و حیا سب چھوڑ کر میں نے اس کے قدموں کا سہارا لیا ہے

اے نیک لوگو میں ہری کے ہجر کی ماری ہوئی ہوں
 گہنے اور کپڑے میں نے سب ترک کر دیے ہیں، کھانا پینا بھول گئی ہوں
 اے برج کے رہنے والو یہ دیوانی کہتی ہے کہ میں گردھر کی داسی ہوں
 اودھو تم دوارکا جا کر گویوں کی مصیبتوں کا حال کہنا
 سکھیوں کا وہی حال ہے جیسے پانی کے بغیر مچھلی تڑپتی ہے
 میں نے ورندا بن کا پتہ پتہ اور برج کا ایک ایک گھر ڈھونڈھا پر وہ کہیں
 نہ ملا

خود تو جا کر دوارکا میں بس گئے، یہاں ہجر میں ہمارا برا حال ہے
 میرا کہتی ہے کہ میرے پرہو تو گردھر ہیں، میں تو کرشن کی داسی ہوں

پرہو! میرا من تو تب مانے جب تم مجھے نجات دلادو
 ندی گہری ہے اور ناؤ پرانی ہے، پار کیسے اتروں
 وید پران سب دیکھ ڈالے لیکن کوئی نتیجہ نہیں نکلا
 میرا کہتی ہے کہ بھگوان کا نام ہی پر چیز کا آخری نچوڑ ہے

تم گوالے ہو تم دوسرے کا درد کیا جانو
 پانہ میں لالھی، کندھے پر کمبل، جنگل جنگل گائیں چراتے تھے
 چرا چرا کر مکھن کھاتے تھے اور برج کی عورتوں کو ستاتے تھے
 میرا کہتی ہے کہ اس طرح چھوڑ کر چلے جانے میں تمہیں شرم نہیں آتی

محبت کے سمندر میں میری ناؤ پڑی ہے

ہاتھی گھوڑے مال خزانہ کچھ بھی تیرے ساتھ نہیں جائیگا
 دو گھڑی کے ستسنگ میں نجات کا پورا راز معلوم ہو جاتا ہے
 میرا بانی کہتی ہے کہ تو پری کے چرنوں سے لو لگا

۶۳

میرے ٹھا کر (دیوتا) میں نے تھالی پروس دی ہے
 میرے کرشن تم آؤ
 پرہو تیری داسی کنگال ہے ، وہ تیری محبت کی پیاسی ہے
 داسی کے من کی مراد پوری کرو
 پرہو مٹھاس تو انگور اور کھجور میں ہے ، میٹھے پکوانوں میں نہیں
 مجھے تو ساس اور نند کے طعنے مارے ڈالتے ہیں
 پرہو میں طرح طرح کے میوے لاتی ہوں ، واسدیو (کرشن) تم آؤ
 اور میرے گھر پر رات کو دہو
 میں نے دنیا کا ڈر چھوڑ دیا ہے ، پرستم کا گھر ہی اچھا ہے

۶۴

رادھا کرشن کے نام کا جاپ مت چھوڑو ، بس یہی کیئے جاؤ
 شیرینی کو چھوڑ کر کڑوے نیم کو گھول کر مت پیو
 چاند اور سورج کی روشنی سے پیٹھ موڑ کر گھریلو آگ سے ناطہ نہ جوڑو
 پیرے اور لعل کے زیور چھوڑ کر کانچ کے موتیوں پر مت ریجھو
 میرا کہتی ہے کہ پرہو گردھر ناگر کے سوائے نفسانی خواہشات سے پرہیز کرو

۶۵

محبت کا درد جس نے محسوس کیا ہو وہی سمجھ سکتا ہے
 مصیبت پڑنے پر کوئی پاس نہیں آتا، خوشی میں سبھی شریک رہتے ہیں
 اسکا زخم باہر سے دکھائی نہیں دیتا لیکن درد ہر جگہ ہوتا ہے
 میرا کہتی ہے کہ میں اپنا یہ جسم گردھر پر صدقے کرتی ہوں

میں گا گا کر بھگوان کو رجھانی ہوں اور گھن شام کرشن ناچتے ہیں
میرا گردھر کے گُن گاتی ہے اور کہتی ہے کہ انکے قدم میرے گھر میں
پڑے ہیں

۶۰

مایا کے پھیر میں دنیا مری جانی ہے
کوئی باغ بگیچے بنانا ہے، کوئی حویلی بنانا ہے
کوئی دوڑ بھاگ کر دوست جمع کرنا ہے، کوئی پانچ پچاس کی تھیلی
جوڑنا ہے
اس زعفرانی رنگ کے خوبصورت جسم پر کیسی زہریلی ییل اُگی ہے
میرا تو اپنے پر بھو گردھر کے نام کا بادبان لگا کر پانی میں اتر پڑی ہے

۶۱

بھگوان تو اپنے بھکتوں کے من میں رہتا ہے
تم جنگل میں جا کر کیا کرو گے
تم بھیس بنا کر کیوں بھٹکتے ہو
بھگوان جنگل میں تو نہیں ہے
کاشی جا کر تم گنگا میں نہاتے ہو
لیکن بھگوان پانی یا ہوا میں تو نہیں رہتا ہے
تم یوگ اور تپسیا کرتے ہو، ہون اور یگیہ کراتے ہو
لیکن بھگوان یگیہ اور ہون میں تو نہیں ہے
میرا بانی کہتی ہے کہ بھگوان تو اپنے بھکتوں کے من میں رہتا ہے

۶۲

اے انسان تو سسنگ کا رس چکھ
پہلے تو یہ کڑوا ضرور لگتا ہے لیکن بعد میں میٹھے آم جیسا مزا دیتا ہے
اپنے اس جسم پر تو غرور مت کر، یہ آخر میں خاک ہو جائیگا

کسی دن ہاتھی پر چلنا ، کسی دن گھوڑے پر
 اور کسی دن پیدل
 کسی دن کھاجہ اور لڈو کھانا
 اور کسی دن فافہ کر لینا
 کسی دن کھاٹ پر سونا ، کسی دن چٹائی پر
 اور کسی دن زمین پر ہی سونا
 میرا پرہو گردھر کے گُن گاتی ہے اور کہتی ہے
 جو گزرے اسے برداشت کرنا چاہئے

۵۸

تمام وقت ہری کے بھجن میں مصروف رہنا
 صاحب (مالک) کا گھر بہت دور ہے، جیسے کھجور کا لمبا پیڑ ہوتا ہے
 جو چڑھ کر اوپر تک پہنچتا ہے وہ محبت کا رس چکھنا ہے، جو گرنا
 ہے وہ چکنا چور ہو جانا ہے
 زرہ بکتر پہنتا اور ڈھال کی آڑ لینا سب بیکار ہے
 سچے سورما کو، جو پوری طاقت سے لڑتا ہے، اسے وہ پہچانتا ہے
 اگر تو بھگوان کو اپنا ہتھیار سمجھ جیسے کٹار یا تلوار
 اور اسکے نام کی مالا کو کمان تصور کر، تو تیری کبھی شکست نہیں ہوگی
 یہ جسم گوشت پوست کا بنا ہے، اس میں نو نبضیں اور دس چہار
 دیواریاں ہیں
 میرا کے پرہو گردھر ناگر ہیں، اس کے دل پر انہیں کا نقش ہے

۵۹

اب تجھے موقع ملا ہے تو شیاہ سندھ کرشن کا نام جپ
 طوائف کو نجات دلانے والے، زہر کو اتارنے والے وہ سب کا کام پورا
 کرتے ہیں
 میں رات دن پرہو کے بھجن میں محو رہتی ہوں اور ہر لمحہ اسی کے
 آگے سر جھکانی ہوں

جیسے بغیر نمک کا کھانا
 جیسے بغیر استاد کا شاگرد
 جیسے بغیر مرد کے عورت
 جیسے بغیر بیٹے کی ماں
 جیسے طوائف کے گھر کی اولاد
 وہ انسان ویسا ہی ہے جیسے بنا تے کا پیڑ
 جیسے کنجوس کا جمع کیا ہوا پیسہ
 جیسے بنا پانی کا نالاب

۵۶

دو دن کے مہمان ہیں
 میں کسی سی تعلقات کیوں بگاڑوں؟ دو دن کے مہمان ہیں
 آج تم سیج اور پلنگ پر سو رہے ہو
 کل تم مرگھٹ چلے جاؤ گے۔ میں کسی سے تعلقات کیوں بگاڑوں
 ماں، باپ، بیٹے اور بیوی کو چھوڑ کر
 آخر کیوں پریشان ہوتے ہو۔ میں کسی سے تعلقات کیوں بگاڑوں
 بڑے بڑے راجہ، بڑے بڑے حاکم سب چلے گئے
 کُتبہ کرن جیسا بہادر بھی چلا گیا۔ میں کسی سے تعلقات کیوں بگاڑوں
 کیڑے مکوڑے بھی چلے گئے اور برہما بھی چلے گئے
 کوئی بھی ہمیشہ باقی نہیں رہیگا۔ میں کسی سے تعلقات کیوں بگاڑوں
 میرا بائی پرہو گردھر کے گُٹن گانی ہے
 اور کہتی ہے کہ تو رام کا دھیان کر۔ میں کسی سے تعلقات کیوں بگاڑوں

۵۷

جب فقیری ہی کرنا ہے تو پھر رنج کیا
 ہمیشہ مگن رہنا چاہئے
 کسی دن گاڑی پر سفر میں، کسی دن جھونپڑے میں
 کسی دن جنگل میں

جس کے آنکھوں کے اشارے پر تمام کائنات چلتی ہے، وہ شخص عجیب و غریب ہے

تم بھی جھوٹے ہو، ہم بھی جھوٹے ہیں، تمام دنیا جھوٹی ہے
 عورت اور مرد کا رشتہ جھوٹا ہے اسی لئے تمہارا دل ٹوٹ گیا ہے
 میرے شوہر تمہیں بتاؤ تم مجھے کیوں قید کر کے رکھنا چاہتے ہو
 میرا شوہر تو وہ ہے جو کروڑوں کائناتوں کے ذرے ذرے میں بسا ہوا ہے
 پیلا کپڑا پہننا، کالا چہنا، جسم پر راکھ ملنا
 تلک لگانا، تلسی کی مالا پہرنا، سادھوؤں کے ساتھ بیٹھنا سب بیکار ہے
 میرا بائی کہتی ہے کہ گردھر کی پناہ میں رہنا سب سے بڑا سہارا ہے
 اگر تم اپنی تمام عمر خدا کی یاد کئے بغیر بتا دو گے تو تمہارے انسان
 ہونے پر لعنت ہے

۵۴

اگر تم محبت کا یہ رشتہ توڑ دو تو بھی میں یہ رشتہ نہیں توڑوں گی
 کرشن، تم سے محبت کا رشتہ توڑ کر میں کس سے یہ رشتہ جوڑوں گی
 تم پیڑ ہو اور میں ایک چڑیا ہوں
 تم تالاب ہو اور میں ایک مچھلی
 تم پہاڑ ہو اور میں گھاس
 تم چاند ہو، میں چکور ہوں
 تم موتی ہو، میں دھاگا ہوں
 تم سونا ہو میں سہاگا
 میرا کہتی ہے کہ برج کے رہنے والے میرے پرہو
 تم میرے ٹھاکر (مالک) ہو، میں تمہاری داسی ہوں

۵۵

پری کے نام کے بغیر انسان ایسا ہی ہے
 جیسے بغیر چراغ کا مندر
 جیسے بغیر چاند کی رات

مہربان ہماری درخواست سنو
میں اس زندگی کے سمندر میں بھی جا رہی ہوں، تم چاہو تو مجھے
نکال سکتے ہو
اس دنیا میں کوئی بھی میرا اپنا نہیں ہے، اگر سچ مچ کوئی اپنا ہے
تو رام
ماں باپ رشتے دار اور قبیلے والے سب کو اپنے مطلب سے غرض ہے
میرا کے مالک تم میری اتنی درخواست قبول کر لو کہ اپنے قدموں میں جگہ دیدو

اے محرم، میری خبر جلدی لینا
پانی کے بغیر پھلی ایک پل میں مر جاتی ہے
اسے امرت بھی پلاؤ تو زہر ہے
بہت دن سے بھرتے بھرتے میرا ہجر کا پیالہ لبریز ہو گیا ہے
اب تو مجھے اپنے قریب رکھو
چکور کا دھیان چاند پر لگا رہتا ہے
اونٹ کی تمام تر توجہ رسی پر رہتی ہے
سنت ہمیشہ رام کے دھیان میں کھویا رہتا ہے
اور نادان آدمی ہمیشہ اپنی ہی فکر میں غرق رہتا ہے
اور میرا کا دھیان ہر دم
اپنے گردھر ناگر میں لگا رہتا ہے

رانا جی مجھے نو موہن بہت پیارا لگتا ہے
جس کی قدرت سے ہر چیز حرکت کرتی ہے، ہماری سانس میں گویائی
آتی ہے

یہ تمام شاہی ٹھاٹ اور دکھاوٹی لباس جھوٹے ہیں
 صرف اپنے محبوب کی گدڑی سچی ہے جس میں یہ جسم پاک رہتا ہے
 چھپن قسم کے لذیز کھانے پھینک دو، یہ سب ناقص ہیں
 اپنے محبوب کا بنا نمک کا ساگ بھی ان سے بہتر ہے
 دوسرے کی خوشحالی دیکھکر تو کیوں کڑھنا ہے
 اپنی زمین ہی اچھی ہوتی ہے چاہے وہ کتنی ہی کم زرخیز کیوں نہ ہو
 دوسرے کا شوہر کتنا ہی اچھا کیوں نہ ہو اپنے کسی کلم کا نہیں
 اسکے ساتھ جانا دیکھکر کوئی تمہیں اچھا نہیں کہیگا
 شوہر اپنا ہی سب سے اچھا ہوتا ہے چاہے وہ کوڑھی ہی کیوں نہ ہو
 اسکے ساتھ جانا دیکھکر سبھی تمہیں اچھا کہیں گے
 اپنا بام تو وہ اوناشی (خدائے لافانی) ہے جس سے میری سچی محبت ہے
 میرا کو اسکا مالک مل گیا ہے یہی سچی محبت کا دستور ہے

۵۰

جب رام جنگل میں گئے تھے تو بھلانی انکے لئے چکھ چکھکر میٹھے
 پیر لائی تھی

اس میں نہ کوئی خوبی تھی، نہ کوئی حُسن تھا
 بہت ہی نیچی ذات کی تھی اور یبعد میلی کچلی تھی
 لیکن رام نے اسکی عقیدت کی قدر کرتے ہوئے وہ جھوٹے پھل بھی قبول
 کرائے
 وہ اونچ نیچ کی تفریق نہیں کرتے، انہوں نے تو اس عیاش اور بدچلن
 طوائف کو بھی نجات دلا دی تھی حالانکہ اس نے کبھی کوئی وید نہیں
 پڑھا تھا پھر بھی جنت میں چلی گئی

محض خدا کی عقیدت کی وجہ سے وہ بہشت میں پہنچ گئی
 داسی میرا کہتی ہے کہ جو ایسی محبت کر سکتے ہیں وہی تیرے بن
 سکتے ہیں
 جیسے نجس کو پاک کردینے والے کرشن سے گوکل کی گوانوں کو
 فیض حاصل ہوا

کوئی میرے پیا سے جا کر بہ کہہ دے کہ وہ میری بس اتنی درخواست
میں لے

کہ اوروں سے تو پیار کی باتیں کرتے ہو اور ہم سے دل چراتے ہو
تمہارے سوا میرا کوئی اور نہیں ہے ، میں تو تمہاری پناہ میں پڑی ہوں
آنے کا وعدہ کر گئے تھے لیکن ابھی تک نہیں آئے ، اب زندگی کے دن
ہی کتنے رہ گئے ہیں

میرا ہاتھ جوڑ کر عرض کرتی ہے کہ میرے مالک تم کب ملو گے

ایسی زندگی بار بار نہیں ملتی
نہ جانے کون سے نیک کام کئے تھے جو انسان کی شکل میں پیدا ہوئے ہو
پر لمحہ بڑھتے ہوئے پر پل گھٹتے ہوئے دیر نہیں لگتی ہے
جس طرح پیڑ کے پتے ایک بار ٹوٹ جانے پر دوبارہ نہیں لگ سکتے
زندگی کا سمندر یحید طوفانی اور اسکی موجیں بہت تند ہیں
رام نام کے بیڑے کا سہارا لیکر ہی اسے پار کیا جا سکتا ہے
یہ زندگی چوسر کی بازی کی طرح ہے ، اسے خدا سے لو لگا کر ہی
جیتا جا سکتا ہے
سادھو ، سنت ، مہنت اور بڑے بڑے عالم بہ آواز بلند یہ کہتے رہتے ہیں
اور گردھر لال کی داسی میرا بھی یہی کہتی ہے کہ یہ زندگی چار دن
کی ہے

آؤ سکھیں کہیں اور جانے کا خیال چھوڑ کر یہیں اپنے مالک کا دھیان کرو
یہ تمام ہیرے جواہرات اور انکی جگمگاہٹ جھوٹی ہے
تمام زیور جھوٹے ہیں صرف اپنا محبوب سچا ہیرا ہے

سیاں ، تمہارے بغیر مجھے نیند نہیں آتی ہے
ایک ایک پل میرے لئے قیامت ہے ، اور پر لمحہ ہجر کی آگ میں جاتی ہوں
پریم کے بغیر میں وہاں نہ جاؤنگی ، مجھے یہ چراغ یہ محل کچھ بھی اچھا
نہیں لگتا ہے
پھولوں کی سیج کانٹوں جیسی لگتی ہے ، ساری رات جاگ کر صبح کرتی ہوں
میں کس سے کہوں کون میری مانتا ہے ، کہاں کوئی مجھے خاطر
میں لانا ہے
پریم نے سانپ کی طرح میرے دل کو ڈس لیا ہے ، درد کی لہروں کے
ساتھ میری زبان نکلی جاتی ہے

مینڈھک ، مور ، پیپے بول رہے ہیں ، کوئل گا رہی ہے
کالی گھٹا گھر کر آئی ہے ، بجلی چمکتی ہے تو مجھے ڈر لگتا ہے
اس دنیا میں ہے کوئی رام کا پیارا ، جو اس دل کے درد کو مٹا دے
میرا کے پرہو لازوال ہری ہیں جنہیں ہر وقت دیکھتے رہنا اچھا لگتا ہے

رام کہنے چاہے گووند کہنیے ایک ہی بات ہے
کنکڑ اور پیرا دیکھنے میں ایک جیسے ہوتے ہیں ، پیرا کسے کہنے
پیرا ہونے کی پہچان تو تبھی ہو سکتی ہے جب وہ مہنگا بکے
کوئل اور کوآ دیکھنے میں ایک جیسے ہوتے ہیں ، پھر کوئل کسے کہنیے
کوئل ہونے کی پہچان تو تب ہو جب وہ میٹھی بولی بولے
ہنس اور بگڑا دیکھنے میں ایک جیسے ہی ہوتے ہیں ، پھر ہنس کسے کہنیے
ہنس تو تبھی پہچانا جا سکتا ہے کہ وہ چن چن کر موتی کھائے
دنیا میں بھگت تو بہت ہیں لیکن سچا بھگت کسے کہنیے
سچا بھگت تو وہی کہا جا سکتا ہے جو سب کی بات برداشت کر سکے
میرا کے پرہو گردھر ناگر ہیں ، انہیں کے قدموں سے لگن لگاؤ
دوارکا کے راجہ کرشن کی پناہ میں جا کر رہو

شیام سندر ، تیری وجہ سے سب لوگ مجھ پر ہنستے ہیں
 کوئی کہتا ہے کہ میرا پاگل ہو گئی ہے ، کوئی کہتا ہے اسنے خاندان کا نام
 ڈبودیا ہے
 کوئی کہتا ہے میرا نور کا خزانہ ہے ، وہ پیا کے نام میں رچی بسی ہے
 بھکتی کی تلوار کی دھار عجیب ہے ، وہ تمام پابندیوں کو کاٹ دیتی ہے
 میرا کے پرہو گردھر ناگر ، وہ تو شب کے ساگر میں ڈوب چکی ہے

۴۴

رام کا نام میرے من میں بس گیا ہے
 میں تو محبت کرنے والے رام کو رجھاؤں گی ، اے ماں
 میں کمبخت ، پھوٹے نصیبوں والی
 میں انکی عظمت کے گیت کیسے گاؤں گی ، اے ماں
 ہجر کے پنجرے کی دیوار کے اوپر سے جھانک کر
 میں اپنے دل کو خوش کرونگی ، اے ماں
 اپنے نفس کو مار کر ست گرو سے آراستہ ہو کر
 میں برے خیالات کو دور کردونگی ، اے ماں
 محبت کی کمان میں سُرت کی ڈوری لگا کر
 میں اس پر نام کا تیر چلاونگی ، اے ماں
 گیان (عرفان) کا ڈھول بہت بڑا بنا ہے
 اسی کی دھن پر میں مست ہو کر انکے مگن گاؤنگی ، اے ماں
 اس جسم کو تال کی صورت دیکر اور من کو مور چنگ باجہ بنا کر
 میں سوئی ہوئی سُرت کو جگاؤنگی ، اے ماں
 میں اپنے پریتم کے آگے ناچوں گی
 تبھی میں امر لوک میں پہنچ پاؤنگی ، اے ماں
 مجھ ناتواں پر مہربانی کرنا
 اسی خاطر میں گووند کے مگن گاتی ہوں ، اے ماں
 میرا کے پرہو گردھر ناگر
 میں کسی طرح انکے قدموں کی دھول پا جاؤں ، اے ماں

میرا کے پرہو گردھر ناگر ہیں ، یہ بات مہاراج کو سنا دی گئی ہے

۴۱

کوئی کچھ بھی کہے میرا تو دل کسی سے لگ گیا ہے
من موہن سے میرا دل ایسا لگا ہے جیسے سونے میں سُہاگا
جنم جنم سے سویا ہوا میرا من ست گرو کی آواز سن کر جاگ گیا ہے
ماں باپ، بیٹا، خاندان اور قبیلہ سب ایسے چھوٹ گئے ہیں جیسے ناگا ٹوٹ جانا ہے
میرا کے پرہو گردھر ناگر ، میری قسمت جاگ اٹھی ہے

۴۲

غریب پرور اب تو آنکھیں کھول کر دیکھو
میں کب سے حاضر ناظر کھڑی ہوں
میرا محبوب میرا دشمن ہو بیٹھا ہے
میں اب سبھی کو بری لگتی ہوں
ساجن نمہارے سوا میرا کوئی نہیں ہے
میری شکستہ کشتی سمندر میں پھنسی ہوئی ہے
دن کو چین نہیں آنا ، رات کو نیند نہیں آتی
میں اسی طرح کھڑی کھڑی سوکھ رہی ہوں
دل میں ہجر کا ایسا تیر لگا ہے
کہ ایک لمحے کے لئے نہیں بھول سکتی
پتھر کی اہلیا کو تو تم نے نجات دلا دی
جو جنگل میں پڑی ہوئی تھی
میرا میں ایسا کیا بوجھ ہے
وہ تو پتھر کی اہلیا سے بہت ہلکی ہے

۴۳

میرے من میں رام کا نام بسا ہے

رادھے رانی میری بانسری مجھے دے دو
 جس بانسری میں میری جان ہے وہی بانسری چوری چلی گئی
 اب میں کس سے گاؤں کس سے بجاؤں اور گایوں کو کیسے واپس بلاؤں
 کتہیا تم منہ سے گاؤ؛ ہاتھوں سے بچاؤ اور لائھی سے گایوں کو واپس
 لے آؤ
 میں تمہاری منت کرتا ہوں تمہارے پاؤں پڑنا ہوں، میری پیاری مجھ پر
 ترس کھاؤ

میرا کے پرہو گردھر ناگر، میری بانسری لیکر چھین لی

یہ لالچی آنکھیں لوٹ کر نہیں آسکتیں
 سر سے پیر تک اسکے جسم کے ایک ایک روئیں کا محسن دیکھتی ہیں
 اور حسرت سے للچاتی ہیں
 میں اپنے گھر پر کھڑی تھی اتنے میں ادھر سے موہن آ نکلے
 چہرے پر چاند کا نور تھا اور دھیرے دھیرے مسکرا رہے تھے
 تمام لوگ اور رشتے دار طرح طرح کی باتیں کر کے بار بار منع کرتے
 رہے
 بہ یقیناً آنکھیں کسی طرح روکے نہیں رکتیں، دوسرے کے ہاتھ بک گئی ہیں
 کوئی برا کہے یا بھلا سب مجھے قبول ہے
 میرا اپنے پرہو گردھر لال کے بغیر ایک پل نہیں رہ سکتی

چلو اسی دیس کو جہاں پریتم ملیں گے، اسی دیس کو چلو
 کہو تو پھول دار ساڑی رنگوا لوں، کہو تو جوگیا بانا پن لوں
 کہو تو اپنی مانگ موتیوں سے بھروالوں، کہو تو بال بکھیر لوں

میرا ہجر سے بے قرار ہے ، کوئی آکر مجھے میرے محبوب سے ملادے

۳۶

میری پیاری سکھی سنو ، پیا کے نہ ہونے سے مجھے ہول بری لگتی ہے
گاؤں ویران ہے ، سارا علاقہ ویران ہے ، سیج اور اٹاری بھی ویران ہے
پیا نے اپنی پیاری کو چھوڑ دیا ہے ، اور وہ پیا کے بغیر ہجر کی ماری
گھوم رہی ہے

اسی لئے میں اتنی ڈکھی ہوں
پردیس میں کوئی پیغام بھی نہیں پہنچتا ہے ، اس سے اور بھی اندیشہ بڑھتا ہے
(دن) گتے گتے میری انگلیوں کی ساری لکیریں کھس گئیں
آج بھی مُراری نہیں آئے
منجیرے ، ڈھول اور بانسریاں بچ رہی ہیں ، اکتارا بچ رہا ہے
بست کا موسم آگیا لیکن میرا شوہر گھر پر نہیں ہے ، اس وجہ سے جسم میں
بڑی تپش ہے

دل میں شام کا خیال کیا لاؤں
اب تو میرے اوپر مہربانی کرو اور غور سے میری بات سن لو
میرا کے پرہو مادھو تم مجھے مل جاؤ ، میں جنم جنم کی کنواری ہوں
میرے دل میں تمہارے دیدار کی او لگی ہے

۳۷

میں خط کیسے لکھوں لکھا ہی نہیں جانا
قلم اُٹھاتے ہی میرے ہاتھ کانپنے لگتے ہیں اور دل لرز اُٹھتا ہے
بات کہا چاہتی ہوں تو زبان پر بات نہیں آتی آنکھوں سے آنسو بہنے
لگتے ہیں
کس طرح میں تمہارے قدم پکڑ لوں گی ، یہ سوچ کر تمام جسم کانپ
اُٹھتا ہے

میرا کے پرہو گردھر ناگر تمام نکلیفوں کو بھلا دینگے

اب جاگو موہن پیارے
 ماں یسودا صبح دودھ بہات لائے بیٹھی ہیں اور پکار رہی ہیں
 آ میرے موہن ، آ میرے شیاہ ، مکھن اور مری کھا جا
 تمام گائیں ، گوالے اور گویاں جنگل کو جانے کے لئے کھڑی ہیں
 تمہارے بغیر ایک قدم نہیں چل سکتیں ، تمہارا راستہ دیکھتے دیکھتے تھک گئی ہیں
 داسی میرا شیاہ کی صورت اپنے دل میں رکھے 'جھک جھک کر دیکھتی ہے
 نہ تم سوئے ہو نہ میں تمہیں جگاتی ہوں ، یہ سب لوگ غلط فہمی کا شکار ہیں

رانا جی مجھے یہ بدنامی بہت میٹھی لگتی ہے
 کوئی چاہے میری برائی کرے چاہے بھلائی میں تو سب سے نرالی چال چلونگی
 پتلی گلی میں ست 'گرو ملے گئے' پھر میں کیوں اکیلی چلوں
 ست گرو سے بازیں کرتے ہونے مجھے کچھ بُرے لوگوں نے دیکھ لیا
 میرا کیے پرہو تو گر دھر ناگر ہیں ، یہ بُرے لوگ جا کر انگلیٹھی میں جلیں

ایک جوگی نے آکر مجھے ہدایت کی ہے
 میں اسکے ساتھ جاؤں گی یہاں نہیں رہونگی ، سادھوؤں کا بھیس بناؤں گی
 ساڑی کو پھاڑ کر پھینک دوںگی ، کتھری پہنوں گی ، اور اُپدیش لوں گی
 گنتے گنتے میری انگلیوں کی لکیریں گھس گئیں
 مالا اور مُدرا پہنوں گی ، اور ہاتھ میں بھیک کا پیالہ لے لوں گی
 جوگن بن کر میں اپنے راول (راجہ) کے ساتھ تمام دنیا کو تلاش کروں گی
 ہماری جان تو وہاں ہے ، یہ تو خالی خول ہے
 ماں باپ اور خاندان کیا ہے ، میں یہ رشتہ توڑ رہی ہوں
 میں نے اپنی پانچوں حسوں کو قابو میں کر لیا ہے ، میرا دامن کوئی نہیں پکڑنا

جو دیتا ہے وہی کھاتی ہوں
 میری اُنکی محبت بہت پرانی ہے
 انکے بغیر ایک پل نہیں رہ سکتی
 وہ جہاں بٹھائیگا وہیں بیٹھ جاؤں گی
 اور اگر بیچے گا تو بک جاؤں گی
 میرا کسے پرہو گردھر ناگر
 اُن پر بار بار قربان جاؤں

۳۱

رام نام کا رس پیو
 اے میرے دل رام نام کا رس پیو
 بُری صحبت چھوڑو اور اچھی صحبت میں بیٹھ کر
 روز ہری (بھگوان) کا چرچا سنو
 حوس، غصہ، غرور اور لالچ کو
 اپنے دل سے نکال دو
 میرا کسے پرہو گردھر ناگر
 انہیں کسے رنگ میں رنگ جاؤ

۳۲

اس برج میں کچھ عجب جادو دیکھا
 دہی والی سر پر مٹکی لے کر چلی
 اور سامنے تندجی کے بیٹے کرشن مل گئے
 وہ پیاری دہی والی دہی کا نام تو بھول گئی
 اور آواز لگانے لگی، کوئی شام سلونا لے او
 برنداؤں کی ہری بھری گلیوں میں من موہن نظر ملا گیا
 میرا کسے پرہو گردھر ناگر
 بہت خوبصورت، سانولے رنگ کے، سلاول اور ملیح ہیں

داسی میرا کہتی ہے کہ گردہر لال ہی میری کشتی سمندر کے پار لگانے والے ہیں ۔

۲۹

شیام مجھے نوکر رکھ لو
گردہر لال مجھے نوکر رکھ لو
میں تمہاری نوکری کرونگی، باغ لگاؤں گی، روز اٹھتے ہی تمہارا دیدار کروں گی
اور برنداؤں کی ہری بھری گلیوں میں تمہاری لایلا گاؤں گی
نوکری کے بدلے دیدار ملے گا، تمہارا نام چننا میری تنخواہ ہوگی
تمہارے تصور اور بھکتی کی مجھے جاگیر ملے گی، تینوں ہی بانیں اچھی ہیں
سر پر مور پنکھ کا مُکٹ، جسم پر پیلا کپڑا، گلے میں وجنتی کی
مالا پہنے

مُمرلی والا موہن برنداؤں میں گائیں چراتا ہے
روز میں ہرے بھرے باغ لگاؤں گی، بیج بیج میں کیاریاں رکھوں گی
اور کُسمُبی رنگ کی ساڑی پہن کر سانوریا کے درشن پاؤں گی
جوگی جوگ کرنے کو آیا، اور سنیا سی تپسیا کرنے کو
برنداؤں کے سادھو ہری کا بھجن کرنے کو آئے
میرا کہے پرہو بیحد گمبھیر ہیں، ہمیشہ دل میں صبر رکھو
پرہو آدھی رات کو پریم ندی کے کنارے درشن دینگے

۳۰

میں گردہر کے گھر جاتی ہوں
گردہر میرا سچا پریم ہے
جسکا حُسن دیکھ کر میرا دل خوش ہو جاتا ہے
رات ہوتے ہی میں اٹھ کر چلی جاتی ہوں
اور بھور ہوتے ہی اٹھ کر چلی آتی ہوں
رات دن اسکے ساتھ کھیلتی ہوں
اور ہر ممکن طریقے سے اسے رجھاتی ہوں
جو وہ پہنانا ہے وہی پہنتی ہوں

اپنے دل میں صبر اور سکون رکھوں گی
 اور اعتدال پر قائم رہوں گی
 جس کو سب لوگ نرنجن کہتے ہیں
 اس کا دھیان کروں گی
 لباس کے مانند اس جسم کو گرو کے گیان سے رنگوں کی
 من میں اس کی صورت بساؤں گی
 بڑی محبت سے پری کے گن گاؤں گی
 اور اس کے قدموں سے لپٹ رہوں گی
 اس جسم کو میں کینگری (باجہ) بنا کر
 زبان پر ہمیشہ اس کا نام رکھوں گی
 میرا کے پرہو گردھر ناگر
 میں سادھوں کے ساتھ رہوں گی

۲۸

اے میرے من تو پری کے پیر چھو
 خوبصورت، سکون پرور اور کامل جیسے نرم و نازک
 یہ قدم تینوں طرح کی تپش کو دور کرتے ہیں
 جن قدموں کو چھونے سے پرہلاہ کو
 اندر کا درجہ حاصل ہوا
 جن قدموں نے دُھرو کو
 اپنی سرپرستی میں رکھ کر اٹل بنایا
 جن قدموں نے پوری کائنات کو ناپ لیا تھا
 جب بھگوان وشنو نے بونے کا اوتار لیا تھا
 جن قدموں سے پرہو (رام) نے چھو لیا تھا
 تو گوتم کی بیوی (اہلیا) کو نجات مل گئی تھی
 جن قدموں سے گوپیوں کے ساتھ لایا کرنے والے کرشن نے
 کالے ناگ کو قابو میں کر لیا تھا
 جن قدموں نے گوردھن پہاڑ اُٹھا لیا تھا
 اور اندر کا غرور چور کر دیا تھا

تو میں تیری چونچ سونے سے منڈھا دوں اور تجھے اپنا سرتاج بنالوں
 میں اپنے پیارے کو خط لکھوں گی ، اے کوئے تو اسے لے جا
 اور میرے پیارے سے یہ کہہ دے کہ تیری ہجر کی ماری نے
 کھانا چھوڑ دیا ہے
 تمہاری داسی میرا بے چین ہے اور اس کے ہونٹوں پر تمہارا نام ہے
 اس سے جلدی آکر ملو ، وہ تمہارے بغیر زندہ نہیں رہ سکتی

۲۶

پیا کے نہ ہونے سے مجھے گھر آنکن کچھ بھی اچھا نہیں لگتا
 سکھی میں چراغ جلا کر کیا کروں
 میرے پیارے تو پردیس میں رہتے ہیں
 سونی سیج زہر جیسی لگتی ہے
 رو رو کر میری جان جاتی ہے
 اور آنکھوں میں نیند نہیں آتی ہے
 کب سے کھڑی میں راستہ دیکھ رہی ہوں
 رات دن ہجر میں پریشان رہتی ہوں
 کیا کہوں کچھ نہیں بتا
 دل یہ حد بے قرار ہے
 بری کا دیدار کب ہوگا

کوئی ایسا محبت والا ہے

جو فوراً یہ خبر لے آئے

کہ وہ وقت میرے لئے کب آئیگا

جب ہری ہنس کر مجھے گلے لگالیں
 اور میرا ان سے مل کر ہولی گانے

۲۷

میں بیراگن بن جاؤں گی
 جس بھیس سے میرا صاحب خوش ہوگا
 وہی بھیس میں اختیار کروں گی

ہجر کی آگ دل میں جل رہی ہے
 اسے تم آکر بجھا دو
 تمہیں کیسے چھوڑ دوں ، میری بے بسی دیکھو
 بس ہنس کے جلدی سے پاس بلالو
 میرا تو جنم جنم کی داسی ہے
 اس کے جسم سے اپنا جسم ملا دو

۲۴

شیام ، میری فریاد سنو
 میں تو تمہاری لونڈی بن گئی ہوں
 تمہارے دیدار کی دیوانی ہوں ، تن بدن میں ہجر کی آگ لگی ہے
 تمہارے فراق میں جوگن بن کر ساری، نگری میں پھیری لگاؤں گی
 بن بن ، کنج کنج ڈھونڈھوں گی
 بدن پر بھبھوت ، گلے میں مرگ چھالا ، اپنے اس تن کو جلا کر راکھ
 کر رہی ہوں
 میرے لافانی مالک ، کیا اب بھی نہیں ملو گے ،
 میں جنگل جنگل گھوم رہی ہوں

اور آنسو بہا رہی ہوں
 جب میرا کو گردھر مل گئے تو دکھ مٹ گیا سکھ پھیل گیا
 جسم اور جان کو آرام آگیا بار بار پیدا ہونے کا چکر ختم ہوا
 میں قدموں کی کنیز بن گئی

۲۵

اے پیہے پیا کا راگ مت الاپ
 اگر اس ہجر کی ماری نے تیری فریاد سن لی تو تیرے پنکھ مروڑ دے گی
 اور تیری چونچ کاٹ کر زخم پر نمک چھڑک دے گی
 پیا میرے ہیں اور میں پیا کی ہوں تو پیا پیا کہنے والا کون ہے
 پھر بھی تیرا شبد سہانا ہے ، اگر آج پیا مل جائیں

میں اپنے مالک کے احترام میں اُٹھ کھڑی ہوئی
 لیکن جاکتے ہی کیا دیکھا کہ وہ کھو گئے
 پھر میں اُنہیں ڈھونڈھ نہ پائی
 اور سکھیاں سو کے اپنے پیارے کو گنوا دیتی ہیں
 دیکھ سکی میں نے اُنہیں جاگ کے گنوا یا ہے
 میرا کے پرہو گردھر ناگر ہیں
 اگر شام گھر آجائیں تو سکھ ہی سکھ ہے

۲۲

رام سے ملنے کا سامان دیکھو میری سکھی
 میرے دل میں آرتی جاگ اٹھی ہے (چراغ جل رہے ہیں)
 آرزو بیدار ہو گئی ہے
 تڑپ تڑپ کر برا حال ہو گیا ہے
 میرا کلیجہ جدائی کے تیر سے چھدا ہوا ہے
 میں ہر روز اپنے محبوب کی راہ دیکھتی ہوں
 پل بھر کو بھی پلک سے پلک نہیں لگتی
 میں بس دن رات اپنے محبوب کو پکارتی رہتی ہوں
 کوئی دوسرا دھیان آتا ہی نہیں
 ہجر کا سیاہ ناگ کلیجے کو ڈس رہا ہے
 اور زہر کی لہر سارے جسم میں دوڑ رہی ہے
 میری آرزو کے چراغوں کو قبول کرو مرے مالک
 اور جلد سے جلد آ ملو
 میرا بے چین اور بے تاب ہے
 اپنے پیارے کے عشق نے اس کی یہ حالت بنادی ہے

۲۳

تمہارے لئے چین آرام سب کچھ چھوڑ دیا
 اب مجھے کیوں ترسا رہے ہو

اب اپنی چوڑیاں توڑ دوں گی اور مانگ مٹا لوں گی
 اور آنکھوں سے کاجل دھو ڈالوں گی
 ہر پل مجھے ہجر کا درد ستا رہا ہے اور ایک لمحے کو قرار نہیں ہے
 میرا کسے پرہو لافانی ہری ہیں ، کوئی اُن سے مل کر کبھی نہ بچھڑے

۱۹

میں بادل دیکھ کر ڈر گئی، اے شام میں بادل دیکھ کر ڈر گئی
 کالی کالی پیلی پیلی گھٹا گھر کے آئی اور برس گئی
 اب جدھر جاتی ہوں پانی ہی پانی ہے، ساری دھرتی ہری ہو گئی ہے
 میں وہ ہوں جس کا پیارا پردیس میں ہے
 اور میں اس کے انتظار میں گھر سے باہر کھڑی ہوئی بھیگ رہی ہوں
 میرا کسے پرہو لافانی ہری ہیں، اُن سے سجا پیار کرنا

۲۰

ساون کی بدلی برس رہی ہے ،
 ہاں ساون کی ، اور دل کو بھلی لگ رہی ہے
 ساون میں دل تڑپ اُٹھتا ہے
 کیونکہ ہری کے آنے کی بھنک سنائی دیتی ہے
 بادل چاروں طرف سے امڈنے لگے ہیں
 اور بجلی چمک چمک کر تیز بوجھار کی خبر سُنا رہی ہے
 تنہی تنہی بوندوں کا مینہ برسنے لگا ہے
 اور ٹھنڈی اور سوندھی خوشبو کی ہوا چل رہی ہے
 میرا کسے پرہو گردھر ناگر ہیں
 یہ اُن کی آمد کے پر مسرت گیت گانے کا وقت ہے

۲۱

میں پلنگ پر سو رہی تھی، آنکھ لگتے ہی میرے پیا آگئے

ہر کوس پر پہرا بیٹھا ہے ، اور ہر موڑ پر ڈاکو موجود ہیں
 تم نے یہ کیسی مصیبت کھڑی کردی ہے ، میرا گاؤں کتنی دور بسایا ہے
 میرا کے پرہو تو گردھر ناگر ہیں ، یہ ست کرو نے بتا دیا ہے
 جگ جگ کی بچھڑی میرا کو اب اپنے گھر میں لے جاؤ

۱۶

اگر میں یہ جانتی کہ پیار کرنے میں اتنا دکھ ہوتا ہے
 تو شہر شہر ڈھنڈھورا بیٹھی کہ کوئی پیار نہ کرے
 تمہاری راہ دیکھتی رہتی ہوں اور راستہ صاف کرتی رہتی ہوں
 میرا کے پرہو کب ملو گے ، تم سے مل کر ہی چین ملے گا

۱۷

ارے کوئی کم دے کہ پرہو آرہے ہیں
 کوئی تو دل خوش کرنے والی خبر سنا دے
 نہ آپ آئے ہیں ، نہ خط بھیجتے ہیں
 کچھ ایسی عادت پڑ گئی ہے کہ مجھے للچاتے رہتے ہیں
 یہ دونوں آنکھیں بھی میرا کہا نہیں مانتیں
 کیا کروں کچھ بس نہیں چلتا
 پنکھ بھی نہیں ہیں کہ ان کے پاس اڑ کر پہونچ جاؤں
 میرا کے پرہو کب ملو گے ، میں تمہارے دانوں پیچ میں پھنس گئی ہوں

۱۸

مجھے نہیں معلوم کہ اپنے پیارے سے کیسے ملوں
 میرے ساجن آئے اور آنگن ہی سے واپس ہو گئے
 اور میں بد قسمت (ابھانگن) سوتی رہ گئی
 اپنے کپڑے پھاڑ کر گلے میں گروا لباس ڈال لوں گی
 اور بیراگن بن کے رہوں گی

تمہارے دیدار کے بغیر تمہاری سجنی کی حالت ہے
 رات دن بے کل اور پریشان رہتی ہوں ، اور جدائی گلیجے کو
 کھائی جا رہی ہے
 دن کو بھوک نہیں ، رات کو نیند نہیں ، حد یہ ہے کہ اب فریاد بھی
 ہونٹ تک نہیں آ پانی
 کیا کہوں ، کچھ کہا نہیں جاتا ، بس اب مل کے دل کی آگ بجھا دو
 اے روح میں بسنے والے ، اب کیوں ترسا رہے ہو ، رحم کرو
 اور میرے پاس آ جاؤ
 تمہاری جنم جنم کی داسی میرا تمہارے پاؤں پڑتی ہے

۱۴

اب نباہ کرنا پڑے گا
 میری بانہ پکڑی ہے تو اس کی لاج رکھنی پڑے گی
 سیاہ میرے ، میں تمہاری پناہ میں ہوں
 تم ہی بگڑے کام بناؤ گے
 دنیا کا سمندر بے کراں ہے ، اس میں تم ہی جہاز ہو
 تم بے سہاروں کا سہارا ہو ، تم ہی جگت گرو ہو ، تمہارے بغیر
 ہر کام بیکار ہو جاتا ہے
 ہر زمانے میں اپنے بھگتوں کا درد تم ہی نے مٹایا ہے ، تم ہی نے دنیا کو نجات دی ہے
 تمہاری میرا تمہارے قدموں میں پناہ لے رہی ہے ، مہاراج اس کی لاج رکھ لو

۱۵

چاروں راستے بند ہیں ، میں ہری سے ملنے کیسے جاؤں
 راہ اونچی نیچی اور رپٹیلی ، پاؤں ڈبھرتا ہی نہیں ہے
 سوچ سوچ کے ، سنبھال سنبھال کے قدم رکھتی ہوں لیکن پھسل جاتا ہے
 میرے پیارے کا محل کچھ ایسا اونچا نیچا بنا ہے کہ میں اس کی
 سیڑھیوں پر چڑھ نہیں پا رہی ہوں
 میرا پیارا دور ہے اور راستہ تنگ ہے اور ڈگمگایا جا رہا ہے ، جھکولے کھا رہا ہے

اپنے پیارے کے ہلنگ پر جا کر لیٹ جاؤں گی ، پھر دیکھنا میرا
ہری کے رنگ میں رچ جائے گی

۱۱

اے نند لال ، میری آنکھوں میں آسو
کیسی موہنی مورت ، کیسی سانولی صورت ہے ، آنکھیں کئی بڑی بڑی ہیں
تمہارے چرنوں پر نغموں کے رس سے بھری ہوئی بانسری سچی ہوئی
ہے اور سینے پر وجینتی مالا ہے
کمر کے گرد چھوٹی چھوٹی گھنٹیاں سچی ہوئی ہیں ، اور پیروں میں
بندھے ہوئے نو پُر میٹھی آواز سے بول رہے ہیں
اے میرا کے پرہو تم سنتوں کو سکھ پہنچانے ہو
اور اپنے بھگتوں کے محافظ ہو ۔

۱۲

مجھے اپنے گرو کے چرنوں کی لٹک لگ گئی ہے
ان قدموں کے بغیر کچھ اچھا نہیں لگتا
یہ دنیا تو خوابوں کی پرچھائیاں ہے
دنیا کا سمندر سوکھ چکا ہے
اب مجھے تیرنے کی فکر نہیں ہے
میرا کے پرہو گردھر ناگر ہیں
ہائے میری آنکھوں کی شامت آ گئی
(نوٹ : یہ معنی بھی ہو سکتے ہیں کہ میری آنکھیں الٹ گئی ہیں یعنی دل
کی طرف پھر گئی ہیں جہاں گردھر گوپال براجمان ہیں ۔)

۱۳

پیارے آؤ کے درشن دو (اپنا دیدار کرنے دو) تمہارے بغیر جینا دو بھر ہے
جیسے بغیر پانی کے پھل ، بغیر چاند کے رات اداس ہوئی ہے ویسے ہی

کوئی کہتا ہے کہ میں نے چھپ کے لیا کوئی کہتا ہے کہ چوری کی ہے
 لیکن میں نے تو ڈنکے کی چوٹ پر اسے خریدنا ہے
 کوئی کہتا ہے وہ کالا ہے ، کوئی کہتا ہے کہ گورا ہے
 لیکن میں نے تو آنکھیں کھول کے لیا
 کوئی کہتا ہے کہ ہلکا ہے ، کوئی کہتا ہے کہ بھاری ہے
 مگر میں نے ترازو میں تول کے لیا ہے
 میں نے اپنے جسم سے زیور اتار دینے ہیں اور بازو بند کھول دیا ہے
 میرا کے پرہو گردھر ناگر ہیں ، یہ قول قرار تو پچھلے جنم میں ہی
 ہو چکا ہے

۹

میں اپنے سیاہ کے ساتھ سچی ہوں (وفادار ہوں)
 اے سچی اب کیسی شرم و حیا ، میں تو سب کے سامنے اس کے لئے
 ناچ رہی ہوں
 دن کو نہ بھوک لگتی ہے نہ چین ملتا ہے ، اور رات کو نیند نہیں آتی
 عشق کا تیر دل کو چھید کر نکل گیا
 سارا خاندان میرے گرد جمع ہے اور شہد کی مکھیوں کی طرح
 بھنہنا رہا ہے
 میرا تو گردھر لال کی داسی ہے ، اب دنیا کی ہنسی بے معنی ہے

۱۰

میں تو گردھاری کے سامنے ناچوں گی
 اپنے پیارے کو ناچ ناچ کے رچھاؤں گی اور اس کے عشق
 کا امتحان کروں گی
 بیروں میں محبت کے گھنگرو باندھوں گی اور تن پر یادوں کا لباس
 پہنوں گی
 دنیا کی شرم و حیا اور خاندان کی عزت ، ان میں سے کسی کا
 خیال نہیں کروں گی

میں تارے گن گن کر رات گزارنی ہوں، آخر سکھ کی گھڑی کب آنے گی
میرا کے مالک گردھر ناگر ہیں وہ مل جائیں تو چین آنے

۶

دیدار کے بغیر آنکھیں دکھنے لگی ہیں
میرے پیارے جب سے تم بچھڑے ہو کبھی چین نہیں ملا،
تمہارا نام سن کر دل کانپ اٹھتا ہے، اور فریاد میٹھی لگتی ہے
ٹکٹکی باندھے تمہاری راہ دیکھ رہی ہوں، ہجر کی رات سب سے لمبی
ہوتی ہے

میری سجنی آخر ہجر کا دکھ کس کو سناؤں
میرا کے پرہو کب ملو گے، کب دکھ مٹاؤ گے اور کب سکھ دو گے

۷

اے سکھی میری نیند کھو گئی ہے
ساری رات اپنے پیارے کی راہ دیکھ کر گزاری ہے
تمام سہلیوں نے مل کر نصیحت کی مگر میں نے ایک نہ ماننی
بغیر دیکھے چین نہیں پڑتا، اب تو کچھ کرنے کی جی میں لہانی ہے
بدن سوکھ گیا ہے، بے چینی بڑھ گئی ہے، اور ہونٹ صرف اپنے پیارے
کا نام لے رہے ہیں
میں اندر ہی اندر ہجر کی آگ میں جل رہی ہوں اور اُسے میرے درد
کی خیر بھی نہیں
جیسے چانک بادلوں کو آواز دیتا ہے، جیسے پھولی پانی کے لئے تڑپتی ہے
اسی طرح ہجر کی ماری میرا بے چین ہو رہی ہے اور اپنی سُدھ بدھ
بھول چُکی ہے

۸

سنو بھائی میں نے رمیا مول لیا ہے

میں نے خاندانی غرور ترک کر دیا ہے، میرا کون کیا بگاڑ سکتا ہے
 سنتوں کے ساتھ، یٹھ، یٹھ کر دنیاوی لاج کھودی ہے
 رنگین چنری اتار پھینکی ہے اور موٹی اور کھردری لوٹی اوڑھ لی ہے
 موتیوں اور مونگوں کے ہار اتار کر جنگلی پھولوں کی مالا پہن لی ہے
 آنسوؤں کے پانی سے سینچ سینچ کر پریم کی بیل بڑھائی ہے
 یہ بیل چاروں طرف پھیل گئی ہے اور اب اسمیں سکھ اور آنند کے پھل آئیں گے
 میں نے بڑے پیار سے دودھ بلویا ہے
 مکھن نکال لیا ہے صرف چھاجھ، رہ گیا ہے جس کا جی چاہے پی لے
 میں بھگتی کے کام کے لئے پیدا ہوئی تھی، لیکن دنیا نے مجھے گھیر لیا
 اے گردھاری میرا تمہاری داسی ہے، تمہیں بچا سکتے ہو۔

۴

رانا نے پٹارے میں سانپ بھیجا
 میرا نے ہاتھ ڈال دیا
 وہ نہا دھو کر پاک صاف ہو کر دیکھ رہی آہی
 اور اُسے سالگ رام مل گئے
 رانا نے زہر کا پیالہ بھیجا اور وہ امرت بن گیا
 وہ نہا دھو کر، پاک صاف ہو کر پی رہی تھی اس لئے امر ہو گئی
 رانا نے میرا کے سونے کے لئے کیلوں کی سیج بھیجی
 شام ہوئی تو میرا اس پر یوں لیٹ گئی جیسے پھول بجھے ہوں
 میرا کے مالک ہمیشہ مدد کرتے ہیں اور اسے مصیبتوں سے بچاتے ہیں
 میرا تو گردھاری پر قربان ہو چکی ہے اور بھگتی کے نشے میں
 چور گومتی رہتی ہے

۵

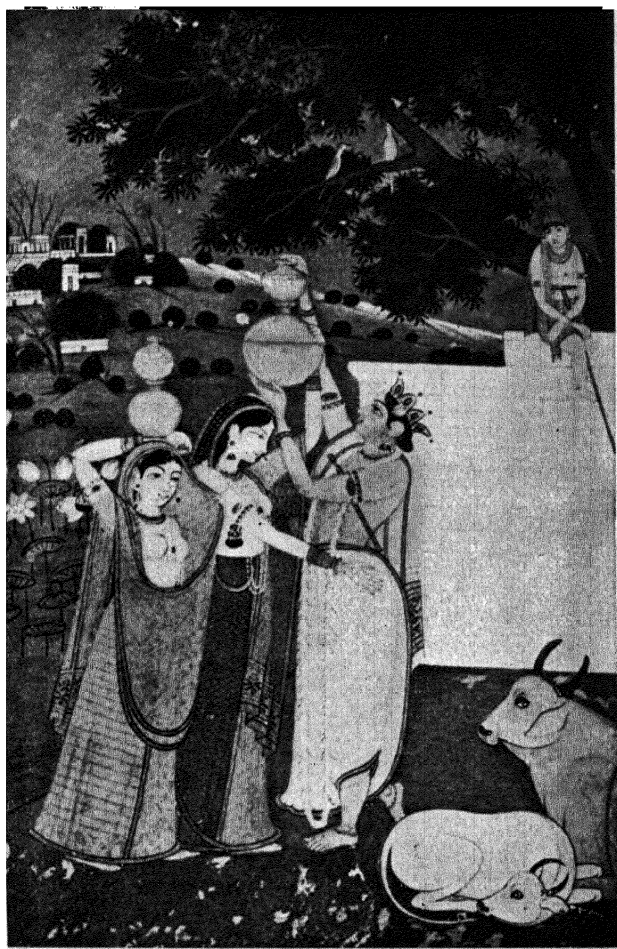
اے سکھی میں ہجر کی ماری جاگ رہی ہوں اور ساری دنیا سو رہی ہے
 ایک ورہن رنگ محل میں بیٹھی موتیوں کے ہار پرو رہی ہے
 اور ایک ورہن میں نے ایسی بھی دیکھی جو آنسوؤں کی مالا بنا رہی ہے

گردھر گوبا کے سوا اور کون ہے جسے میں اپنا کہوں
 اُن کے لئے ماں ، باپ ، عزیز اقارب سب کو چھوڑ دیا
 اور سادھوؤں کے ساتھ بیٹھ بیٹھ کر اپنی دنیاوی (ظاہری)
 شرم و حیا بھی ترک کر دی
 جب کوئی سنت دکھائی دیا تو دوڑ کر اس کے ساتھ ہولی ،
 اور جب دنیا سامنے آئی تو رونے لگی
 میں نے محبت کے آنسوؤں سے عشق کی امر بیل کو سینچا ہے
 سنتوں کو سر پر بٹھایا اور اس کے پاک نام کی مالا دل جیتی رہی ہوں
 اب تو بات پھیل چکی ہے اور میرا راز سب کو معلوم ہو گیا ہے
 میرا تو گردھر لال کی داسی بن چکی ہے ، جو ہونا ہے ہو رہے گا

اے سکھی ، میں تو عشق میں دیوانی ہو گئی ہوں ، درد کوئی نہیں جانتا
 ہماری سیج سولی پر ہے ، بھلا نیند کیسے آسکتی ہے
 اور میرے محبوب کی سیج آسمان پر ہے ، آخر کیسے ملاقات ہو
 گھائل کی حالت تو گھائل ہی جان سکتا ہے ، جس نے کبھی زخم کھایا ہو
 جوہری کے جوہر کو جوہری ہی پہچان سکتا ہے ، بشرطیکہ کوئی جوہری ہو
 درد سے بے چین ہو کر جنگل جنگل ماری پھر رہی ہوں ، اور کوئی معالج نہیں ملتا
 میرے مالک ، میرا کا درد تو اس وقت مٹے گا جب سلونے سانولے
 کرشن اس کا علاج کریں گے

گردھر گوبال کے سوا کون ہے جسے میں اپنا کہوں
 میرے بچے وہی ہیں جن کے سر پر مور کے پروں کا تاج ہے
 باپ ، ماں ، بھائی ، عزیز کوئی میرا نہیں ہے

ترجمہ



मीरा व्याकुल विरहिणी रे पिया दरसण दीज्यो मोड़ ॥

१५२

राम मिलण के काज सखी मेरे आरति उर में जागी री ।
तलफत तलफत कल न परत है विरह बाण उर लागी री ॥
जिस दिन पंथ निहारुं पीव को पलक न पल भरि लागी री ।
पीव पीव मैं रटूँ रात दिन दूजो सुधि बुधि भागी री ॥
विरह भुवंग मेरो डस्यो है कलेजो लहरि हलाहल जागी री ।
मेरी आरति मेटि गोसाईं आइ मिलौ मोहि सागी री ।
मीरा व्याकुल अति उकलाणी पिया की उमंगि अति लागी री ॥

میرا بیاکل ورہنی رے پیا درسن دیجو موئی

۱۵۲

رام ملن کے کاج سکھی میرے آرئی اُر میں جاگی ری
تلپت تلپت کل نہ پرت ہے ورہ بان اُر لاگی ری
نس دن پنتھ نہاروں پیو کو پلک نہ پل بھر لاگی ری
پیو پیو میں رٹوں رات دن دوجو سُدھ بُدھ بھاگی ری
ورہ بُھونگ میرو ڈسیو ہے کلیجو لہری ہلاہل جاگی ری
میری آرئی میٹی گُستائیں آئی ملو موہی ساگی ری
میرا بیاکل اتی اُکلانی پیا کی اُمنگ اتی لاگی ری

नातो नाम का रे मोंसो तनक न तोड़यो जाइ ।
 पानाँ ज्युँ पीली पड़ो रे लोग कहें पिंड रोग ॥
 छाने लाँघण मैं किया रे राम मिलन के जोग ।
 बाबल बैद बुलाइया रे पकड़ दिखाइ म्हाँरि बाँह ॥
 मूरिख बैद मरम नहिं जागै करक कलेजा माँह ।
 जा बैदा घर आपणे रे मेरो नांव न लोइ ॥
 मैं तो दाधी बिरह की रे तूँ काहे को औषद देइ
 मांस गले गल छीजिया रे करक रखा गल आहि ॥
 आँगलिया रो मूदड़ी म्हाँरे आवण लागो बाँहि ॥
 रहो रहो पापी पपीहरा रे पिव को नाम न लेइ
 जे कोई विरहणि साम्ले पिव कारण जिव देइ
 खिण मंदिर खिण आँगणे रे खिण खिण ठाढ़ो हाँइ ।
 घायल ज्युँ घूमूँ सदा री म्हारी बिथा न बूझै कोइ ॥
 काढ़ि कलेजो मैं घरँ रे कीवा तू ले जाइ ।
 ज्याँ देसाँ म्हारा पिव बसै वै देखै तू खाइ ॥
 म्हाँरे नातो नांव वो रे और न नातो कोइ ।

ناتو نام کارے مونسوں تنک نہ توریو جائی
 پاناں جوں پیل پڑو رے لوگ کہیں پنڈروگ
 چھانے لاگن میں کیارے رام ملن کے جوگ
 بابل یید بُلا تیارے پکڑ دکھائی مہاری بانہ
 مورکھ یید مرم نہیں جانے کرک کلیجہ مانہ
 جا پیدا گھر اپنے رے میرو ناؤں نہ لیو
 میں تو دادھی برہ کی رے تو کاپے کو اوشد دھیشی
 مانس گلے گل چھجیارے کرک رہیا گل آہی
 انگلیا رو مودڑو مہارے آون لاگو با نہی
 رہو رہو پاپی پیہرا رے پیو کو نام نہ لیشی
 جے کوئی ورہنی ساملے پیو کارن جیو دیو
 کھن مندر کھن آنکھے رے کھن کھن ٹھاڑی ہوئی
 گھائل جیوں گھوموں سداری مہاری بتھانہ بوجھے کوئی
 کاڑھی کلیجو میں دھروں رے کوا تو لے جائی
 جیاں دیساں مہارو پیو بسے وے دیکھو تو کھائی
 مہارے ناتو ناؤں کورے اور نہ نا تو کوئی

पिया बिना मेरी सेज अलूनी जागत रैण बिहावै ॥
 पिया कब रे घर आवै ।
 दादुर मोर पपीहा बोलै कोयल सबद सुणावै ।
 घुंमट घटा ऊलर होइ आई दामिन दमक डरावै ।
 नैना भर लावै ।
 कहा करै कित जाऊँ मेरी सजनी वेदन कूण बुतावै ।
 बिरह नागण मोही काया डसी है लहर जिव जावै ।
 जड़ी घस लावै ।
 को है सखी सहेली सजनी पिया कू आन मिलावै ।
 मीरा कूँ प्रभु कबरे मिलोगे मन माँहन मोहि भावै ।
 कबै हँस कर बतलावै ।

१५०

नीद लड़ी नहिं आवै सारी रात किस बिधि होइ प्रभात ॥
 चमक उठी सपने सुध भूली चन्द्रकला न सोहात ।
 तलफ तलफ जिव जाय हमारो कब रे मिलो दिनानाथ ।
 भइहूँ दिवानी तन सुध भूली कोई न जानी म्हाँरी बात ।
 मीरा कहै बातों सोइ जानै मरण जीवण उण हाथ ॥

پیا بن میری سیج الونی جاگت رین بہاوے
 پیا کب رے گھر آوے
 دادُر مور پیہا بولے کوئل سَبَد سناوے
 گُھمٹ گھٹا اولر ہوئی آئی دامنِ دمک ڈروارے
 نینا جھر لاوے
 کہا کروں کت جاؤں مری سجنی ویدن کُوں بتاوے
 پرہ ناگن موہی کایا ڈسی ہے ہر جیو جاوے
 جڑی گھس لاوے
 کوہے سکھی سہیلی سجنی پیا کُوں آن ملاوے
 میرا کُوں پرہو کب رے ملو گے من موہن موہی بہاوے
 کبے ہنس کر بتلاوے

۱۵۰

نیندل رُی نہیں آوے ساری رات کس بدھی ہوئی پر بہات
 چمک اُٹھی سپے سُدھ بھولی چندر کلا نہ سوہات
 تلپھ تلپھ جیو جائے ہمارو کب رے ملو دینا ناتھ
 بھی ہوں دوانی تن سُدھ بھولی کوئی نہ جانی مہاری بات
 میرا کہے باتاں سوئی جائے مرن جیون اُن ہاتھ

तुम दरसण की आस रमैया कब हरिदरस दिखावै ॥
 चरण कैवल की लगन लगी नित बिन दरसण दुखपावै ।
 मीरा कूँ प्रभु दरसन दीज्यो आणंद बरण्यै न जावै ॥

१४८

सखी मेरी नींद नसानी हो ।
 पिया के पंथ निहारत सिगरी रैण बिहानी हो ॥
 सब सखियन मिल सीस दर्ई मन एक न मानी हो ।
 बिन देख्याँ कल नाहिं पड़त जिय ऐसी ठानी हो ॥
 अंगि अंगि व्याकुल भई मुख पिय पिय बानी हो ।
 अंतर बेदन विरह की वह पीड़ न जानी हो ॥
 ज्यूँ चातक घन कूँ रटै मछरी जिमि पानी हो ।
 मीरा व्याकुल विरहिणी सुध-बुध बिसरानी हो ॥

१४९

रमया बिन नींद न आवै ।
 नींद न आवै विरह सतावै प्रेम की आँच दुलावै ॥
 बिन पिया जोत मन्दिर अधियारो दीपक दाय न आवै ।

تم درسن کی آس رمیا کب ہری درس دکھاوے
چرن کنول کی لگن لگی نیت بن درسن دکھ پاوے
میرا کوں پرہو درسن دیجو آند برنیوں نہ جاوے

۱۴۸

سکھی میری نیند نسانی ہو
پیا کے پنتھ نہارت سگری رین بہانی ہو
سب سکھین مل سیس دئی من ایک نہ مانی ہو
بن دیکھیا کل ناہیں پڑت جیا ایسی ٹھانی ہو
انگ انگ یاکل بھئی مکھ پیا پیا بانی ہو
انتر ییدن ورہ کی وہ پیڑ نہ جاسی ہو
جیوں چانک گھن کون رٹے پھری جمی پانی ہو
میرا ییاکل ورہنی سدھ بُدھ بسرانی و

۱۴۹

ر سیا بن نیند نہ آوے
نیند نہ آوے ورہ ستاوے پریم کی آنچ ڈھلاوے
بن پیا جوت مندر اندھیارو دپک دائے نہ آوے

सबके जिन टाला दे जावो सिर पर राखू विराज ॥
 म्हें तो जनम जनम की दासी थें म्हारा सिरताज ।
 पावणड़ा म्हाँ के भलौं ही पधारी सब ही सुधारण काज ॥
 म्हें तो बुरी छौं थांकि भली छै घणेरी तुम हो एक रसराज ।
 थांने हम सबहिन की चिंता तुम सबके हो गरिब निवाज ॥
 सबके मुकट सिरमनि सिर पर भानूँ पुण्य की पाज ।
 मीरा के प्रभु गिरधर नागर बाँह गहे की लाज ॥

१४६

प्रभु जी थें कहाँ गया नेहड़ी लगाय ।
 छोड़ गया बिस्वास संघाती प्रेम की बाती बराय ॥
 बिरह समन्द में छोड़ गया छो नेह की नाव चलाय ।
 मीरा के प्रभु कब रे मिलोगे तुम बिन रह्याइ न जाय ॥

१४७

परम सनेही राम की निति ओलूँ री आवै ।
 राम हमारे हम हैं राम के हरि बिन कछुन सुहावै ॥
 आवण कह गये अजँ न आये जिवड़ो अति अकुलावै ॥

اب کے جن ٹالا دے جاؤ سر پر راکھوں وراج
 مہے تو جنم جنم کی داسی تھے مہارا سرتاج
 پاؤں ژا کے مہاں کے بھلا ہی پدھاری سب ہی سُدھارن کاج
 مہیں تو بری چھان تھیں کے بھلی چھے گھنیری تم ہی اک رس راج
 تھانے ہم سب پن کی چتا تم سب کے ہو گریب نواج
 سب کے مُکٹ سرومنی سر پر بھانوں پُستہ کی پاج
 میرا کے پرہو گردھر ناگر بانہ گہے کی لاج

۱۴۶

پر بھوجی تھیں کہاں کیا نیہڑی لگائے
 چھوڑ گیا بسواس سنگھاتی پریم کی باتی براے
 برہ سمند میں چھوڑ گیا چھونیہ کی ناؤ چلائے
 میرا کے پرہو کبرے ملو گے تم بن رہیو نہ جائے

۱۴۷

پر م سنیہی رام کی نئی اولوں ری آوے
 رام ہمارے ہم ہیں رام کے ہری بن کچھو نہ سُہاوے
 آون کہ گتے اجھوں نہ آئے جوڑواتی اکُلاوے

नंदनंदन बिलमाई बदरा ने घेरी माई ।
 इत धन गरजे उत धन लरजे चमकत बिज्जू सवाई ।
 उमड़ उमड़ चहुँ दिसि से आया पवन चलै पुरवाई ॥
 दादुर मोर पपीहा बोलै कोयल सबद सुणवाई ।
 मीरा के प्रभु गिरधर नागर चरणकमल चितलाई ॥

१४४

सुनी हो मैं हरि आवन की आवाज ।
 म्हाल चढ़े चढ़ि जोऊ मेरी सजनी कब आवैं महाराज ।
 दादुर मोर पपइया बोलै कोइल मधुरे साज ।
 उमंग्यो इन्द्र चहुँ दिसि बरसै दामिण छोड़ी लाज ॥
 धरती रूप नवा नवा धरिया इन्द्र मिलन कै काज ।
 मीरा के प्रभु हरि अविनासी बेगि मिलो महाराज ॥

१४५

म्हारै घर होता जाज्यो राज ।

تند نندن پلمائی بدرا نے گھیری مائی
 اِت گھن گرجے اُت گھن لرجے چمکت بےجو سوائی
 اُمڑ اُمڑ چھو دسی سے آیا پون چلے پروائی
 داڈر مور پپیہا بولے کوئل سبد سنائی
 میرا کے پرہو گردھر ناگر چرن کمل چت لائی

سُنی ہو میں ہری آون کی آواج
 محل چڑھے چڑھی جوؤ میری سجنی کب آویں مہاراج
 داڈر مور پپیہا بولے کوئل مدھرے ساج
 اُمگئیو اندر چھو دسی برسے دامن چھوڑی لاج
 دھرتی روپ نوا نوا دھریا اندر ملن کے کاج
 میرا کے پرہو ہری آبناسی بیگ ملو مہاراج

مہنارے گھر ہوتا جاجیوراج

सास बुरी अरु ननद हठीली लरि लरि दे मोहे गारी हे माय ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर चरण कमल की वारी हे माय ॥

१४१

कोई स्याम मनोहर लो री, सिर धरें मटुकिया डोलै ।
दधि को नाम बिसरि गई ग्वालिन हरि ल्यो, हरि ल्यो बोलै ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर चेरी भई बिन मोलै ।
कृष्णा रूप छकी है ग्वालिनि औरहि और औरै बोलै ॥

१४२

होली खेलत हैं गिरधारी ।
मुरली चंग बजत डफ न्योरो संग जुवति ब्रजनारी ।
चंदन केसर छिरकत मोहन अपने हाथ बिहारी ।
भरि भरि मूठी गुलाल लाल चहुँ देत सवन पर डारी ।
छैल छबीले नवल कान्हा संग स्यामा प्राण पियारी
गावत चार धमार राग तहँ दै दै कल करतारी ।

ساس بُری اُرُند ہٹھیلی لری لری دے موہے گاری ہے مائے
میرا کے پر بہو گردھر ناگر چرن کمل کی واری ہے مائے

۱۴۱

کوئی سیام منوہر لو ری، سر دھر یں مٹکیا ڈولے
ددهی کو نام بسری گئی گوالن ہری لیو، ہری لیو بولے
میرا کے پر بہو گردھر ناگر چیری بھئی بن مولے
کرشن روپ چھکی ہے گوالن اور ہی اور اورے بولے

۱۴۲

ہولی کھیلت ہیں گردھاری
مُری چنگ بجت ڈپہ نیارو سنگ جُووت برج ناری
چندن کیسر چھرکت موہن اپنے ہاتھ بہاری
بھری بھری موٹھی گُلال لال چھو دیت سون پے ڈاری
چھیل چھیلے نول کانھ سنگ سیاما پران پیاری
گاوت چار دھمار راگ تنہ دے دے کل کر تاری

आवत मोरी गलियन में गिरधारी मैं तो छुप गई लाज की मारी ।

कुसुमल पाग केसरिया जामा ऊपर फूल हजारी ।

मुकुट ऊपर छत्र बिराजे कुंडल की छवि न्यारी ॥

केसरी चीर दरयाई को लहँगो ऊपर अंगिया भारी ।

आवत देखो किसन मुरारी छुप गई राधा प्यारी ॥

मोर मुकुट मनोहर सोहे नथनी की छवि न्यारी ।

गल मोतिन की माल विराजै चरण कमल बलिहारी ॥

ऊभी राधा प्यारी अरज करत है सुणजे किसन मुरारी ।

मीरा के प्रभु गिरधर नागर चरण कमल पर वाली ॥

आज अनारी ले गयो सारी बैठ कदम की डारी हे माय ।

म्हारे गल पड़्या गिरधारी हे माय, ॥

मैं जल जमुना माँ भरन गई थी आ गयो कृष्ण मुरारी हे माय ।

ले गयो सारी अनारी म्हारी जल मैं ऊभी उधारी हे माय ।

सखी सयानी मोरी हँस्त है हँसि-हँसि दे मोहि तारी हे माय ।

آوت موری گلین میں گردھاری میں تو چھپ گئی لاج کی ماری
 کُسمَل پاگ کیسریا جاما اوپر پھول ہجاری
 مُکٹ اوپر چھتر براجے کُنڈل کی چھوی نیاری
 کیسری چیر دریائی کو لہنگو اوپر انگیا بھاری
 آوت دیکھو کسن مُراری چھپ گئی رادھا پیاری
 مور مُکٹ منوہر سوہے تہنی کی چھوی نیاری
 گل موتن کی مال وراجے چرن کمل بلیہاری
 اوبھی رادھا پیاری آرج کرت ہے سُنجے کسن مراری
 میرا کہے پرہو گردھر ناگر چرن کمل پرواری

آج اناری لے گیو ساری بیٹھ کدم کی ڈاری ہے مائے
 مہارے گل پڈیا گردھاری ہے مائے
 میں جل جمنا میں بھرن گئی تھی آگیو کرشن مراری ہے مائے
 لے گیو ساری اناری مہاری جل میں او بھی اُگھاری ہے مائے
 سکھی سیانی موری ہنست ہے ہنسی ہنسی دے موہی تاری ہے مائے

मीरा प्रभु ऐसे जाना दासी तुम्हारी है ।

१३७

माई मेरो मोहने मन हरयो ।

कहा करूँ कित जाऊँ सजनी प्राण पुस्त सँ वरयो ॥

हूँ जल भरने जात थी सजनी कलस माथे धरयो ।

साँवरी सी किसोर मूरत कछुक टोनो करयो ॥

लोक लाज बिसारि डारो तबहीं कारज सरयो ।

दासि मीरा लाल गिरधर छान ये वर वरयो ॥

१३८

छाँड़ो लंगर मोरी बहियाँ गहो ना ।

मैं तो नार पराये घर को मेरे भरोसे गुपाल रहो ना ।

जो तुम बहियाँ मोरी गहत हो, नयन जोर मोरे प्राण हरो ना ॥

बृन्दावन की कुंज गली में रीत छोड़ अनरीत करो ना ।

मीरा के प्रभु गिरधर नागर चरण कमल चित टारे टरो ना ॥

میرا پرہو ایسے جانو داسی تمہاری ہے

۱۳۷

مائی میرو موہن من ہریو

کہا کروں کت جاؤں سجنی پران پُرس سوں وریو
ہوں جل بھرنے جات تھی سجنی کلس ماتھے دھریو
سانوری سی کسور مورت کچھک ٹونو کریو
لوک لاج بسار ڈارو تب ہیں کارج سریو
داسی میرا لال گردھر چھان یہ ور وریو

۱۳۸

چھانڑو لنگر موری بھیان گھونا

میں تو نار پرائے گھر کی میرے بھروسے گپال رہونا
جو تم بسیاں موری گہت ہو، نین جور مورے پران ہرونا
برندا بن کی کنج گلی میں ریت چھوڑاں ریت کرونا
میرا کہے پرہو گردھر ناگر چرن کمل چت ٹارے ٹرونا

स्याम म्हाँसूँ ऐडो डोले हो ।
 औरन सू खेलै धमार म्हाँसूँ मुख हूँ न बोलै हो ॥
 म्हाँरी गलियाँ ना फिरै तैके आँगण डोलै हो ।
 म्हाँरी अंगरी ना लुवै बाकी बहियाँ मोरै हो ॥
 म्हाँरो अचरा ना लुवै बाको घूँघट खोलै हो ।
 मीरा के प्रभु साँवरो रंगरसिया डोलै हो ॥

आली साँवरो की दृष्टि मानो प्रेम की कटारी है ।
 लागत बेहाल भई तन की सुधि-बुधि गई ॥
 तन-मन व्यापो प्रेम मानी मतवारी है ।
 सखियाँ मिलि दुइ चारी बावरी सी भई न्यारी ॥
 हों तो बाको नीको जानो कुंज को बिहारी है ।
 चन्द को चकोर चाहै दीपक पतंग दाहै ॥
 जल बिना मीन जैसे तैसे प्रीत प्यारी है ।
 विनती करो हे स्याम लागों मैं तुम्हारे पाँव ॥

سیام مہاسوں ایڈو ڈولے ہو
 اورن سوں کھیلے دھمار مہاسوں مکھ ہوں نہ بولے ہو
 مہاری گلیاں نا پھرے تیکے آنگن ڈولے ہو
 مہاری آنگری نا چھوے واکی بسیاں مورے ہو
 مہارو انچرا نہ چھوے واکو گھونگھٹ کھولے ہو
 میرا کے پرہو سانورو رنگ رسیا ڈولے ہو

آلی سانورو کی درِ شٹی مانو پریم کی کٹاری ہے
 لاگت بے حال بھی تن کی سُدھ بُدھ گئی
 تن من ویاپو پریم مانی متواری ہے
 سکھیاں ملی دوئی چاری باوری سی بھی نیاری
 ہوں تو واکو نیکو جانو کُنچ کو بہاری ہے
 چند کو چکور چاہے دیپک پتنگ داہے
 جل بنا مین جیسے تیسے پریت پیاری ہے
 بنتی کروہے سیام لاگوں میں تمہارے پاؤں

रजनी बीती भोर भयो है घर घर खुले किवारे ।
 गोपी दही मथत सुनियत है कंगना के झनकारे ॥
 उठो लाल जी भोर भयो है सुर नर ठाढ़े द्वारे ।
 खाल बाल सब करत कुलाहल जय जय सबद उचारे ।
 माखन रोटी हाथ में लीनी गउवन के रखवारे ।
 मीरा के प्रभु गिरधर नागर शरण आया कुँ तारे ॥

१३४

गोहर्ने गुपाल फिरँ ऐसी आवत मन में ।
 अवलोकत बारिज बदन बिबस भई तन में ॥
 मुरली कर लकुट लेऊँ पीत बसन धारूँ ।
 काछी गोप भेष मुकट गोधन संग चारूँ ॥
 हम भई गुल्म लता बृन्दावन रैनाँ ।
 पसु पंछी मरकट सुनि श्रवन सुनत बैना ॥
 गुरुजन कठिन कानि कासों री कहिए ।
 मीरा प्रभु गिरधर भिलि ऐसे ही रहिये ॥

رجنی بیتی بھور بھو ہے گھر گھر کھلے کوارے
 گوپی دیہی متھت سُنی ت ہے کنگنا کے جھنکارے
 اٹھو لال جی بھور بھو ہے سر نہ ٹھاڑے دوارے
 گوال بال سب کرت کلاہل جے جے سب اُچارے
 ماکھن روٹی ہاتھ میں لینی گوون کے رکھوارے
 میرا کے پر بھو گردھر ناگر شرن آیا کون تارے

۱۳۴

گوہنیں گپال پھروں ایسی آوت من میں
 اولوکت بارج بدن بیس بھی تن میں
 مُرلی کرلکٹ لیوں پیت بسن دھاروں
 کاچھی گوپ بھیش مکٹ گودھن سنگ چاروں
 ہم بھی کُلم لتا برندا بن ریناں
 پَسُو پنچھی مرکٹ سنی شرون سُنت بیناں
 گروجن کٹھن کانی کا سوں ری کہنے
 میرا پر بھو گردھر ملی ایسے ہی رہے

मोर मुगट पीतांबर सोहै कुंडल भलकत हीर ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर चरण कमल पर सीर ॥

१३१

हो कांन्हा किन गूँथी जुल्फाँ कारियाँ ।
सुधर कला प्रवीन हाथन सँ जसुमतिजू ने सँवारियाँ ॥
जो तुम आओ मेरी बाखरियाँ जरि राखूँ चंदन किवारियाँ ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर इन जुलफन पर वारियाँ ॥

१३२

गोकुला के वासी भले ही आये गोकुला के वासी ।
गोकुल की नारि देखत आनन्द सुख रासी ॥
एक गावत एक नाचत एक करत हाँसी ।
पीताम्बर फेटा बाँधे अरगजा सुबासी ॥
गिरधर-से सुनवल ठाकुर मीरा-सी दासी ॥

१३३

जागो बंसीवारे ललना , जागो मेरे प्यारे ।

مور مکٹ پیتامبر سوہے کنڈل جھلکت ہیر
میرا کے پر بہو گردھر ناگر چرنِ کمل پر سیر

۱۳۱

ہو کا نہا کن گوتھی جلیہا کاریاں
سُدرہ کلا پروین ہاتھن سوں جسومتی جونے سنواریاں
جو تم آؤ میری باکھریاں جری را کہوں چندنِ کواریاں
میرا کے پر بہو گردھر ناگر ان جلیہن پرواریاں

۱۳۲

گوکلا کے باسی بھلے ہی آئے گوکلا کے باسی
گوکل کی ناری دیکھت آند سکھ راسی
ایک گاوت ایک ناچت ایک کرت ہاسی
پیتامبر پھیٹا باندھے ارگجا سُباسی
گردھر سے سُن ول ٹھا کر میراسی داسی

۱۳۳

جاگو بنسی وارے للنا، جاگو میرے پیارے

दोउ कर जोड़्यौं अरज हूँ सुण लीज्यो मेरी बाती ।
 यो मन मेरो बड़ो हरामी ज्यौं मदमाती हाथी ॥
 सदगुरु हस्त धर्यो सिर ऊपर आंकुस दे समझाती ।
 पल पल तेरा रूप निहारूँ निरख निरख सुख पाती ॥
 मीरा के प्रभु गिरधर नागर हरि चरणों चित राती ।

१२९

आली म्हांने लागे बृन्दावन नीका ।
 घर घर तुलसी ठाकुर पूजा दरसन गोविंद जी को ।
 निरमल नीर बहत जमना में भोजन दूध दही को ॥
 रतन सिंधासण आप बिराजे मुगट धर्यो तुलसी को ।
 कुंजन कुंजन फिरत राधिका सचद सुनत मुरली को ॥
 मीरा के प्रभु गिरधर नागर भजन बिना नर फीको ।

१३०

बलो मन गंगा जमना तीर ।
 गंगा जमना निरमल पानी सीतल होत सरीर ।
 बंसी बजावत गावत कान्हो संग लियो बलवीर ॥

دوؤ کر جوڑیاں ارچ کرت ہوں سُن لیجیؤ میری باتی
یومن میرو بڑو حرامی جیوں مدماتی ہاتھی
سَد گرو ہَسَت دھریؤ سر اوپر آنکُس دے سمجھاتی
پل پل تیرا روپ نہاروں نہ رکھ نہ رکھ سکھ پاتی
میرا کے پر بھو گر دھر ناگر ہری چرنوں چِت راتی

— ۱۲۹ —

آلی مہاں نے لاگے برندا بنِ نیکا
گھر گھر تلسی ٹھا کر پوجا درسن گو بند جی کو
نرمل نیر بَسَت جمنا میں بھوجن دودھ دہی کو
رتن سنگھاسن آپ براجے مکٹ دھریو تلسی کو
کُنجن کُنجن بھرت رادھیکا سبد سُنت مُرلی کو
میرا کے پر بھو گردھر ناگر بھجن بنا نہر پھیکو

— ۱۳۰ —

وَلو من کنگا جمنا تیر
کنگا جمنا نرمل پانی سیتل بہت سریر
بنسی بجاوت گاوت کا نہو سنگ لیوبل ویر

गुरु ग्यान रगूँ तन कपड़ा मन मुद्रा फेरूंगी हो ।
 प्रेम प्रीत सँ हरिगुण गाऊँ चरणन लिपट रहूंगी हो ॥
 या तन की मैं करूँ कींगरी रसना राम रटूंगी हो ।
 मीरा कहे प्रभु गिरधर नागर साधां संग रहूंगी हो ॥

१२७

हमरे रोंरे लागलि कैसे छूटै ।
 जैसे हीरा हनत निहाई तैसे हम रोंरे बनि आई ।
 जैसे सोना मिलत सोहागा तैसे हम रोंरे दिल लागा ।
 जैसे कमल नाल बिच पानी तैसे हम रोंरे मन मानी ॥
 जैसे चँदहि मिलत चकोरा तैसे हम रोंरे मिल जोरा ।
 जैसे मीरा पति गिरधारी तैसे मिलि रहु कुंज बिहारी ॥

१२८

महाँरो जनम मरण को सार्थी थाने नहिं विसरूँ दिन राती ।
 तुम देख्याँ बिन कल न पड़त है जानत मेरी छाती ॥
 ऊँची चढ़ चढ़ पंथ निहारूँ रोय रोय अखिया राती ।
 यो संसार सकल जग भूठो भूठा कुलरा न्याती ॥

گُرو گیان رنگوں تن کپڑا من مُدرا پھیرونکی ہو
 پریم پریت سُوں ہری گن گاؤں چرنن لپٹ رہونکی ہو
 یاتن کی میں کروں کینگری رسنا رام رٹونکی ہو
 میرا کہے پر بہو گردھر ناگر سادھاں سنگ رہونکی ہو

۱۲۷

ہم رے رورے لاکلی کیسے چھوٹے
 جیسے ہیرا بہت نہای تیسے ہم رورے بن آئی
 جیسے سونا ملت سوہاگا تیسے ہم رورے دل لاگا
 جیسے کمل نال بیچ پانی تیسے ہم رورے من مانی
 جیسے چندہ ملت چکورا تیسے ہم رورے مل جورا
 جیسے میرا پتی گردھاری تیسے ملی رُہ کنج بہاری

۱۲۸

مہارو جنم مرن کو ساتھی تھانے نہیں بسروں دن راتی
 تم دیکھیا بن کل نہ پڑت ہے جانت میری چھاتی
 اونچے چڑھ چڑھ پنتھ نہاروں روئے روئے انکھیاں راتی
 یو سنسار سکل جگ جھوٹو جھوٹا کُل را نیاتی

सब भगतन का कारज कीन्हा सोई प्रिय मैं पाया जी ।
मीरा विरहणि सीतल होई दुख दुन्द न्हसाया जी ॥

१२५

फागुन के दिन चार रे होरी खेल मना रे ।
बिन करताल परवावज बाजै अनहद की भनकार रे ॥
बिन सुर राग छतीसूँ गावै रोम रोम रंग सार रे ।
सील सतोख की केसर घोली प्रेम प्रीत पिचकारी रे ॥
उड़त गुलाल लाल भए बादल बरसत रंग अपार रे ।
घट के पट सब खोल दिए हैं लोक लाज सब डार रे ॥
होरी खेलि पीव घर आए सोइ प्यारी प्रिय प्यार रे ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर चरण कँवल बलिहारी रे ॥

१२६

बाल्हा मैं वैरागिण हूँगी हो ।
जीं जीं भेष म्हांरो साजन रीकै सोइ भेष धरूँगी हो ॥
सील संतोष धरूँ घट भीतर समता पकड़ रहूँगी हो ।
जाको नाम निरंजण कहिए ताको ध्यान धरूँगी हो ॥

سب بھگتن کا کراج کینھا سوئی پرہ میں پایا جی
میرا ورہنی سیتل ہوئی دکھ کُند نہسایا جی

۱۲۵

پھاگُن کے دن چار رے ہوئی کھیل منارے
بن کر تال پکھاوج باجے ان ہد کی جھنکار رے
بن سُراگ چھتیسوں گاوے روم روم رنگ سار رے
سِل ستوکھ کی کیسر گھولی پریم پریت پچکاری رے
اُڑت گُلّال لال بھٹے بادل برست رنگ اپار رے
گھٹ کے پٹ سب کھول دئے ہیں لوک لاج سب ڈار رے
ہوئی کھیلی پیو گھر آئے سوئی پیاری پرہ پیار رے
میرا کے پرہو گردھر ناگر چرن کنول بلی ہار رے

۱۲۶

بالھا میں بیراگن ہوں کی ہو
جیں جیں بھیش مہارو سا جھن ریچھے سوئی بھیش دھرونگی ہو
سِل سنتوش دھروں گھٹ بھیت سَمتا پکڑ رہونگی ہو
جاکو نام نرنجن کہئے تاکو دھیان دھرونگی ہو

साजन घर आवो मिठबोला ।

कच की ठाढ़ी पंथ निहारै थौं हीं आया होंसी भला ।
 आवो निसंक संक मत मानो आयौ ही सुख रहेला ।
 तन मन बार कहूँ न्यौछावर दीजो स्याम मोहेला ॥
 आतुर बहुत बिलम नहिं करण आयौ ही रंग रहेला ।
 तेरे कारण सब रंग त्यागा काजल तिलक तमोला ॥
 तुम देख्यौं धिन कल न परत है कर घर रही कपोला ।
 मीरा दासी जनम-जनम की दिल की घुण्डी खोला ॥

म्हारे ओलगिया घर आया जी ।

तन की ताप मिटी सुख पाया हिल मिल मंगल गाया जी ॥
 धन की धुन सुनि मोर मगन भयायूँ आपाद आया जी ।
 मगन भई मिलि प्रभु अपणों सँ भौ का दग्ध मिटाया जी ॥
 चंद कूँ देखि कम्बोदनी फूलें हरखि भया मेरी काया जी ।
 रग रग सीतल भई मोरि सजनी हरि मेरे महल सिधाया जी ॥

ساجن گھر آؤ مٹھ بولا
 کب کی ٹھاڑی پنتھ نہاروں تھان ہی آیا ہونسی بھلا
 آبو نسنک سنک مت مانو آیو ہی سکھ رہلا
 تن من باد کروں ینو چھاور دیجو سیام موہیلا
 آٹر بہت بلم نہیں کرنا آیاں ہی رنگ رہیلا
 تیرے کارن سب رنگ تیاگا کاجل تلک تمولا
 تم دیکھیاں بن کل بہ پرت ہے کدھر رہی کپولا
 میرا داسی جنم جنم کی دل کی گھنڈی کھولا

مہارو اولگیا گھر آیا جی
 تن کی تاپ مٹی مُسکھ پایا ہل مل منگل گایا جی
 گھن کی دھنی سن مور مگن بھیا یوں آنند آیا جی
 مگن بھٹی ملی پر بھو اپنا سوں بھوکا دگدھ مٹایا جی
 چند کُوں دیکھ کمودنی بھولے ہر کھی بھیا مری کایا جی
 رگ رگ سیتل بھٹی موری سجنی ہری مرے محل سدیا جی

होली आई प्यारी रंग सँ भरी री ॥

ठड़त गुलाल लाल भये बादल पिचकारिनि की लगी भरी री ।

चोवा चन्दन और अरगजा केसर गाजर भरी धरी री ॥

मीरा कहै प्रभु गिरधर नागर चेरी होय पायन में परी री ॥

१२१

बदला रे तू जल भरि ले आयो ।

छोटी छोटी बूँदन बरसँन लागी कोयल सबद सुनायो ।

गाजै बाजै पवन मधुरिया अम्बर बदराँ छायो ॥

सेज सँवारी पिया घर आये हिल मिल मंगल गायो ।

मीरा के प्रभु हरि अविनासी भाग भलो जिन पायो ॥

१२२

भुक आई बदरिया सावन की, सावन की मन भावन की ।

सावन में उमंग्यो मेरो मनवा भनक सुनि हरि आवन की ।

उमड़-धुमड़ चहुँ दिसि से आयो दामिण दमक भर लावन की ।

नाँहीं नाँहीं बूँदन मेहा बरसै सीतल पवन सोहावन की ॥

मीरा के प्रभु गिरधर नागर आनन्द मंगल गावन की ।

ہولی آئی پیاری رنگ سوں بھری ری
 اُڑت کلال لال بھنے بادل پچکارن کی لگی جھری ری
 چووا چندن اور آرگجا کیسر گاگر بھری دھری ری
 میرا کہے پر بھو گردھر ناگر چیری ہوئے پائین میں پری ری

۱۲۱

بدلا رے تو جل بھری لے آيو
 چھوٹی بوندن برسن لاگی کوئل سبب سنایو
 گاجے باجے پون مدھریا امبر بدران چھایو
 سیج سنواری پیا گھر آئے ہل مل منگل گایو
 میرا کہے پر بھو ہری ابناسی بھاگ بھلو جن پایو

۱۲۲

جھک آئی بدریا کالی ساون کی، ساون کی من بھاون کی
 ساون میں اُمنگیو میرو منوا بھنک سنی ہری آون کی
 اُمڑ گھمڑ چھو دس سے آيو دا من دسک جھر لاون کی
 نانھی نانھی بوندن مینھا برسے سیتل پون سوہارن کی
 میرا کہے پر بھو گردھر ناگر آند منگل گاون کی

साधू मात पिता कुल मेरे सजन सनेही ग्यानी ॥
 संत चरण की सरण रैण दिन सग्त कहत हूँ बानी ।
 राणा ने समझावो जावो मैं तो बात न मानी ।
 मीरा के प्रभु गिरधर नागर संताँ हाथ बिकानी

ऊदा भाभी बोलो बात बिचारी ।

साधां की संगत दुख भारी मानो बात हमारी ।
 छापा तिलक गलहार उतारो पहिरो हार हजारी ॥
 रतन जड़ित पहिरो आभूषण भोगो भोग अपारी ।
 मीरा जीथें चलो म्हेँल में थाँने सोगन म्हारी ॥

मीरा भाव भगत भूषण सजे सील संतो सिंगार
 ओढ़ी चूनर प्रेम की म्हाँरो गिरधर जी भरतोर ॥
 ऊदाबाई मन समझ जावो अपने धाम ।
 राज पाट भोगो तुम्हीं, हमें न तासूँ काम ॥

१२०

रंग भरी रंग भरी रंग सँ भरी री ।

سادھو مات پتا مُکل میرے سُجن سینی گیانی
 سنت چرن کی سرن رین دن ست کہت ہوں بانی
 رانا نے سمجھاؤ جاؤ میں تو بات نہ مانی
 میرا کے پرہو گردھر ناگر ستان ہاتھ بکائی

اُودا۔ بہا بھی بولو بات بچاری

سادھاں کی سنگت دکھ بھاری مانو بات ہماری
 چھاپا تلک گل ہار اتارو پُہرو ہار بچاری
 رتن جڑت پُہرو آبھوشن بھوگو بھوگ اپاری
 میرا جی تھیں چلو محل میں تھانے سوگن مھاری

میرا۔ بہاؤ بھگت بھوشن سجے سیل سنتوں سنگار
 اوڑھی چُونر پریم کی مھارو گردھر جی بھرتار
 اُودا بائی من سمجھ جاؤ اپنے دھام
 راج پاٹ بھوگو تمہیں، ہمیں نہ تاسوں کام

رنگ بھری رنگ بھری رنگ سُوں بھری ری

मीरा - माई म्हॉने सपने में परण गया गोपाल ॥
 अंग अंग हल्दी मैं करी जी सृधे भीज्यो गात ।
 माई म्हॉने सुपने में परण गया दीना नाथ ॥
 छप्पन कोटि जहाँ जान पधारे दुलहा श्री भगवान ।
 सुपने मे तोरन बाँधियो जी सुपने में आई जान ॥
 मीरा को गिरधर मिल्या जी पृथ्व जनम के भाग ।
 सुपने में म्हॉने परण गया जी होगया अचल सुहाग ॥

११६

ऊदा थाँने बरज बरज मै हारी भाभी मानो बात हमारी ।
 राण रोस कियो थाँ ऊपर साधों में मत जा री ॥
 कुल को दाग लगै छै भाभी निन्दा होरही भारी ।
 साधों रे संग बन बन भटको लाज गमाई सारी ॥
 बड़ा धर थे जनम लियों छै नाचो दे दे तारी ।
 वर पायो हिंदवाणै सूरज थे काँई मन धारी ॥
 मीर गिरधर साध संग तज चलो हमारी लारी ।
 मीरा मीरा बात नहीं जग छानी ऊदा समझो सुधर सयानी ।

میرا۔ مائی مہانے سُپنے میں پرن گیا گوپال
 انگ انگ ہلدی میں کری جی سُودھے بھجیو گات
 مائی مہانے سُپنے میں پرن گیا دینا ناتھ
 چھپن کوٹ جہاں جان پدھارے دُلہا شری بھگوان
 سُپنے میں تورن باندھیو جی سُپنے میں آئی جان
 میرا کو گردھر ملیا جی پورو جنم کے بھاگ
 سُپنے میں مہارے پرن گیا جی ہو گیا اچل سہاگ

— ۱۱۹ —

اودا۔ تھانے برج برج میں ہاری بھابھی مانو بات ہماری
 رانے روس کیوتھان اوپر سادھاں میں مت جاری
 کل کو داگ لگے چھے بھابھی ننڈا ہو رہی بھاری
 سادھاں رے سنگ بن بن بھٹکو لاج گمائی ساری
 بڑا گھر تھے جنم لیو چھے ناچو دے دے تاری
 بر پایو ہندوانے سورج تھے کائیں من دھاری
 میرا گردھر سادھ سنگ تچ چلو ہماری لاری
 میرا۔ میرا بات نہیں جگ چھانی اودا سمجھو سُدھرسیانی

बतलाया बोलो नहिं रे राणो जी गया रिसाय ॥
 विषरा प्याला राणा जी भेज्या दीजो मेड़तणी हाथ ।
 कर चरणामृत पी गई म्हांरा सबल घड़ी का साथ ॥
 विष की प्यालो पी गई भजन करे उस ठौर ।
 थाँरा मारी ना मरूँ म्हांरा राखण हारो और ॥
 राणो जी मो पर कोप्यो रे माहूँ एक न सेल ।
 मारयां परछित लागसी म्हाने दीजो पीहर मेल ॥
 राणो मो पर कोप्यो रे रती न राख्यो मोढ ।
 ले जाती बैकुंठ में यो तां समझ्यो नहिं सिमोद ॥
 छापा तिलक बनाइया तजिया सब सिंगार ।
 महिना तूँ सरण राम के भल नंदा संसार ।
 माला म्हांरे देवणी सील बरत सिंगार ।
 अब के किरिपा कीजियो हूँ तो फिर बाँधू तलवार ॥

११८

मीरा- माई म्हाँने सुपणो मे परण गया जगदीस ।
 सोती को सुपना आविया जी सुपना त्रिस्वा बीस ॥
 मा - गैली दीखें मीरा बावली सुपणा आल झंझाल ।

بتلایا بولو نہیں رے رانا جی کئے رسائے
 وش را پیالہ رانا جی بھیجیا دیجو میڑ تنی ہاتھ
 گرچرنا مِرت پی گئی مہارا سبل گھڑی کا ساتھ
 وش کی پیالو پی گئی بھجن کرے اُس ٹھور
 تھارا ماری نامروں مارا راکھن ہارو اور
 رانو جی مو پر کو پیو رے ماروں ایک نہ سیل
 ماریاں پراچھت لاگسی مہانے دیجو پیہر میل
 رانو مو پر کو پیو رے رتی نہ راکھیو مود
 لے جاتی ییکٹھہ میں یو تو سمجھیو نہیں سسود
 چھاپا تلک بنائیا تجیا سب سنگار
 مینہ تو سرنِ رام کے بھل نندا سنسار
 مالا مہارے دیوڑی سیل برت سنگار
 اب کے کرپا کیجیو ہوں تو پھر باندھوں تلوار

۱۱۸

میرا۔ مائی مہانے سُپنوں میں پرن گیا جگدیس
 سوتی کو سُپنا آویا جی سُپنا وسوا ییس
 ماں۔ گیلی دیکھے میرا باولی سُپنا آل جنجال

डबियामें भेज्या ज भुबंगम सालिगराम करि जाणा ।
मीरा तो अब प्रेम दिवाणी साँवलिया वर पाणा ॥

— ११६ —

म्हाँ सँ हरि बिन रहो न जाय
सास लड़ै मेरी ननद खिजावै राणा रह्या रिसाय,
पहरो भी राख्यो चौकी बिठारयो ताला दियो जड़ाय ॥
पूर्व जनम की प्रीत पुराणी सो क्यूँ छोडी जाय ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर और न आवे म्हाँरी दाय ।

— ११७ —

अब नहिं बिसरूँ म्हाँरे हिरदे लिख्यो हरि नाम ।
म्हाँरे सतगुरु दियो बताय अब नहिं बिसरूँ रे ॥
मीरा बैठी महल में रे ऊठत बैठत राम ।
सेवा कर स्यां साधुकी म्हाँरे और न दूजा काम ॥
राणाजी बतलाइया काँइ देणो जवाब ।
मण लागो हरि नाम सँ म्हाँरों दिन दिन दुना लाभ ॥
सीप भरयो पाणी पिवेरे टाँक भरयो अन्न खाय ।

ڈیا میں بھیجا جا بُھونگم سالگ رام کر جانا
میرا تو اب پریم دوانی سانولیا ور پانا

== ۱۱۶ ==

مہا سُوں ہری بن رہیو نہ جائے
ساس لڑے میری نند کجھاوے رانا رپا رسائے
پہرو بھی راکھیو، چوکی بٹھاریو، تالہ دیو جڑائے
پُورو جنم کی پریت پرانی سو کیوں چھوڑی جائے
میرا کہے پرہو گردھر ناگر اور نہ آوے مہاری دھائے

== ۱۱۷ ==

اب نہیں بسروں مہارے ہردے لکھیو ہری نام
مہارے ست گرو دیو بتائے اب نہیں بسروں رے
میرا بیٹھی محل میں رے اوٹھت بیٹھت رام
سیوا کرسیاں سادھو کی مہارے اور نہ دوجا کام
رانا جی بتلایا کائی دینو جواب
من لاگو ہری نام سُوں مہاروں دن دن دونا لاہہ
سیپ بھریو پانی پوے رے ٹانک بھریو آن کھائے

ताल, पखावज, मिरदंग बाजा साधों आगे नाची रे ॥
 कोई कहे मीरा भई बावरी कोई कहे मदमाती रे ।
 विष का प्याला राणा भेज्या अमृत कर आरोगी रे ॥
 मीरा कहे प्रभु गिरधर नागर जनम जनम की दासी रे ॥

११४

राणाजी थें जहर दियौ म्हे जाणी,
 जैसे कंचन दहत अग्नि में निकसत बारह बाणी ।
 लोक लाज कुल काण जगतकी दर्ई बहाय जसपाणी ॥
 अपने घर का परदा करले मैं अबला बौराणी ।
 तरकस तीर लग्यो मेरे हियरे गरक गयो सनकाणी ॥
 सब संतन पर तन मन वारों चरण कँवल लपटाणी ।
 मीरा को प्रभु राखि लई है दासी अपणी जाणी ॥

११५

मैं गोविन्द गुण गास्यौ,
 राजा रुठै नगरी राखै हरि रुठयौ कहँ जास्यौ
 राखै भेज्या जहर प्याला इमरित करि पी जाणा ॥

نال پکھاوج مردنگ باجا سادھاں آگے ناچی رے
 کوئی کہے میرا بھئی باوری کوئی کہے مدماتی رے
 وش کا پیالہ رانا بھیجیا امرت کر آروگی رے
 میرا کہے پرہو گردھر ناگر جنم جنم کی داسی رے

== ۱۱۴ ==

رانا جی تھیں جہر دیو مھے جانی
 جیسے کنچن دہت اگن میں نکست بارہ بانی
 لوک لاج مکھل کان جگت کی دئی بھائے جس پانی
 اپنے گھر کا پردا کر لے میں ابلا بورانی
 ترکس تیر لگیو میرے پیارے گرک گیو سنکائی
 سب سنتن پر تن من وارون چرن کنول لپٹانی
 میرا کو پرہو راکھی لئی پے داسی اپنی جانی

== ۱۱۵ ==

میں گوبند گُن کا سیان
 راجا روٹھے نگری راکھے، ہری روٹھے کہاں جاسیاں
 رانے بھیجیا جہر پیالہ امرت کر ہی جانا

ऐसे वर को क्या कहँ जो जन्मै औ मर जाय ।
 वर बरियो एक साँवरे री मेरो चुड़लो अमर हो जाय ॥
 मैं जान्यो हरि मैं ठग्यो री हरि ठग लेगयो मोय ।
 लख चौरासी मोरचा री छिन में गेरया छै बिगोय ॥
 सुरत चली जहाँ मैं चली री कृष्ण नाम भणकार ।
 अबिनासी की पोल पर जी मीरा करै छै पुकार ॥

११२

नहिं भावै थारो देसलडो रंगरुडो ।
 थारा देसाँ में राणा साध नहीं छै लोग बसै सब कूडो ॥
 गहणा गाँढी राना हम सब त्याग्या लाग्यो करारा चूडो ।
 काजल टीका हम सब त्याग्या त्याग्यो है बाधन जूडो ॥
 मेवा मिसरी हम सब ही त्याग्या छै सककर बूरो ।
 तन की आस कबहूँ नहिं कीनी ज्युँ रण माहि सूरु ॥
 मीरा के प्रभु गिरधर नागर वर पायो में पुरो ।

११३

राम तने रंगराची राणा मैं तो साँवलिया रंग राची रे ।

ایسے ور کو کیتا کتروں جو جمنے او مرن جائے
 ور بڑیوں انکے سانور ری میرو چڑلو اتر ہو جائے
 میں جانیو ہری میں لھکیو ری بڑی تھگ لئے گیو موئے
 لکھ چوراسی مورچہ ری چھن میں گیر باچھے و گوئے
 سرت چلی جہاں میں چلی ری کرشن نام جھنکار
 آباسی کی پول پر جی میرا کرے چھے پکار

~~~~~

~~~~~

نہیں بھاونھے تھارو دیسڑلو رنگ ٹوڑو
 تھاران دینٹان میں رانا ساتھ نہیں چھے لوگ بسو سب کوڑو
 گھنا گاٹھی نرانا ہم سب تیا گیا لاگیو کترارو چوڑو
 کاجل ٹیکا ہم سب تیا گیا تیاگیو ہے باندھن جوڑو
 میوا مصری ہم سب ہی تیا گیا چھے سکر بورو
 تن کی آس کہوں نہیں کیفی جیوں رن ماہیں سوڑو
 میرا گے پر بھو گردھر ناگر بر پایو میں پورو

~~~~~

~~~~~

رام جتنے رنگ راجی رانا میں ہو ساو لیا رنگ نرا جی زے

सुमरिन थाल हाथ में लीन्हा सोभा अधिक खरी ।
 सेजे सुखमणा मीरा सो है सुभ है आज धरी ।
 तुम जावो राणा घर अपणे मेरी तेरी नहीं सरी ॥

११०

बरजी मैं काहू की नाहिं रहूँ ।
 सुनौरी सखी तुम चेतन होइ कै मन की बात कहूँ ॥
 साधु-संगति करि हरि सुख लीजै जग सँ दूर रहूँ ।
 तन धन मेरे सब ही जावो भलि मेरो सीस लहूँ ॥
 मन मेरो लागो सुमिरण सेती सब का मैं बोल सहूँ ।
 मीरा के प्रभु हरि अबिनासी सतगुरु सरण गहूँ ॥

१११

सुरत दीनानाथ सँ लगी तू तो समझ सुहागण नार ।
 लगनी लहूँगो पहर सुहागन बीतो जाय बहार ।
 धन जो बन है परवण री मिलै न दूजी बार ॥
 रामनाम को चूड़लो पहिरो प्रेम को सुरमो सार ।
 नकबेसर हरि नाम की री उतर चलोनी परले पार ॥

سُمرن تھال ہاتھ میں لینا سو بھا آدھک کھری
 سیج سُکھ سنا میرا سو ہے سُبھ ہے آج دھری
 تم جاؤ را ناگھر اپنے میری تیری نہیں سری

۱۱۰

برجی میں کاہو کی ناہیں رہوں
 سنوری سکھی تم چیتن ہوئی کہ من کی بات کہوں
 سادھ سُنگت کری ہری سُکھ لیجے جگ سے دور رہوں
 تن دھن میرے سب ہی جاؤ بھلی میرو سیس لہوں
 من میرو لاگو سُمرن سیتی سب کا میں بول سہوں
 میرا کہے پرہو ہری اُبھاسی ست گرو سرن گہوں

۱۱۱

سُرت دینا ناتھ سُوں لگی تون تو سمجھ سُہاگن نار
 لگنی لہنگو پَہر سُہاگن بیتی جائے بہار
 دھن جو بن ہے پر بناری ملے نہ دوجی بار
 رام نام کو چوڑ لو پَہرو پریم کو سرموسار
 نک یسر ہری نام کی ری اُتر چلونی پرلے بار

कृष्ण सखी, सँ तुम रंग राते हम सँ अधिक प्यारी ।
 किरपा कर आहि दरसण दीज्यो सब तकसी बिसारी ॥
 तुम सरणगत परमे दयाला भवजल तार मुरारी ।
 मीरा दासी तुम चरणन की बार बार बालिहारी ॥

१०८

तुम आज्यो जी रामा आवत आस्यौ आमा, ।
 तुम मिलिया मै बहु सुख पाऊ सँ मेनोरथ कामा ॥
 तुम बिच हम बिच अन्तर नाहि जैसे सुरज घामा ।
 मीरा मन के और न मान चाहे सुन्दर स्यामा ॥

१०९

तेरी कोई नहि रोकणहार मगन होई मीरा चली ।
 लाज सरम कुल की मरजादा सिर से दूरि करी ॥
 मोन अपमान दोऊ घर धरके निकली हँ ग्यन बाली ।
 सुचै अटारिया लाल कि वडिया निरगुण सेज बिछी ॥
 पंचरंगी भोलर तुम सो है फूलन फूल कली ।
 बोजबंद कडुला सो है सिन्दूर माँग अरी ॥

کُون سَکھی سُون تَم رنگ راتے، ہَم سُون اَدھک پیاری
 کریا کری موبی درسَن دیجو، سب تَکسیر بَساری
 تَم سَر ناگت پرم دیا لال بھو جَل تار مُمراری
 میرا داسی تَم چرنن کی بار بار بَلہاری

➤ ۱۰۸ ➤

تَم آجیو جی راما، آوت آسیاں آما
 تَم ملیا میں بھو سَکھ پاؤں سَرین منور تہ کاما
 تَم بچ ہَم بچ اتر ناہیں جیسے سورج گھاما
 میرا من کے اور نہ مان چاہے سندر سیاما

➤ ۱۰۹ ➤

تیری کوئی نہیں روکن بار مَکَن ہوئی میرا چلی
 لاج سَرَم کُل کی مر جادا سر سے دور کری
 مان اپمان دوؤ گھردھر کے نکلی ہوں گیان گلی
 اونچی اٹریا لال کوڑیا نرگن سیج بچھی
 پچ رنگی جھالر تَم سوپے پھولن پھول کلی
 باجو بند کڑولا سوپے سندور مانگ بھری

पूस मही पालो घणा अबही तुम निहालो हो ॥
 महामही बसन्त पंचमी फागाँ सब गावै हो ।
 फागुण फागाँ खेलहूँ बगराई जरावै हो ॥
 चेत चित्त में ऊपजी दरसण तुम दी हो ।
 वैसाख वगराई फूलवै कोइल कुरलीजै हो ॥
 काग उड़ावत दिन गया बुझूँ पंडित जोसी हो ।
 मीरा विरहणि व्याकुली दरसण कद होसी हो ॥

१०६

म्हाँरे घर आज्यो प्रीतम प्यारा तुम बिन सब जग खारा ॥
 तन मन धन सब भेंट करूँ ओ भजन करूँ मैं थाँरा ।
 तुम गुणवंत बड़े गुण सागर मैं हूँ जी औगणहारा ॥
 मैं त्रिगुणि गुण एक नाहीं तुझमें ज गुण सागर ।
 मीरा कहे प्रभु कबहि मिलोगे बिन दरसण दुखियारा ॥

१०७

वारी वारी हो राम हैं वारी, तुम आज्या गली हमारी ।
 तुम देख्यो बिन कल न पड़त है जोऊँ बाट तुम्हारी ॥

پوس مہی پالو گھنا اب ہی تم نہالو ہو
 مہامہی بسنت پنچمی پھاگاں سب گلوے ہو
 پھاگُن پھاگاں کھیاہوں بن رائی جراوے ہو
 چیت چیت او پچی درسن تم دیجے ہو
 یسا کہہ بن رائی پھولوے کوئل کُر لیجے ہو
 کاگ اُزاوت دن گیا بوجھوں پنڈت جوسی ہو
 میرا ورہنی ویا کُلی درسن کدہو سی ہو

۱۰۶

مہارے گھر آجیو پریم پیارا تم بن سب جگ کھارا
 تن من دھن سب بھینٹ کروں او بھجن کروں میں تھارا
 تم گُئونٹ بڑے گُن ساگر میں ہوں جی او گن ہارا
 میں تر گُئی گُن ایکو ناہیں تجھ میں جی گُن سارا
 میرا کہی پر بھو کب ہی ملو گے بن درسن دُکھیارا

۱۰۷

واری واری ہو رام ہوں واری، تم آجیا گلی ہماری
 تم دیکھیاں بن کل نہ پڑت ہے، جوؤں باٹ تمہاری

पूर्व जनम की प्रीत हमारी अब नहिं जात निवारी ॥
 सुन्दर वदन जोवते सजनी प्रीत भई छ भारी ।
 म्हारे घरे पधारो गिरधर मंगल गावै नारी ॥
 मोती चौक पुराऊँ बाल्हा तन मन तो पर वारी ।
 म्हाँरो सगपण तो सँ साँवलिया जुगं सँ नहीं विचारी ॥
 मीरा कहे गोपिन के बाल्हो हमसँ भयो ब्रह्मचारी ।
 चरण सरण है दासी तुम्हारी पलक न कीजै न्यारी ॥

१०५

पिया मोहि दरसण दी जै हो ।
 बेर-बेर मैं टेर हूँ अहै किरपा कीजै हो ॥
 जेठ महीने जल बिना पंखि दुख होई हो ।
 मोर असाढ़ो कुरलहे धन चात्रग सोई हो ॥
 सावण मैं झड लागियो सखि तीजाँ खेले हो ।
 भादरवै नदिया बहै दूरी जिन मैले हो ॥
 सीप स्वाति ही भेलती आसोजाँ सोई हो ।
 देव काती में जहे मेरे तुम होई हो ॥
 मगसर ठंठ बहोती पड़े मोहि वेगि सभालो हो ।

پو رو جنم کی پریت ہماری اب نہیں جات نواری
 سندر و دن جووتے سجنی پریت بھی چھ ہماری
 مہارے گھرے پدھارو گردھر منگل گاوے ناری
 موتی چوک پراؤں بالہا تن من تو پرواری
 مہاں رے سگ پن تو سوں سانولیا جگ سوں نہیں وچاری
 میرا کہے گوپن کے بالہو ہم سوں بھیو برہمچاری
 چرن سرن ہے داسی تمہاری پلک نہ کیجے نیاری

۱۰۵

پیا موہی درسن دیجے ہو
 بیر بیر میں ٹیر ہوں رہے کمر پا کیجے ہو
 جیٹھ مہینے جل بنا پنچھی دکھ ہوئی ہو
 مور اساڑھو کڑلے دھن چا ترگ سوئی ہو
 ساون میں جھڑ لا گيو سکھی تیجاں کھیلے ہو
 بہادر وے ندیا بہتے دوری جن میلے ہو
 سیب سواتی ہی جھیلی آسو جاں سوئی ہو
 دیو کاتی میں پوجھے میرے تم ہوئی ہو
 مکسر ٹھٹھ بہوتی پھڑے موہی ویگی سنبھالو ہو

राणाजी म्हें तो गोविंद का गुण गास्याँ ।
 चरणामृत को नेम हमारो नित उठ दरसण जास्याँ ॥
 हरि मन्दिर में निरत करास्याँ घुंघरियां धमकास्याँ ।
 राम नाम का भाँझ चलास्याँ भव सागर तर जास्याँ ॥
 यह संसार बाड़ का कांटा ज्याँ संगत नहिं जास्याँ ।
 मीरा के प्रभु गिरधर नागर निरख परख गुण गास्याँ ॥

पियाजी म्हाँरे नैणां आगे रहज्योजी ।
 नैनां आगे रहज्योजी म्हाँने भुलमत जाज्योजी ।
 भवसागर में बही जात हू वेग म्हाँरी सुध लीज्यो जी ॥
 राणाजी भेज्या विष का प्याला सो इमरित कर दीज्यो जी ।
 मीरा के प्रभु गिरधर नागर मिल बिछुड़त मत की ज्योजी ॥

थाने काई कह समझाऊं म्हाँरा बाला गिरधारी ।

رانا جي مهين تو گو بند کا گن گا سيات
چرن مِرت کو نيم بهمارو نت اُٺھ درسن جا سيات
پري مندر مي نريت کراسيات گھنگھرياں دھم کا سيات
رام نام کا جهانجهه چلا سيات بهو ساگر تر جا سيات
يه سنسار باڙ کا کانٺا جياں سنگت نهين جا سيات
ميرا ڪے پر بهو گردھر ناگر نرڪھ پرڪھ گُن گا سيات

پيا جي مهاں رے نينا آگے رهيو جي
نينا آگے رهيو جي مهاں نے بھل مت جا جيو جي
بهو ساگر مي بهي جات بهو ويگ مهاں ري سُده ليچيو جي
رانا جي بهيجيا وش کا پيالہ سو امريت کر ديچيو جي
ميرا ڪے پر بهو گردھر ناگر مل بچھڙت مت کيچيو جي

تھاں نے کاتين ڪھ سمجھاوڻ مهاں را بالا گردھاري

मीरा लागो रंग हरी सब रंग अटक परी
 चूड़ी म्हाँरे तिलक अरु माला सील बरत सिणारो ।
 और सिंगार म्हाँरे दाय न आत्रै थी गुर ग्यान हमारो ॥
 कोई निन्दो कोई बिन्दो म्हेँ तो गुण गोविन्द का हमारो ॥
 जिन मार्ग म्हारे साध पधारे उन मार्ग में जाय्यौ ।
 चोरी न करय्यौ जिव न सतारय्यौ क़ाई करसी म्हारो कोई ।
 गंज से उतरके खर नहिं चडय्यौ ये तो बात न होई ॥

नैनन बनज बसाउँ री जो में साहिब पाऊँ ।
 इन नैनन मेरे साहिब बसत डरती पलक न लाऊँ री ।
 त्रिकुटी महल मे बना है झरोखा तहाँसे झाँकी लगाऊँरी ॥
 सुन्न महल में सुरत जमाऊँ सुख की सेज बिछाऊँरी ।
 मीरा के प्रभु गिरधर नागर बार बार बलि जाऊँरी ॥

میرا لاگو رنگ ہری سب رنگ اٹک پری
 چوڑی مہارے تلک اُرَمالا سیل بَرت سنگارو
 اور سنگار مہارے دائے نہ آوے یی گُرگیان ہمارو
 کوئی نندو کوئی بندو مہیں تو گُن گو بند کا گاسیاں
 جن مارگ مہارے سادھ پدھارے اُن مارگ میں جاسیاں
 چوری نہ کرسیاں جیو نہ ستاسیاں کاسی کرسی مہارو کوئی
 گج سے اُتر کر کھر نہیں چڑھساں یہ تو بات نہ ہوئی

نین بنج بساؤں ری جو میں صاحب پاؤں
 ان نین مرے صاحب بستت ڈرتی پلک نہ لاؤں ری
 تر کٹی محل میں بنا ہے جھرو کا نہاں سے جھانکی لگاؤں ری
 سُن محل میں سُرَت جماؤں ، سُکھ کی سیج بچھاؤں ری
 میرا کے پرہو گردھر ناگر بار بار یلی جاؤں ری

बोलत वचन मधुर से मीठे जोरत नाहिं प्रीत ॥
 मैं जाणूँ या पार निभैगी छाँड़ि चले अधबीच ।
 मीरा के प्रभु स्याम मनोहर प्रेम पियारा मीत ॥

९८

कोई दिन याद करोगे रमता राम अतीत ।
 आसण मार अडिग होय बैठा याही भजन की रीत ।
 मैं तो जाणूँ जोगी संग चलैगा छाँड़ि चला अधबीच ॥
 आत न दीसे जात न दीसे जोगी किसका मीत ।
 मीरा कहै प्रभु गिरधर नागर चरणन आवे चीत ॥

९९

जोगिया री सूरत मन में बसी ।
 नित प्रति ध्यान धरत हूँ दिल में निसदिन हांत खुसी ॥
 कहा कहूँ कित जाऊँ मोरि सजनी मानो सरप डसी ।
 मीरा कहै प्रभु कबरे मिलोगे प्रीति रसीली बसी ॥

بولت بچن مڈھر سے میٹھے جووت ناہیں پریت
میں جانوں یا پار نہیگی چھاڑ چلے ادھ بیچ
میرا کہے پر بہو سیام منوہر پریم پیارا میت

۹۸

کوئی دن یاد کرو گے رمتا رام اتیت
آسن مار اڈگ ہوئے یٹھا یا ہی بھجن کی ربت
میں تو جانوں جوگی سنگ چلے گا ، چھاڑ چلا ادھ بیچ
آت نہ دیسے جات نہ دیسے ، جوگی کس کا میت
میرا کہے پر بہو گردھر ناگر چرنن آوے جیت

۹۹

جوگیاری صورت من میں بسی
نت پرتی دھیان دھرت ہوں ، دل میں نس دن ہوت کھسی
کہا کروں کت جاؤں موری سجنی مانو سرپ ڈسی
میرا کہے پر بہو کب رے ملو گے پریت رسیلی بسی

ऐसी सूरत या जग मोही फेरि न देखी सोइ ।
मीरा के प्रभु कब रे मिलोगे मिलियाँ अणंद होइ ॥

९५

जोगिया री प्रीतड़ी है दुखड़ा रों मूल ।
हिलमिल बात बणावत मीठी पाछे जावत भूल ॥
तोड़त जेज करत नहिं सजनी जैसे चमेली के मूल ।
मीरा कहे प्रभु तुमरे दरस बिन लगत हिवड़ा में मूल ॥

९६

जावो निरमोहिया जाणी थारीप्रीत
लगन लगी जद प्रीत और ही अब कुछ और ही रीत
इमरित प्याय के विष क्यूँ दीजै कूण गाँव की रीत
मीरा के प्रभु हरि अविनासी अपनी गरज के मीत

९७

जाबा दे जाबा दे जोगी किसका मीत
सदा उदासि रहै मोरि सजनी निपट अटपटी रीत ।

ایسی صورت یا جگ موہی پھیری نہ دیکھی سوئی
میرا کے پرہو کب رے ملو گے ملیاں آند ہوئی

== ۹۵ ==

جو گیا ری پریت ڈی ہے دُکھڑا رو مُول
پل مل بات بناوٹ مٹھی پاچھے جاوٹ بھول
توڑت جیج کرت نہیں سجنی جیسے جمیلی کے پھول
میرا کہے پرہو مُتمرے درس بن لگت ہوڑا میں سول

== ۹۶ ==

جاؤ نرموہیا جانی تھاری پریت
لگن لگی جد پریت اور ہی اب کچھ اور ہی ریت
امرت پیائے کے وش کیوں دیجے کُون گاؤں کی ریت
میرا کے پرہو ہری او ناسی اپنی گرج کے میت

== ۹۷ ==

جا با دے جا با دے جوگی کس کا میت
سدا اداس رہے موری سجنی پٹ اٹ پٹی ریت

तेरो मरम नहि पायो रे जोगी
 आसण मारि गुफा में बैठो ध्यान हरि को लगायो ॥
 गल विच सेली हाथ हाजरियो अंग भभृत रमायो ।
 मीरा के प्रभु हरि अविनासी भाग लिख्यो सोही पायो ॥

जोगी मत जा मत जा मत जा, पाइं पकूँ मैं चेरी तेरी हों
 प्रेम भगति कौ पैड़ो ही न्यारो हम कूँ डौल बता जा ।
 अगर चंदण की चिता बनाऊँ अपणो हाथ जला जा ॥
 जल बल भई भस्म की ढेरी अपणो अंग लगा जा ।
 मीरा कहे प्रभु गिरधर नागर जोत में जोत मिला जा ॥

जोगिया से प्रीत कियौं दुख होइ
 प्रीत किया सुख न मोरी सजनी जोगी मीत न कोई ।
 राति दिवस कल नाहीं परत है तुम मिलियाँ बिन मोई ॥

تیرو مَرَم نہیں پایورے جوگی
 آسن مارے گُپھا میں یٹھو دھیان ہری کو لگایو
 گل وچ سیلی ہاتھ ہاجریو انگ بھہوت رمایو
 میرا گے پرہو ہری اُوناسی بھاگ لکھیو سوہی پایو

جوگی مت جامت جامت جا، پائیں پرُوں میں چیری تیری ہوں
 پریم بھگت کو پیڑو ہی نیارو ہم کُوں ڈول بتاجا
 اگر چندن کی چتا بناؤن اپنے ہاتھ جلاجا
 جل بل بھئی بھسم کسی ڈھیری اپنے انگ لگاجا
 میرا کہے پرہو گردھر ناگر جوت میں جوت ملاجا

جو گیا سے پریت کیاں دُکھ ہوئی
 پریت کیا سُکھ نہ موری سجنی جوگی میت نہ کوئی
 راتِ دوس کَل ناہیں پرت ہے تم ملیاں بن موئی

दरस बिना मोहि कछु न सुहावै तलफ तलफ मरजानी ।
मीरा तो चरण की चेरी सुन लीजै सुखदानी ।

— ९९ —

स्याम तेरी आरती लागी हो ।
गुरु परतापापे पाइया तन दुरमति भागी हो ॥
या तनको दियना करों मनसा करों बाती हो ।
तेल भरावों प्रेम का बारों दिन राती हो ॥
पाटी पारों ज्ञान की मति माँग सँवारी हो ।
तेरे कारन सौँवरे धन जोवन वारी हो ॥
या सेजिया बहु रंग की बहू फूल बिछाये हो ।
पंथ मैं जोहों श्याम का अजहूँ नहि आये हो ॥
सावन भादो ऊमड़ा बरखा रितु आई हो ।
भौहूँ घटा घन धेरिके नैनन झरि लाई हो ॥
मात पिता तुम को दियो तुम ही भल जानो हो ।
तुम तजि और भतार को मन में नहीं आनो हो ॥
तुम प्रभु पूरन ब्रह्म हो पूरन पद दीजै हो ।
मीरा व्याकुल विरहिनी अपनो कर लीजै हो ॥

درس بنا موہے کچھو نہ سہاوے تلپہ تلپہ مرجانی
میرا تو چرنن کی چیری سن لیجے سکھ وانی

سیام تیری آرتی لاگی ہو

گرو پرتاپے پائیا تن دُرمتی بھاگی ہو
یا تن کو دینا کروں من سا کروں باتی ہو
تیل بھراؤں پریم کا باروں دن رات ہی ہو
پاٹی پاروں گیان کی متی مانگ سنواری ہو
تیرے کارن سانورے دھن جوون واری ہو
یا سیجیا بہ رنگ کی بہو پھول بچھائے ہو
پنتھ میں جوؤں سیام کا آجھوں نہیں آئے ہو
ساون بھادوں اومڑا، برکھا رتو آئی ہو
بھوں گھٹا کھن گھیری کے نین جھری لائی ہو
مات پتا تم کو دیو تم ہی بھل جانو ہو
تم تجی اور بھتار کو من میں نہیں آنو ہو
تم پر بھو پورن برہم ہو پورن پد دیجے ہو
میرا ویاکُل ورہنی اپنو کر لیجو ہو

मीरा मन मानी सुरत सैल असमानी ।
 जब जब सूरत लगे वा घर की पल पल नैनन पानी ॥
 ज्यों हिये पीर तीर सम सालत कसक कसक कसकानी ।
 रात दिवस मोहि नोंद न आवत भावै अन्न न पानी ॥
 ऐसी पीर बिरह तन भीतर जागत रैन बिहानी ।
 ऐसा बैद मिलै काइ भेदी देस बिदेस पिछानी ॥
 तासों पीर कहूँ तन केरी फिर नहि भरमों खानी ।
 खोजत फिरों भेद वा घर को कोई न करत बखानी ॥
 रैदास संत मिले मोहि सतगुरु दीन्ही सुरत सहदानी ।
 मैं मिली जाय पाय पिय अपना तब मोरी पीर बुझानी ॥
 मीर खाक खलक सिर डारी मैं अपना घर जानी ।

मिलता जाज्यो हो गुरु ज्ञानी थांरी सुरत देख लुभानी ॥
 मेरो नाम बृद्धि तुम लीज्यो मैं हूँ बिरह दिवानी ।
 रात दिवस कस नाहि परत है जैसे मीन बिन पानी ॥

میرا من مانی سُرت سیل اسمانی
 جب جب سُرت لگے واگھر کی پل پل نین پانی
 جیوں بیٹھے پیر تیر سم سالت کسک کسک کسکانی
 رات دوس موہے نیند نہ آوت بھاوے آن نہ پانی
 ایسی پیر برہ تن بھیتر جاگت رین بہانی
 ایسا بید ملے کوئی بھیدی دیس بدیس بچھانی
 تاسوں پیر کہوں تن کیری پھر نہیں بھرموں کھانی
 کھوجت پھروں بھیدواگھر کو کوئی نہ کرت بکھانی
 ریداس سنت ملے موہی ست کرو دینہی سُرت سہدانی
 میں ملی جائے پائے پیا اپنا تب موری پیر بچھانی
 میرا کھاک کھلک سر ڈاری میں اپنا گھر جانی

ملتا جاجیو ہو کرو ناگیانی تھار ری صورت دیکھ لُبھانی
 میرو نام بوجھ تم لیجیو میں ہوں برہ دوانی
 رات دوس کل ناہیں پرت ہے جیسے مین بن پانی

मैं न नाम रतन धन पायों ।

बसत अमोलक दी मेरे सतगुरु करि किरपा अपणायो ॥

जनम जनम की पूँजी पाई जग मैं सधै खावायो ।

खरचै नहिं कोई चोर न ले वे दिन दिन बढ़त सवायो ॥

सत की नाँव खेवटिया सतगुरु भवसागर तरि आयो ।

मीरा के प्रभु गिरधर नागर हररिव हररिव जस गायो ॥

लगी मोहि राम खुमारी हो ।

रमभ्रम बरसै मेहंड़ा भीजै तन सारी हो ॥

चहूँदिस चमकै दामणी गरजै घन भारी हो ।

सत गुरु भेद बताइया खोली भ्रम किवारी हो ॥

सब घट दीसै आतमा सबही सँ न्यारी हो ।

दीपग जोऊँ ग्यान का चहूँ अगम अटारी हो ॥

मीरा दासी राम की इमरत बलिहारी हो ।

میں نے نام رتن دھن پایو
 بست اموک دی میرے ست گرو کری کرپا اپنایو
 جنم جنم کی پونجی پائی جگ میں سوئے کھو وایو
 کھرچے نہیں کوئی چور نہ لیوے، دن دن بڑھت سوايو
 ست کی نساؤ کھیوٹیا ست گرو، بھو ساگر تری آیو
 میرا کے پرہو گردھر ناگر ہر کھی ہر کھی جس گایو

لگی موہے رام کھماری ہو
 رم جہم برسے مینہڑا بھیجے تن ساری ہو
 چہوں دس چمکے دامنی، گرجے گھن بھاری ہو
 ست گرو بھید بتائیا کھولی بھرم کواری ہو
 سب گھٹ دیسے آتما سب ہیں سوں پناری ہو
 دیگ جوؤں گیان کا، چڑھوں اگم اٹاری ہو
 میرا داسی رام کی امرت بلہاری ہو

पीपा कुँ प्रभु परचा दीन्हौ दिया रे खजीना पूर ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर घणि मिल्या छै हजुर ॥

८५

री मेरे पार निकस गया सतगुरु मारया तीर ।
बिरह माल लागी उर उंदर व्याकुल भया सरीर ॥
इत उत चित चलै नहि कबहूँ डारी प्रेम जंजीर ।
कै जाणै मेरो प्रीतम प्यारो और न जाणै पीर ॥
कहा कहँ मेरो बस नहि सजनी नैन भरत दोऊ नीर ।
मीरा कहे प्रभु तुम मिल्याँ बिन प्राण धरत नहि धीर ॥

८६

भर मारी रे नाताँ मेरे सतगुरु बिरह लगाय के ।
पाँवन पंगा कानन बहिरा सूझत नाहि नैना ॥
खड़ी खड़ी रे पंथ निहँ मरम न कोई जाना ।
सतगुरु ओषध ऐसी दीन्हीं रुमरुम भई चैना ॥
सतगुरु जस्या वैद न कोई पृछो बेद पुराना ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर अमर लोकमें रहना ॥

پیسا کوں پر بہو پرچہ دینھو دیارے کھجینا پور
میرا کے پر بہو گردھر ناگر دھنی ملیا جھے ہجور

۸۵

ری میرے پار نکس گیا، ست کرو ماریا تیر
برہ بھال لاگی اُر اندر، ویا کل بھیا سریر
ات ات چت چلے نہیں کہووں ڈاری پریم جنجیر
کے جانے میرو پریم پیارو اور نہ جانے پیر
کہا کروں مرا بس نہیں سجنی نین جھرت دوؤ میر
میرا کہے پر بہو تم ملیاں بن پران دھرت نہیں دھیر

۸۶

بھرماری رے باناں میرے ست کرو برہ لگائے کے
پاوَن پَنگا کانن بھرا سو جھت ناہیں نینا
کھڑی کھڑی رے پنتھ نہاروں مرم نہ کوئی جانا
ست کرو اوشدھ ایسی دینہی روم روم بھئی چینا
ست کرو جیسا یید نہ کوئی، پوچھو یید پرانا
میرا کے پر بہو گردھر ناگر امر لوک میں رہنا

पवन पाणी दोनों हिं जायंगे अटल रहे अविनाशी ।
 मुरत निरत का दिवलो सँजोले मनसा की करलि बाती ॥
 अगम घाणि को तेल बनायो बाल रही दिन राती ॥
 ओर सखी मद पी पी माती, मैं बिन पियाँ ही माती ।
 प्रेम भटीको मैं मद पियो छकी फिरूँ दिन राती ॥
 जाऊँ न पीहर जाऊँ न सासर हरि सँ सैन लगाती ।
 मीरा के प्रभु गिरधर नागर हरि चरणा चित लाती ॥

८४

बड़े घर ताली लागी रे म्हाग मनरी उणारथ भागी रे ।
 छलिरिये म्हाँरि चित नही रे डाबरिये कुण जाव ।
 गंगा जमना सँ काम नही रे मैं तो जाय मिलुँ दरियाव ॥
 हाथ्याँ मोल्याँ सँ काम नही रे सीख नही सिरदार ।
 कामदाराँ सँ काम नही रे मैं तो जाव कहँ दरबार ॥
 काच कथी सँ काम नही रे लाहा चढे सिर भार ।
 सोना रूपाँ सँ काम नही रे म्हाँरि हीना रो दैपार ॥
 भाग हमारो जागियो रे भयो समंद सँ सीर ।
 इम्रित प्याला छाँडि कै कुण पीवै कड़वे निर ॥

پون پانے دونوں ہی جائیں گے اٹل رہے اُوناشی
 مُرت نِرت کا دِولو سنجوالے مَنساء کی کر لی باتی
 اگم دھانی کو تیل بنایو بال رہی دن راتی
 اور سکھی مَد پی پی ماتی میں بنِ پِیا ہی ماتی
 پریم بھٹی کو میں مد پی یو چھکی پھروں دن راتی
 جاؤں نہ پیہر جاؤں نہ ساسر ہری سُوں سین لگاتی
 میرا کے پر بھو گردھر ناگر ہری چر ناچت لاتی

۸۴

بڑے گھر تالی لاکی رے مہارامن ری اُنا رتھ۔ بھاگی رے
 چھلریٹے مہاروچت نہیں رے ڈابریٹے کُن جاو
 گنگا جمنا سُوں کام نہیں رے میں تو جائے ملوں دریاو
 ہالیاں مولیاں سُوں کام نہیں رے سیکھ نہیں سردار
 کام داراں سُوں کام نہیں رے میں تو جاب کروں دربار
 کاج کتھی سُوں کام نہیں رے لوہا چڑھے سر بھار
 سونا روپا سُوں کام نہیں رے مہارے سینا رویو پار
 بھاگ ہمارے جاگیو رے بھو سمند سُوں سیر
 اِمرت پیالہ جھاڑ کے کُن پیے کڑوے نیر

सुन्दर श्याम सुहावणा देख्याँ जीजै हो ।
मीरा के प्रभु रामजी बड़ भागण रीझै हो ॥

८२

मैं तो साँवरे के रंग राँची,
साजि सिंगार बाँधि पग धुँधरु लोक लाज तजि नाची ॥
गई कुमति लई साधु की संगति भगत रूप भई साँची ।
गाय गाय हरि के गुन निस दिन काल ध्यान से बाची ॥
उण बिन सब जग खारो लागत और बात सब काँची ।
मीरा श्री गिरधरन लाल सँ भगति रसीली जाँची ॥

८३

मैं गिरधर रंग राती सैयाँ, मैं गिरधर रंग राती ॥
पच रंग चोला पहर सखी में झिरमित खेलन जाती ।
ओह झिरमित माँ मिल्यो साँवरो खोल मिली तन गाँती ॥
जिन का पिया परदेस बसत है लिख लिख भेजै पाती ।
मेरा पिया मेरे हिया बसत है न कहूँ आति जाती ॥
चंदा जायगा सूरिज जायगा जायगी धरणि अकासी ।

سندر سیام سہاونا دیکھیاں جیجے= ہو
میرا کے پرہو رام جی بڑ بھاگن ریجھ= ہو

۸۲

میں تو سانورے کے رنگ رانچی
ساجی سنگھار باندھی پگ گھنگرو لوک لاجِ تجی ناچی
گئی کُمتی لئی سادھو کی سنگتِ بھگت روپ بھی سا ناچی
گاٹے گاٹے ہری کے گُنِ نس دن کال دھیان سے بانچی
اُن بن سب جگ کھارو لاگت اور بات سب کانچی
میرا شری گردھرن لال سُوں بھگتی رسیلی جانچی

۸۳

میں گردھر رنگ راتی سہیساں، میں گردھر رنگ راتی
پچ رنگ چولا پھر سکھی میں جھرمٹ کھیلن جاتی
اوہ جھرمٹ ما ملیو سانورو کھول ملی تن گاتی
جنکا پیا پردیس بَسَتْ ہے لکھ لکھ بھیجے پاتی
میرا پیا مرے پیا بَسَتْ ہے نا کُھوں آتی جاتی
چندا جائے گا سورج جائے گا جائے گی دھرنی آکاسی

नटवर प्रभु भेष धरे रूप अति विसंखा ॥
 अधर बिच अरुन नैन मधुर मंद हँसी ।
 बसन दमक दाडिम दुति चमके चपला—सी ॥
 छुद्र घंट किंकनी अनूप धुनि सोहाई ।
 गिरधर के अंग अंग मीरा बलि जाई ॥

८०

आली री मेरे नैणा बाण पड़ी
 चिन्त चढी मेरे माधुरी मूरत उर बिच आन अड़ी ।
 कब की ठाढी पंथ निहारै अपने भवन खड़ी ॥
 कैसे प्राण पिया बिन राखँ जीवन मूर जड़ी ।
 मीरा गिरधर हाथ बिकानी लोग कहें बिगड़ी ॥

८१

अस पिय जाण न दीजै हो ।
 तन मन धन करी वारणै हिरदे धरि लीजै हो ॥
 आव सखी मुख देखिये नैना रस पीजै हो ।
 जिह जिह बिधि रीझै हरी सोई बिधि कीजै हो ॥

نٹ ور پر بہو بھیش دھرے روپ اتی وِسیکھا
 ادھر بمب اُرون نین مدھر مند ہانسی
 بسن و مک داڑم دُتسی چمکے چپلا سی
 چھدر گھنٹ کنکئی انوپ دُھنی سوہائسی
 گردھر کے انگ انگ میرا بلی جائسی

۸۰

آلی ری میرے نیناں بان پڑی
 چت چڑھی مرے مادھوری مورت اُر بچ آن پڑی
 کب کی ٹھاڑھی پنتھ نہاروں اپنے بھون کھڑی
 کیسے پران پیا بن راکھوں جیون مُور جڑی
 میرا گردھر ہاتھ بکانی لوگ کہیں بگڑی

۸۱

اُس پیا جان نہ دیجے ہو
 تن من دھن کری وار نے ہردے دھری لیجے ہو
 آؤ سکھی مکھ دیکھئے نیناں رس پیجے ہو
 جی جی جی بدھی ریجھے ہری سوئی بدھی کیجے ہو

निपट बंकट छवि अटके ॥

मेरे नैना निपट बंकट छवि अटके ।
 देखत रूप मदन मोहनको विथित मयूखन मटके ॥
 बारिज भवै अलक टेढी करी मुरली टेढी पाग लर लटके ।
 मीरा के प्रभु के रूप लुभानि गिरधर नागर नटके ॥

७९

जबसे मोही नंदनंदन दृष्टि पडयो जाई ।
 तबसे परलोक लोक कछू ना सोहाई ॥
 मोरनकी चन्द्रकला सीस मुकुट सोहैं ।
 केसर को तिलक भाल तीन लोक सोहैं ॥
 कुंडल की अलक भलक कपोलन पर छाई ।
 मनो मीन सरवर तजि मकर मिलन आई ॥
 कुटिल भृकुटि तिलक भाल चितवन में टौना ।
 खंजन अरु मधुप मीन भूले मृग छौना ॥
 सुंदर अति नासिका सुग्रीव तीन रेखा ।

نِٹ بنکٹ چھوی اٹکے
میرے نینا نِٹ بنکٹ چھوی اٹکے
دیکھت روپ مدن موہن کو پیت میو کھن مٹکے
بارج بھوان الک ٹیڑھی کری مُرلی ٹیڑھی پاگ پر لٹکے
میرا کے پر بھو کے روپ لبھانی گردھر ناگر گر نٹ کے

جب سے مونی تند نندن درِ شٹی پڑیو جائی
تب سے پرلوک لوک کچھو نہ سوہائی
مورن کی چندر۔ کلا سیس مُکٹ سو ہے
کیسر کو تلک بھال تین لوک موہے
کنڈل کی الک جھلک کپولن پرچھائی
منو مین سرور تجی مکر ملن آئی
کُٹل بھر کُٹی تلک بھال چتون میں ٹونا
کھنجن اُر مڈھپ مین بھولے مرگ چھونا
سندر اتی ناسکا سُگریو تین ریکھا

मोर मुकुट पीताम्बर हो गल वैजन्ती माल ॥
 गउवन के संग डोलत हो जसुमति को लाल ।
 कालिंदी के तीर हो कान्हा गउवाँ चराय ॥
 सीतल कदम की छहियाँ हो मुरली बजाय ॥
 जसुमति के दुवरवाँ हो ग्वालिन सबजाय ।
 बरजहू आपन दुलरूवा हो हमसूँ अरूभाय ॥
 ब्रन्दावन क्रीड़ा करै हो गोपिन के साथ ।
 सुर नर मुनि मन मोहे हो ठाकुर जदुनाथ ।
 इन्द्र कोप धन वरस्वो मूसल जलधार ॥
 बूझत ब्रज को राखे हो मोरे प्राण आधार ॥
 मीरा के प्रभु गिरधर हो सुनिये चितलाय ।
 तुम्हरे दरस की भूखी हो मोहि कुछ न सुहाय ॥

७७

या मोहनके मैं रूप लुभानी ।
 सुन्दर वदन कमल दल लोचन बाँकी चितवन मन्द मुसकानी ॥
 जमुना के नीरे तीरे धेनु चरायै बंसीमें गावे मीठी बानी ।
 तन मन धन गिरधर पर वारुँ चरण कंकल मीरा लपटानी ॥



(۱۱) راجا پاپ، فریہ کے فریہ لہ

(੭੭) ਸਿਆਮਨੁ ਪਾਤ ਹੈ ਜੋ ਨ ਫਲਾਇ ॥੩॥

مور مکٹ پیتامبر ہو گل بٹے جینتی مال
 گوؤن کے سنگ ڈولت ہو جسو متی کے لال
 کالندی کے تیر ہو کانہا گوواں چرائے
 سیتل کدم کی چھتیاں ہو مُرلی بجائے
 جسو متی کے دُورواں ہو گوالن سب جائے
 برجھو آپن دھلروا ہو ہم سوں اُرجھائے
 برندا بن کریڑا کرے ہو گوپن کے ساتھ
 سُرنر مُنی من موہے ہو ٹھاکر جڈ ناتھ
 اندر کوپ گھن برکھو موسل جل دھار
 بُوڑت برج کو راکھے ہو مورے پران ادھار
 میرا کے پر بھو و گردھر ہو سنئیے چت لائے
 تُمہرے درس کی بھوکی ہو موہی کچھ نہ سُہائے

۷۷

یا موہن کے میں روپ لُبھانی
 سندر بدن کمل دل لوچن بانکی چتون مند مُسکانی
 جُمنا کے نیرے تیرے دھینو چراوے بنسی میں گلوے میٹھی بانی
 تن من دھن گردھر پر واروں چرن کنول میرا لپٹانی

मीरा कहे मैं दासि रावरी दीज्यो मती विमार

७४

हमरो प्रणाम चाँके बिहारीको
मोर मुकुट माथे तिलक बिगजै कुण्डल अलकाकारी को ।
अधर मधुर पर बंसी बजावै रीझ रिझावै राधा प्यारी को ।
यह हृवि देख मगन भई मीरा मोहन गिरवरधारी को ।

७५

तनक हरि चितवौ हमरी ओर
हम चितवत तुम चितवत नाहिं दिलके बड़े कटोर ॥
मेरे आमा चितवनि तुमरो, ओर न दूजी टोर ।
तुममे हमकै एक होजी हम सी लाख करोर ॥
ऊभी टाढी अरज करतहुँ अरज करत भयो भोर ।
मीराके प्रभु हरि अविनासी देख्यौ प्राण अकोर ॥

७६

मेरो मन बासिगो गिरधर लाल सों

میرا کہے میں داسی راوری دیجیو متی و سار

۷۴

ہمرو پر نام بانکے بہاری کو
مور مُکٹ ماتھے تلک براجے کنڈل الکا کاری کو
آدھر مدھر پر بنسی بجاوے ریچھر رجاوے را دھاپاری کو
یہ چہب دیکھ مگن بھی میرا موہن گرور دھاری کو

۷۵

تنگ ہری چتوو ہمری اُور
ہم چتوَت تم چتوَت ناہیں دل کے بڑے کٹھور
میرے آسا چتوننی تمرو اور نہ دوجسی دور
تم سے ہم کوں ایک ہو جی ہم سی لاکھ کرور
اُو بھی ٹھاڑی ارج کرت ہوں ارج کرت بھو بھور
میرا کے پر بھو ہری اپناسی دیسیوں پران اکور

۷۶

میرو من بس بسیگو گردھر لال سوں

चरण घूँघरु घसत पडत है म्हे करौं स्याम सून्यारी ॥
 लाज सरम सबही मैं डारी, यो तन चरण अधारी ।
 मीरों के प्रभु गिरधर नागर झक मारो संसारी ॥

७२

हरि बिन कूण गति मेरी ।
 तुम मेरे प्रतिकूल कहिये मैं रावरी चेरी ।
 आदि अन्त निज नाँव तेरो हीया में फेरी ॥
 बेरी-बेरी पुकारि कहूँ प्रभु आरति है तेरी ।
 यौ संसार विकार सागर-बीच में घेरी ॥
 नाव फाटी प्रभु पालि बाँधो बूड़त है बेरी ।
 विरहणि पिव को बाट जोवै राखि ल्यौ नेरी ।
 दासि मीरा राम रटन है मैं सरण हूँ तेरी ॥

७३

हरी मोरे जीवन प्राण आधार
 और आसिरो नाहीं तुम बिन तीनों लोक मैंभार
 आप बिना मोहि कछू न सुहावै निरखाँ सब संसार

چرن کھوُنکھرو گھسَت پڑت ہے مھے کراں سیام سوں یاری
 لاج سَرَم سب ہی میں ڈاری، یوتن چرن آدھاری
 میرا کسے پر بھو گردھر ناگر، جھک مارو سنساری

۷۲

ہری بن کُون گتی میری
 تم میرے پرتی کُول کھٹے میں راوری چیری
 آدی انت نچ ناؤں تیر و سیا میں پھیری
 پیری پیری پُکار کہوں پر بھو آرتی ہے تیری
 یو سنسار و کار ساگر ییچ میں گھیری
 ناؤ پھاٹی پر بھو پالی باندھو بُوڑت ہے پیری
 ورہنی پیو کی باٹ جووے راکھ لیو نیری
 داسی میرا رام رٹن ہے میں سرن ہوں تیری

۷۳

ہری میرے جیون پران آدھار
 اور آسرو ناہیں تم بن تینوں لوک منجھار
 آب بنا موہے کچھ نہ سہاوے نرکھاں سب سنسار

मीरां के प्रभु गिरधर नागर

मेरी सुधि लीज्यो प्रभु आय सवेरी ॥

७०

जोगिया री प्रीतड़ी दुखड़ा री मूल ॥

हिल मिल बात बनावत मीठी पीछे जावत भूल ॥

तोड़त जेज करत नहीं सजनी, जैसे चमेली के फूल ।

मीरा कहे प्रभु तुम्हरे दरस चिन लगत हिवड़ा में सुल ॥

७१

अब नहिं मानू राणा थारी, मै बर पायो गिरधारी ॥

मणि कपूर की एक गति है, कोउ कहो हजारी ।

कंकर कंचन एक गति है, गुंज मिरच एक सारी ॥

अनड़ धणी को सरणो लीनी, हाथ सुमिरनी धारी ।

जोग कियो जब किया दिलगीरी, गुरु पाया निज भारी ॥

साधु संगत मैंह दिल राजी, भई कुटुंब से न्यारी ।

करोड़ बार समझावो मोकू चालूंगी बुध हमारी ॥

रतन जड़ित का टोपा सिर पै हार कण्ठ को भारी ।

میرا کے پرہو گردھر ناگر
میری سدھ لیجیو پرہو آئے سو یری

۷۰

جو گیارہ پریت رُی دُکھڑا رُی مُول
پَلِ مَلِ بات بناوت میٹھی پیچھے جات بھول
توڑت جیج کرت نہیں سجنی، جیسے چنبیلی کے پھول
میرا کہے پرہو تُمہرے درس بن لگت ہوڑا میں سول

۷۱

اب نہیں مانوں رانا تھاری، میں برپایو گردھاری
منی کپور کی ایک گتی ہے، کوؤ کہو ہجاری
کنکر کنچن ایک گتی ہے، گنج مرچ اک ساری
انڑ دھنی کو سر نو لینی، ہاتھ سُمرنی دھاری
جوگ کیو جب کیا دلگیری، گورو پایا نج بھاری
سادھو سنگت ماں دل راجی، بھی کُٹمب سے نیاری
کروڑ بار سمجھاؤ مُو کُوں چالونگی بدھ مھاری
رتن جڑت کا ٹوپا سر پہ ہار کٹھہ کو بھاری

वेद पुराना सब कछु देखे, अन्त न लागे बार ।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, नाम निरंतर सार ॥

६८

ग्वालड़ा थे काँई जानो पीर पराई ।
हाथ लकुटिया कांधे कमरिया, बन बन घेनु चराई ॥
चोर चोर दधि माखन खायो ब्रज की नारि सताई ।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर बिछुरत लाज न आई ॥

६९

नेहसमुंद बिच नांद परी हेली
नाहिं लगै बही जात है बेरी ॥
मलाहन करत झार नदी है
आस रही गोविन्द हि तेरी ॥
लोक लाज को लंगर टूट गयो है
बूझत हूँ बिन दामन चेरी ॥
अब तो पार लगावो नहिं प्रभु
लोग हसैंगे बजाई हथेरी ॥

وید پراناسب کچھو دیکھے ، انت نہ لا کے بار
میرا کے پرہو گردھر ناگر ، نام نہ تر سار

۶۸

گوالڑا تھے کائی جانو پیر پرائی
ہاتھ لکٹیا کاندھے کمریا ، بن بن دھینو چرائی
چور چور دہی ماکھن کھایو برج کی ناری ستائی
میرا کے پرہو گردھر ناگر بچھڑت لاج نہ آئی

۶۹

یہ سمنڈ بچ ناند پری ہیلی
ناہیں لگے بھی جات ہے پری
ملاحن کرت جہار ندی ہے
آس رہی گووند ہی تیری
لوک لاج کو لنگر ٹوٹ گیو ہے
بوڑت ہوں بن دامن چیری
اب تو پار لگاؤ نہیں پرہو
لوک ہنسیں گے بجائی ہتھیری

विपद पड़े कोई निकट न आवे, सुख में सब को सीर ॥
 बाहर घाव कछु नहिं दीसै, रोम रोम दी पीर ।
 जन मीरां गिरधर के ऊपर, सदके करूँ सरीर ॥

६६

साधो ! मैं वैरागन हर की ॥
 भूषण वस्त्र सब ही हम त्यागे, खान पान विषरानो ।
 ए ब्रजवासी कहत बावरी, मैं दासी गिरधर की ।
 ऊधो जी तुन जाओ दारुका, विपद कहो गोपियन की ॥
 जैसे जल बिन मीन ज्यों तड़पे, सो गत भई सखियन की ।
 पात पात वृन्दावन ढूँढ़यो, ढूँढ़ फिरी ब्रज घर की ॥
 आप तो जाय दारुका छाये, परि मोटी विरहन की ।
 मीरां के प्रभु गिरधर नागर, दासी (श्री) राधावर की ॥

६७

प्रभु जी ! मन माने जब तार ।
 गहरी नदिया नाव पुरानी, कैसे उतरूँ पार ॥

وِ پَد پڑے کوئی نکٹ نہ آوے ، سُکھ سب کو سیر
 باہر گھاؤ کچھو نہیں دیسے ، روم روم دی پیر
 جن میرا گردھر کے اوپر ، صدکے کروں سریر

۶۶

سادھو میں ویراگن ہر کی
 بھوشن وستر سبھی ہم تیاگے ، کھان پان وشرانو
 اے برج باسی کہت باوری ، میں داسی گردھر کی
 اُو دھو جی تم جاؤ دوارکا ، وِ پَد کہو گوپین کی
 جیسے جل بن مین جیوں تڑپے ، سوگت بھی سکھین کی
 پات پات ورندا بن ڈھونڈھیو ، ڈھونڈھ پھری برج گھر کی
 آپ تو جائے دوارکا چھائے ، پری موٹی وِ ر ہن کی
 میرا کے پرہو گردھر ناگر ، داسی رادھاور کی

۶۷

پرہوجی من مانے جب تار
 گہری ندیا ناؤ پرانی ، کیسے اتروں پار

प्रभु कंगाल तेरी दासी हां रे प्रभु प्रेम ना छो तमे प्यासी ।
 दासी ने पूर जो आशी ॥ पधारो ० ॥
 प्रभु साकर द्राक्ष खजूरी माँ हे नथी बासुदी के पूरी,
 मारे सासु नणंदनी सूली ॥ पधारो ० ॥
 प्रभु भात भातना लावूं मेवा तमे पधारो वासुदेवा
 मारे भुवन मां रजनी रेहेवा ॥ पधारो ० ॥
 हाँ रे मैं तो तजी छे लोकनी शंका प्रीतम का घर हे बंका
 बाई मीरां ए दीधा उंका ॥ पधारो ० ॥

६४

बोल मा बोल मा बोल मा रे, राधाकृष्ण विना बीजु बोल मा रे ॥
 साकर शेलडीनो स्वाद तजीने, कडवो ते लीमडो घोल मा रे ।
 चंदा सूरजनुँ तेज तजीने, आगिया संगाथे प्रीत जोड़ मा रे ॥
 हीरा माणोक भेवर तजीने, कथीर संगाथे मणि तोल मा ।
 मीरां कहे प्रभु गिरधर नागर, शरीर आप्युं समतोलमां रे ॥

६५

लागी सोई जाणे हो, कठिन लगन दी पीर ।

پر بھو کنگال تری داسی ہاں رے پر بھو پریم نا چھو تمے پیاسی
 داسی نے پُور جو آشی
 پر بھو سا کرِ دراکش کھجوری ماں ہے نتھی باسودی کے پوری
 مارے ساس نندنی سولی
 پر بھو بھات بھاتنا لاووں میوا تمے پدھارو باسو دیوا
 مارے بھون ماں رجنی رہیوا
 ہاں رے میں تو تجی چھے لوکنی شنکا پریتم کا گھر ہے بنکا
 بائی میرا اے دیدھا اُنکا

۶۴

بول ما بول ما بول مارے، رادھا کرشن ونا یسُج بول مارے
 ساکر شیلڈی نو سواد تجی نے، کڑو تے لیمڑو گھول مارے
 چندا سورجنسوں تیج تجی نے، آگیا سنگھاتے پریت جوڑ مارے
 پیرا مانیک جیور تجی نے، کتھیر سنگھاتے مَنی تول مارے
 میرا کہے پر بھو گردھر ناگر، شریر آپسوں سم تول مارے

۶۵

لاگے سوئی جانے ہو، کٹھن لکن دی پیر

काशी जाओ ने तमे गंगा जी न्हाओ ।
 प्रभु नथी पाणी पवनमां रे ॥
 जोग करो न भले जगन करावो ।
 प्रभु नथी होम हवनमां रे ॥
 बाई मीरा कहे प्रभु गिरधर नागर ।
 हरि बसे हरि जनमां रे ॥

६२

सत्संगनो रस चाख प्राणी तुं तो सत्संगनो रस चाख ॥
 प्रथम लागे तीखो ने कड़वो पछी आंबा केरी शाख ॥
 आ रे कायानो गर्व न कीजे अंते थवानी छे खाख ॥
 हस्ती ने घोड़ा माल खजाना काई न आवे साथ ॥
 सत्संगथी बे घड़ीमां मुक्ति वेद पूरे छे साख ॥
 बाई मीरां कहे प्रभु गिरधर नागर हरि चरणे चित राख ॥

६३

हाँ रे मैं तो कीधी छे ठाकुर थाली रे,
 पधारो बनमाली रे बनमाली ॥

کاشی جاؤ نے تمے گنگا جی نہاؤ
 پرہو تھی پانی پون ماں رے
 جوگ کرو نہ بھلے جگن کراؤ
 پرہو تھی ہوم ہون ماں رے
 بائی میرا کہے پرہو گردھر ناگر
 ہری بسے ہری جن ماں رے

۶۲

ست سنگنورس چاکھ پرانی تُوں تو ست سنگنورس چاکھ
 پر تھم لاگے تیکھو نے کڑوو پچھی آنبا کیری شاکھ
 آرے کایانو گرو نہ کیجے اتے تھوانی چھے کھا کھ
 ہستی نے گھوڑا مال کھجانا کائی نہ آوے ساتھ
 ست سنگتھی بے گھڑی ماں مکتی وید پورے چھ ساکھ
 بائی میرا کہے پرہو گردھر ناگر ہری چرنے چت راکھ

۶۳

ہاں رے میں تو کیدھی چھے ٹھا کرتھالی رے
 پدھارو بن مالی رے بن مالی

गनका तारण विष ओधारण सब के पूरण काम ।
 प्रभु भजन में निशि दिन राची पल पल करूं प्रणाम ॥
 गाय गाय प्रभु कुं मै रिभाऊं नृत्य करत घनश्याम ।
 मीरां कहे प्रभु गिरधरना गुण चरणकमल निज धाम ॥



मरी जावुं माया मेली रे मरी जावुं माया मेली ॥
 कोई बनावे बाग बगीचा कोई बनावे हवेली ।
 धाई धूती धन भेलूं करे कोई पांच पचासनी थेली रे ॥
 केसरवर्णी काया सुंदर मांही ऊगी विष वेली ।
 मीरा के प्रभु गिरधरना गुण पाल बांध पाणी पेहेली रे ॥

६१

हैं रे हरि बसे हरिना जन माँ ॥
 हैं रे तमे शुं करशो जई बनमां रे ॥
 भेख धरी ने तमे शीद भटको छो ।
 प्रभु नथी बन के अरण्यमां रे ॥

گنَ کا تارن وِش اودھارن سب کے پورن کام
 پر بہو بہجن میں نشی دن راجی پل پل کروں پر نام
 گائے گائے پر بہو کوں میں رجھاؤں نرتیہ کرت گہنشیام
 میرا کہے پر بہو گردھر ناگن چرن کمل نج دھام

۶۰

مری جاووں مایا میلی رے مری جاووں مایا میلی
 کوئی بناوے باگ بگیچہ کوئی بناوے حویلی
 دھائی دھوتی دھن بھیلوں کرے کوئی پانچ پچاس نی تھیلی رے
 کیسر ورنہ کایا سندر ماسنی اوگی وِش ویلی
 میرا کہے پر بہو گردھرنا گن پال باندھ پانی پہلی رے

۶۱

ہاں رے ہری بسے ہری نا جن ماں
 ہاں رے تمے مُشوں کرشو جٹی بن ماں رے
 بھیکھ دھری نے تمے شیبہ بھٹکو چھو
 پر بہو تھی بن کے ارنیہ ماں رے

कोई दिन ढोलिया कोई दिन तलाई
 कोई दिन भोई पर लोटना जी ॥
 मीरा कहे प्रभु गिरधरना गुण
 आय पड़े सो सहना जी ॥

५८

लग रहेना लग रहेना हरि भजनसें लग रहेना लग रहेना ॥
 साहेब का घर दूर है रे, जैसी लंगी खजूर ।
 चढ़े ते चाखे प्रेमरस, पड़े ते चकमाचूर ॥
 क्या बकतरका पहरेना रे, क्या ढालों की ओथ ।
 शूरे पूरे का पारखा रे, लढ़े घणी से जोर ॥
 का'न कटारी बड़ी रे, गुरु गोविन्द तलवार ।
 धनुष रूपी माला बांधरे, कबु न लागे हार ॥
 हाड़ चाम की देह बनी रे, नव नाड़ी दश कोट ।
 मीरा के प्रभु गिरधर नागर, लगी मरम की चोट ॥

५९

अब तेरो दाँब लगो है रे भज ले सुंदरश्याम ॥

کوئی دن ڈھولیا کوئی دن تلائی
 کوئی دن بھونیں پر لوٹنا جی
 میرا کہے پر بھو گردھرنا گن
 آئے پڑے سو سہنا جی

۵۸

لگ رہنا لگ رہنا ہری بھجن سے لگ رہنا لگ رہنا
 صاحب کا گھر دور ہے رے جیسے لنکی کھجور
 چڑھے تے چاکھے پریم رس پڑے تے چکماچور
 کیا بکتر کا پھیرنا رے، کیا ڈھالوں کی اوتھ
 شورے پورے کا پار کھارے، لڑھے گھنی سے جور
 کان کٹاری بڑی رے، گرو گوند تلوار
 دھنش روپی مالا باندھ رے، کسب نہ لاگے ہار
 ہاڑ چام کی دیہہ بنی رے، نو ناڑی دش کوٹ
 میرا کہے پر بھو گردھرنا گر، لکی مرم کی چوٹ

۵۹

اب تیرو داؤں لگو ہے رے بھج لے سندر شام

राज भी चल गये प्रधान भी चल गये,
 कुंभकरण बलवान ॥ बिगाड़ूं ° ॥
 कीट पतंग और ब्रह्मा भी चल गये,
 कोई न रहेगोश्रवसान ॥ बिगाड़ूं ° ॥
 बाई मीरा कहे प्रभु गिरधरना गुण,
 रख ले तू राम को ध्यान ॥ बिगाड़ूं ° ॥

५७

करना फकीरी फिर क्या दिलगीरी
 सदा मगनमें रहना जी ॥
 कोई दिन गाड़ी ने कोई दिन बंगला
 कोई दिन जंगल बसना जी ॥
 कोई दिन हस्ती ने कोई दिन घोड़ा
 कोई दिन पाँव चलना जी ॥
 कोई दिन खाजा ने कोई दिन लाडु
 कोई दिन फाकमफाका जी ॥

میرا بائی کہے پر بھو گردھرنا گُن شرنِ بردسنبھارا
ہری کے بھجن بنا جے دِن کھوئے دھک منشا جنمارا

۵۴

جو تم توڑو، پیا میں نہیں توڑوں
توسوں پریت توڑ کرشنا کون سنگ جوڑوں
تم بھئے ترور میں بھی پنکھیا
تم بھئے سرور میں تیری مچھیا
تم بھئے گِروَر میں بھی چارا
تم بھئے چندا میں بھی چکورا
تم بھئے موتی، پر بھو ہم بھئے دھاگا
تم بھئے سونا ہم بھئے سوہاگا
میرا کہے پر بھو برج کے باسی
تم مرے ٹھاکر میں تری داسی

۵۵

ہری نام بنا نر ایسا ہے
دیک بنا مندر جیسا ہے

अब तो राखो नेड़ी नेड़ी ॥
 चकोर को ध्यान लगे चंदवासूं,
 नटवा को ध्यान लगे डोरी डोरी ॥
 संत को ध्यान लग्यो राम प्यारे,
 मूरख को ध्यान लगे मेरी मेरी ॥
 मीरा के प्रभु गिरधर नागर,
 तुम पर सुरत मेरी ठेरी ठेरी ॥

५३

मोहन लागत प्यारा राणाजी मोहन लागत प्यारा ॥ टेक ॥
 जिनकी कला से हालत चालत बोलत प्राण आधार ॥
 नैन की कला में सब जुग भूल्यो, ये ही पुरुष है न्यारा ॥
 तुम ही भूठे हम ही भूठे भूठा है सब संसारा ॥
 स्त्री पुरुष के संबंध भूठे, तो फूठ्या हैया तुमारा ॥
 तुम ही कहो अरधंगा हमारी, हमकु लगायो कारा ॥
 कोटि ब्रह्माण्डमें व्याप्य रहयो है सो निज वर हमारा ॥
 साल पीताम्बर मोतिन की माला लेई अंगन में जलाया ॥
 छाप तिलक तुलसी की माला साधु संग निस्तारा ॥

اب تو را کھو نیڑی نیڑی
 چکور کو دھیان لگو چند واسوں
 تھوا کو دھیان لگو ڈوری ڈوری
 سنت کو دھیان لگیو رام پیارے
 مورکھ کو دھیان لگو میری میری
 میرا کے پرہو گردھر ناگر
 تم پر سُرت میری ٹھیری ٹھیری

موہن لاگت پیارا رانا جی موہن لاگت پیارا
 جن کی کلا سے حالت چالت بولت پران آدھارا
 نین کی کلا میں سب مُجگ بھولیو، یہ ہی پُرش ہے نیارا
 تم ہی جھوٹے ہم ہی جھوٹے جھوٹا ہے سب سنسارا
 استری پُرش کے سمبندھ جھوٹے، تو پھوٹیا ہیا تمارا
 تم ہی کہو آردھنگا ہماری، ہمکو لگایو کارا
 کوٹ برہمانڈ میں ویایہ ریہو ہے سونج ور ہمارا
 سال پیتامبر موتین کی مالا لٹی انکن میں جلایا
 چھاپ تلک تلسی کی مالا سادھ سنگ نستارا

ऊँच नीच जाने नहीं रस की रसीलणी ॥
 ऐसी कहा वेद पढ़ी छिन में विमान चढ़ी ।
 हरि जी सँ बाँध्यों हेत बैकुण्ठ में भूलणी ॥
 ऐसी प्रीति कर जोई दामि मीरा तेरे सोई ।
 पतित पावन प्रभु गोकुल अहीरणी ॥

५१

तुम सुनो दयाल म्हाँरी अरजी ॥
 भवसागर में बही जात हूँ, काढ़ो तो थँरी मरजी ॥
 इन संसार सगो नहि कोई, साँचा सगा रघुवर जी ॥
 माता पिता औ कुटुम कबीलां, सब मतलब के गरजी ॥
 मीरा की प्रभु अरजी सुण लो, चरण लगाओ थँरी मरजी ॥

५२

जलदी खबर लेना मेहरम मेरी ॥
 जल बिना मीन मरे एक छिनमें ।
 एवे अमृत पाओ तोय भेरी भेरी ॥
 बहोत दिनों का बिछोह घड़ा है ।

اونچ نیچ جانے نہیں رس کی رسیلنی
 ایسی کہاوید پڑھی چھن میں ومان چڑھی
 ہری جی سوں باندھیوہیت یکنٹھ میں جھولنی
 ایسی پریت کرے جوئی داسی میرا تیرے سوئی
 پتت پاون پرہو گوکل اہیرنی

۵۱

تم سنو دیال مہاری ارجی
 بھو ساگر میں بھی جات ہوں، کاڑھو تو تھاری مرجی
 ان سنسار سگو نہیں کوئی، سانچا سگا رگھوبر جی
 ماتا پتا او کشم کیلو، سب مطلب کے گرجی
 میرا کی پرہو ارجی سن لو، چرن لگاؤ تھاری مرجی

۵۲

جلدی کھیر لینا میہرم میری
 جل بنا میں مرے اک چھن میں
 ایوے امرت پاؤ توئے جھیری جھیری
 بہت دنوں کا بچوہ گھڑا ہے

झूठा पाट पटबरा रे झूठा दिखणी चीर ।
 साँची पियाजी री गूदड़ी जा में निरमल रहे सरीर ॥
 छप्पन भोग बुहायदों हे इण भोगन मे दागे ।
 लूण अलूणों ही भलो हे अपणे पिया जी रो सागे ॥
 देखि बिराणे निर्वाँण कूं हे क्यूँ उपजावै खीज ।
 कालर अपणो ही भली हे जामें निपजे चीज ॥
 छैल बिराणो लाख कोहे अपणे काज न होय ।
 ता के संग सिधारताँ हे भला न कहसी कोय ॥
 वर हीणो अपणो भलो हे कोही कुण्टी होय ।
 जा के संग सिधारताँ भला कहै सब कोय ॥
 अविनासी सैं बालबां जिन सैं साँची प्रीत ।
 मीरा कूं प्रभु जी मिल्या एही भक्ति की रीत ॥

५०

अच्छे मीठे चाख चाख, बेर लाई भीलणी ॥
 ऐसी कहा अचारवती, रूप नहीं एक रती ।
 नीच कुल ओछी जात अति ही कुचीलणी ॥
 जूठे फल लीन्हे राम प्रेम की प्रतीत जाण ।

جھوٹا پاٹ پٹمبرارے ، جھوٹا دیکھنی چیر
 سانجی پیاجی ری گودڑی ، جامیں نرمل رہے سریر
 چھپن بھوگ بُہایدو ہے ان بھوگن میں داگے
 لون آلونوں ہی بھلو ہے اپنو پیاجی رو ساگے
 دیکھی برانے نوان کُوں ہے کیوں اُچاوے کھیج
 کالر اپنو ہسی بھلی ہے جامیں نیچے چیج
 چھیل برانو لاکھ کو ہے اپنے کاج نہ ہوئے
 تاکے سنگ سدھار تاں ہے بھلا نہ کہسی کوئے
 ورہینو اپنو بھلو ہے کوڑھی کُشٹی ہوئے
 جا کے سنگ سدھارتاں ہے بھلا کہے سب کوئے
 او ناسی سُوں بالباں ہے جن سُوں سانجی پریت
 میرا کون پرہو جی ملیا ہے ایہی بھکتی کی ریت

۵۰

اچھے میٹھے چاکھ چاکھ ، بیر لائی بھیلنی
 ایسی کہا اچاروتی ، روپ نہیں ایک رتی
 نیچ کُل اوچھی جات اتی ہسی کُچیلنی
 جوٹھے پھل لینھے رام پریم کی پریت جان

आवण कह गये अजहूँ न आये, दिवस रहे अब थोरी ।
मीरा कहे प्रभु कब रे मिलोगे, अरज करूँ कर जोरी ॥

४८

नहिं ऐसो जन्म बारम्बार ॥
का जानूँ कछु पुन्य प्रगटे, मानुषा अवतार ।
बढ़त छिन छिन घटत पल पल, जात न लागे बार ॥
बिरछ के ज्यू पात टूटे, लगे नहिं पुनि डार ।
भव सागर अति जोर कहिए, अनंत ऊँडी धार ॥
राम नाम का बांध बेड़ा- उतर परले पार ।
ज्ञान चौसर मंडी चौहटे, सुरत पासा सार ॥
साधु संत महंत ज्ञानी, करत चलत पुकार ।
दासि मीरां लाल गिरधर, जीवणा दिन चार ॥

४९

आओ सहेलियाँ रली करो हे परघर गवण निवारी ॥
भूठा माणिक मोतिया री झोठी जग मग जोति ।
भूठा सब आभूषणां री साँची पिया जी री पोति ॥

آون کہہ گئے آجھوں نہ آئے دوس رہے اب تھوری
میرا کہے پر بھوکبرے ملوگے، آرج کروں کر جوری

۴۸

نہیں ایسو جنم بار مبار
کاجانوں کچھہ پُنیہ پر گئے، مانوشا اوتار
بڑھت چھن چھن گھٹ پل پل، جات نہ لاگے بار
بَر چھہ کے جیوں پات ٹوٹے، لکین نہیں پُنی ڈار
بھو ساگر آتی جور کہئے، انت اوٹڈی دھار
رام نام کا باندھ یڑا، اتر پرلے پار
گیان چوسر منڈی چوہئے، سرت پاسا سار
سادھہ سنت مہنت گیانی، کرت چلت پکار
داسی میرا لال گردھر، جیو نادن چار

۴۹

آو سہلیاں رلی کرو ہے پر گھر گون نواہی
جھوٹا مانک مویتاری جھوٹی جگ مگ جوت
جھوٹا سب آ بھو شناری سانچی پیاجی ری پوت

राम कहिए रे, गोविन्द कहिए रे ॥
 कंकड़ हीरा एक सारसा, हीरा किस कूं कहिए रे ।
 हीरा पण तो जद ही जाणूं, महंगा मोल बिकैये रे ॥
 कोयल कागा एक सरीसा, कोयल किसको कहिए रे ।
 कोयल पण तो तब ही जाणूं, मीठा बचन सुणइये रे ॥
 हंसा बगुला एक सरीखा, हंसा किसकूं कहिए रे ।
 हंसा पण तो जद ही जाणूं, चुग चुग मोती खइये रे ॥
 जगत भगत के आवरे है, भगत किसकूं कहिए रे ।
 भगत पणो तो जब ही जाणूं, बोल सभी का सहिये रे ॥
 मीरा के प्रमु गिरधर नागर, हरि चरणचित्त दइए रे ।
 द्वारका के ठाकुर के, सरण में जाकर रहिये रे ॥

पिया इतणी बिनती सुण मोरी, कोई कहियो रे जाय ॥
 औरन सुं रस बतियाँ करत हो, हमसे रहे चित्त चोरी ।
 तुम बिन मेरो और न कोई, मैं सरनागत तोरी ॥

رام کہئے رے ، گووند کہئے رے
 کنکڑ پیرا ایک سار سا ، پیرا کس کوں کہئے رے
 پیرا پن تو جد ہی جانوں ، مہنگا مول بکیئے رے
 کوئل کا گا ایک سری سا ، کوئل کس کو کہئے رے
 کوئل پن تو تب ہی جانوں ، میٹھا بچن سُنیئے رے
 ہنسبا گلا ایک سری کھا ، ہنسبا کس کوں کہئے رے
 ہنسبا پن تو جد ہی جانوں ، مچگ مچگ موتی کھیئے رے
 جگت بھگت کے آورے ہیں بھگت کسکوں کہئے رے
 بھگت پنو تو جب ہی جانوں ، بول سبھی کا سہیئے رے
 میرا کے برہو گر دھر ناگر ، ہری چرن چت دیئے رے
 دوار کا کے ٹھا کر کے ، سرن میں جا کر ریئے رے

پیا اتنی بنتی سُن موری ، کوئی کہیو رے جائے
 اورن سُون رس بٹیاں کرت ہو ، ہم سے رہے چت چوری
 تم بن میرو اور نہ کوئی ، میں سر ناگت توری

निरत करूँ मैं प्रीतम आगे,
 तौ अमरा पुर पाऊँ ए माय ॥
 मो अबला पर किरपा कीज्यो,
 गुण गोविंद के गाऊँ ए माय ।
 मीरां के प्रभु गिरधर नागर,
 रज चरणों की पाऊँ ए माय ॥

४५

सइयाँ ! तुम बिनु नींद न आवै हो ।
 पलक पलक मोहे युग से बीतै, छिन छिन विरह जरावै हो ॥
 प्रीतम बिन तिम जाइ न सजनी, दीपग भवन न भावै हो ।
 फूलन सेज सूल होइ लागी, जागत रैणि बिहावै हो ॥
 कासुं कहूँ कुण मानै मेरी, कह्यौ को पतियावै हो ।
 प्रीतम पनग डस्यो उर मेरो, लहर लहर जिय जावै हो ॥
 दादुर मोर पपईया बोले, कोयल सबद सुणावै हो ।
 उमगि घटा घन ऊलरि आई, बीजू चमक डरावै हो ॥
 है कोई जग में राम सनेही, ए उरि साल मिटावै हो ।
 मीरां के प्रभु हरि अविनासी, नैनौं देख्यौं भावै हो ॥

نَرَت کروں میں پریتم آگے
 تو امرا پور پاؤں اے مائے
 موا بلاپر کرپا کیجیو
 گُن گووند کے گاؤں اے مائے
 میرا کے پرہو گردھر ناگر
 رَج چرنوں کی پاؤں اے مائے

۴۵

سیتیاں! تم بن نیند نہ آوے ہو
 پلک پلک موتے یگ سے ییتیں چھن چھن ورہ جراوے ہو
 پریتم بن تم جانی نہ سجنی دیگ بہون نہ بھاوے ہو
 پھولن سیج سول ہوئی لاگی جاگت رین بہاوے ہو
 کاسوں کہوں کُن مائے میری کہیاں کو پتیاوے ہو
 پریتم پنک ڈسیو ارمیرو، لہر لہر جاوے ہو
 دائر مور پتیا بولے، کوئل سبَد سناوے ہو
 اُمگ گھٹا گھن اَلری آئی ییجو چمک ڈرواے ہو
 ہے کوئی جگ میں رام سینھی اے اُر سال مٹاوے ہو
 میرا کے پرہو ہری آویناسی: نینا دیکیاں بھاوے ہو

खाण्ड धार भक्ति की न्यारी, काटि है जम फैसी ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, सन्द सरोवर धँसी ॥

४४

राम नाम मेरे मन बसियो,
रसिया राम रिझाऊँ ए माय ।
मैं मन्द भागिन करम अभागिण,
कीरत कैसे गाऊँ ए माय ॥
बिरह पिंजर की बाड़ सखी री,
उठकर जी हुलसाऊँ ए माय ।
मन कूँ मार सजूँ सत्गुरु सुँ,
दुरमत दूर गमाऊँ ए माय ॥
डंको नाम सुरत की डोरी,
कड्यां प्रेम चढ़ाऊँ ए माय ।
ज्ञान को ढोल बन्यों अति भारी,
मगन होय गुण गाऊँ ए माय ॥
तन करूँ ताल मन करूँ मोरचंग,
सोती सुरत जगाऊँ ए माय ।

کھانڈ دھار بھکت کی نیاری، کاٹی ہے جم پھنسی
میرا کے پرہو گردھر ناگر، سبد سروور دھنسی

۴۴

رام نام مرے من بسیو
رسیارام رجھاؤ اے مائے
میں مند بھاگن کرم ابھاگن
کیرت کیسے گاؤں اے مائے
برہ پنجر کی باڑہ سکھی ری
اُنھ کر جی ہلساؤں اے مائے
من کوں مار سجدوں ست گُروسوں
مُکرمَت دور گماؤں اے مائے
ڈنکو نام مُسرت کی ڈوری
کڈیاں پریم چڑھاؤں اے مائے
گیان کو ڈھول بنیو آتی بھاری
مگن ہوئے گُن گاؤں اے مائے
تن کروں تال من کروں مورچنگ
سوتی مُسرت جگاؤں اے مائے

साजनियां दुसमन होयं बैठ्या,
 सब ने लगूं कड़ी ॥
 तुम बिन साजन कोई नहिं है,
 डिगी नाव मेरी समंद अड़ी ॥
 दिन नहिं चैन रैण नहिं निदरा,
 सूखूं खड़ी खड़ी ॥
 बाण विरह का लग्या हिय में,
 भूलूं न एक घड़ी ॥
 पत्थर की तो अहिल्या तारी,
 बन के बीच पड़ी ॥
 कहा बोझ मीरा में कहिये,
 सौ पर एक घड़ी ॥

४३

मेरे मन राम नाम बसी ॥
 तेरे कारण स्याम सुंदर, सकल लोगौं हँसी ॥
 कोई कहै मीरा भई बावरी, कोई कहे कुल नासी ।
 कोई कहै मीरा दीप आगरी नाम पिया सुं रसी ॥

ساجنیاں دُسمن ہوئے بیٹھیا
 سب نے لگوں کڑی
 تم بن ساجن کوئی نہیں ہے
 ڈگی ناؤ مری سمند اڑی
 دن نہیں چین رین نہیں نندرا
 سوکھوں کھڑی کھڑی
 بان ورہ کالگیا ہیامیں
 بھولوں نہ ایک گھڑی
 پتھر کی تو اہلیا تاری
 بن کے بیچ پڑی
 کہا بوجھ میرا میں کہے
 سو پر ایک گھڑی

مرے من رام نام بسی
 تیرے کارن سیام سندر، سکل لوگاں ہنسی
 کوئی کہے میرا بھٹی باؤری، کوئی کہے کُل ناسی
 کوئی کہے میرا دیپ آگری، نام پیاں سوں رسی

चालौ वाही देस प्रीतम पावां चालां वाही देस ।
 कहो तो कुसूमल साड़ी रंगावां, कहो तो भगवा भेस ॥
 कहो तो मोतियन मांग भरावां, कहो छिरकावां केस ।
 मीरा के प्रभु गिरधर नागर, सुण गयो बिड़द नरेस ॥

कोई कलु कहे मन लागा ॥
 ऐसी प्रीत लगी मन मोहन, ज्यूं सोने में सुहागा ।
 जनम जनम का सोया मनुवाँ, सत्गुरु सब्द सुण जागा ॥
 मात पिता सुत कुटुंब कबीला, टूट गया ज्यूं तागा ।
 मीरां के प्रभु गिरधर नागर, भाग हमारा जागा ॥

थे तो पलक उघाड़ो दीनानाथ,
 मैं हाजिर नाजिर कद की खड़ी ॥

چالاں واہی دیس پریتم پاواں چالاں واہی دیس
 کہو تو کُسو مل ساڑی رنگاواں، کہو تو بھگوا بھیس
 کہو تو مو تین مانگ بھراواں، کہو چہر کاواں کیس
 میرا کے پر بھو گردھر ناگر، سُن گِیو بُڑد نریس

کوئی کچھ کہے من لاگا
 ایسی پریت لگی من موہن، جیوں سونے میں سُہاگا
 جنم جنم کا سویا منواں، ست گروسد سُن جاگا
 مات پتا سُن کٹمب کیلا، ٹوٹ گیا جیوں تاگا
 میرا کے پر بھو گردھر ناگر، بھاگ ہمارا جاگا

تھے تو پلک اُدھاڑو دینا ناتھ
 میں حاضر ناظر کد کی کھڑی

श्रीराधे रानी दे डारो बांसुरी मोरी ॥

जा बंसी में मेरी प्राण बसत है, सो बंसी गई चोरी ॥
 काहे से गाऊँ प्यारी काहे से बजाऊँ, काहे से लाऊँ गईयाँ फेरी ।
 मुख से गावो कान्हा हाथों से बजाओ, लकुटी से लाओ गईयाँ घेरी ॥
 हा हा करत तेरे पैयां परत हूँ, तरस खाओ प्यारी मोरी ।
 मीरा के प्रभु गिरधर नागर, बंसी लेकर छोरी ॥

नैनाँ लोभीरे बहुरि सके नहिं आय ।

रोम रोम नख सिख छबि निरखत, ललकि रहे ललचाय ॥
 मैं ठाढ़ी गृह आपणेरी, मोहन निकसे आय ।
 बदन चंद्र परकासत हेली, मंद मंद मुसकाय ॥
 लोक कुटुंबी वरज बरजहिं, बतियाँ कहत बनाय ।
 चंचल निपट अटक नहिं मानत, पर हथ गये बिकाय ॥
 भली कहो कोई बुरी कहो मैं, सब लई सीस चढ़ाय ।
 मीरां प्रभु गिरधरलाल बिन, पल छिन रहयो न जाय ॥

شری رادھے رانی دے ڈارو بانسری موری
 جانبسی میں میری پران بست ہیں، سونسی گئی چوری
 کا ہے۔ گاؤں پیاری کا ہے سے بجاؤں، کا ہے سے لاؤں گیتاں پھیری
 مکھ سے گاؤں کانھا ہاتھوں سے بجاؤ، لکٹی سے لاؤ گیتاں گھیری
 ہا ہا کرت ترے پشیاں پرت ہوں، ترس کھاؤ پیاری موری
 میرا کے پر بہو گردھر ناگر، بنسی لے کر چھوری

نیناں لو بھی رے بھوری سکے نہیں آئے
 روم روم نکھ سکھ چھبی نرکھت لَلکِ رہے للچائے
 میں ٹھاڑی گرہ اپنے موہن نِکے آئے
 بدن چندر پرکاست ہولی مند مند مُسکائے
 لوک کُٹمی برج برجہیں، بتیاں کہت بنائے
 چنچل نیٹ اٹک نہیں مانت، پرہتہ گتے بکائے
 بھلی کہو کوئی بری کہو میں، سب لٹی سیس چڑھائے
 میرا پر بہو گردھر لال بن، پل چھن رہیو نہ جائے

देस विदेस संदेस न पहुँचै, होय अंदेसा भारी ।

गिणतां गिणतां घस गई रेखा, आंगुरियां की सारी ।

अजहुं नहिं आये मुरारी ॥

बाजत भांभ मृदंग मुरलिया, बाज रही एकतारी ॥

आई बसंत कंत घर नाहीं, तन में ज्वर भया भारी ।

श्याम मन कहा विचारी ॥

अब तो मेहर करो मुझ ऊपर, चित्त वै सुगो हमारी ।

मीरां के प्रभु मिलज्यो माधो, जनम जनम की कुंवारी ।

लगी दरसन की तारी ॥

३७

पतियाँ मैं कैसे लिखूं, लिखि ही न जाई ॥

कलम भरत मेरे कर कंपत, हिरदो रह्यो थरराई ।

बात कहूं मोहे बात न आवै, नैन रहे भरराई ॥

किस विधि चरण कलम हों गहि हों, सब ही अंग थरराई ।

मीरां के प्रभु गिरधर नागर, सब ही दुःख बिसराई ॥

دیس بدیس سندیس نہ پہونچے، ہوئے اندیسا بھاری
 گنتاں گنتاں گھس گئی ربکھا، آنکریاں کی ساری
 آجھوں نہیں آئے مراری
 باجت جہانجھ مردنگ مُرلیا، باج رہی اِکتاری
 آئی بسنت کنت گھر ناپیں، تن میں مُجور بھیا بھاری
 شیاں من کہا وچاری
 اب تو میہر کرو مجھ اوپر، جت دے سنو ہماری
 میرا کسے پرہو ملجیو مادھو، جنم جنم کی کنواری
 لگی درس کی تاری

۳۷

پتیاں میں کیسے لکھوں، لکھی ہی نہ جائے
 کلم بھرت مرے کر کنت، بردو رہیو تھرائی
 بات کہوں موہے بات نہ آوے، نین رہے جھرائی
 کس وِ دھی چرن کلم ہوں گئی ہوں، سب ہی انگ تھرائی
 میرا کسے پرہو گردھر ناگر، سب ہی دُکھ بسرائی

जोगिया ने कहियो रे आदेस
 आऊँगी मैं नाहिं रहूँ रे, कर जटाधारी भेस ॥ १ ॥
 चीर को फाड़ूँ कंथा पहिँगी, लेऊँगी उपदेस ।
 गिणते गिणते घिस गई रे, मेरी आंगुलियां की रेख ॥ २ ॥
 माला मुद्रा भेष लूँ रे, खप्पड़ लेऊँ रे हाथ ।
 जोगिन होय जग ढूँढसूँ रे, रावलिया के साथ ॥ ३ ॥
 प्राण हमारा वहाँ बसत है, यहाँ तो खाली खोड़ ।
 मात पिता परिवार सूं रे, रही तिनका तोड़ ॥ ४ ॥
 पांच पचीसों बस किए रे, मेरा पला न पकड़े कोय ।
 मीरा व्याकुल विरहणी, कोई आन मिलावे मोय ॥

होरी पिया बिन लागे खारी, सुनिरी सखी मेरी प्यरी ॥
 सूनों गांव देस सब सूनों, सूनी सेज अटारी ।
 सूनी विरहन पिय बिन डोले, तज दई पीव पियारी ॥
 भई हूँ या दुःखकारी ॥

جو گیا نے کھیورے آدیس
 آونگی میں ناہیں رہوں رے، کرجٹا دھاری بھیس
 چیر کو پہاڑوں کتھا پہرونگی، لیٹونگی اُپدیس
 گتے گتے گھس گئی رے، میری آنکھلیا کی ریکھ
 مالا مُدرا بھیش لوں ری، کھپّر لیٹوں رے ہاتھ
 جوگن ہوئے جگ ڈھونڈسوں رے، راولیا کے ساتھ
 یران ہمارا وہاں بَست ہے، یہاں توکھالی کھوڑ
 مات پتا پریوار سوں رے، رہی تنکا توڑ
 پانچ پچیسوں بس کتے رے، میرا پلا نہ پکڑے کوئے
 میرا یا کُل ورہنی، کوئی آن ملاوے موئے

ہوری پیابن لاگے کھاری، سُزری سکھی میری پیاری
 سونو گاؤں دیس سب سونو، سونی سیج اٹاری
 سونی ورہن پیا بن ڈولے، تچ دئی پیو پیاری
 بھٹی ہوں یا دکھ کاری

‘मीरा’ के प्रभु गिरधर नागर

सुंदर स्याम सुधर रस लोना ॥

३३

अब जागो मोहन प्यारे ॥

मात यशोदा दूध भात लिये बैठी प्रात पुकारे ।
आ मेरे मोहन आ मेरे श्याम, माखन मिसरी खा जारे ॥
बन बिचरन को गऊँ ठाढ़ी, ग्वाल गोपी मिल सारे ।
तुमरे बिन इक पग नहिँ चालें, राह तकत सब हारे ॥
दासी मीरा झुक झुक देखत, श्याम सुरत मन मारे ।
न तुम सोये न मैं जगाऊँ, लोक भरम भये सारे ॥

३४

राणा जी मुझे यह बदनामी लगे मीठी ॥
कोई निंदा कोई विदो मैं तो, चलूंगी चाल अनूठी ।
सांकड़ी गली में सत्गुरु मिलिया, क्युं कर फिरँ अपूठी ॥
सत्गुरु जी सूं बातज करतां, दुरजन लोगां ने दीठी ।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, दुरजन जलो जा अंगीठी ॥

میرا کے پرہو گردھر ناگر
سندر سیام سُدر رس لونا

۳۳

اب جاگو موہن پیارے
مات یشودا دودھ بہات لے بیٹھی پرات پکارے
آمرے موہن آمرے شیاہ، ماکھن مصری کھاجا رے
بین بیچرن کو گتویں ٹھاڑیں، گوال گوپی مل مارے
تھرے بن اک پگ نہیں چالیں، راہ تکت سب ہارے
داسی میرا جُھک جُھک دیکھت، شیاہ صورت من مارے
نا تم سوئے نا میں جگاؤں، لوک بھرم بھئے سارے

۳۴

رانی جی مجھے یہ بدننامی لگے میٹھی
کوئی نندو کوئی وندو میں تو، چلونگی چال انوٹھی
سانکڑی گلی میں ست گرو ملیا، کیوں کر پھروں آپٹوٹھی
ستگرو جی سوں باتج کرتاں، دُرجن لوگاں نے دیتھی
میرا کے پرہو گردھر ناگر، دُرجن جلو جا انگیٹھی

राम नाम रस पीजै

मनुआ राम नाम रस पीजै ।

तज कुसंग सतसंग बैठ नित

हरि चरचा सुनि लीजै ॥

काम क्रोध मद लोभ मोहकूं

बहा चित्त सं दीजै ।

‘भीरा’ के प्रभु गिरधर नागर

ताहि के रंग में भीजै ॥

या ब्रज में कछु देख्यो री टोना ॥

ले मटकी सिर चली गुजरिया

आगे मिले बाबा नंदजी के छोना ।

दधि को नाम बिसर गयो प्यारी

‘ले लेहु री कोई स्याम सलोना’ ॥

बिन्द्रावन की कुन्ज गलिन में आंख लगाय गयो मनमोहना ।

رام نام رَس پیجے
 مَنُوا رام نام رَس پیجے
 تَج کُسنِگ سَتسَنگ یِٹھ نِت
 ہری چَرچا سَن لیجے
 کام کرو دھ مَدھ لوبھ موہ کُوں
 بھا چِت سے دیجے
 میرا کے پر بھو گردھر ناگر
 تباہی کے رنگ میں بھیجے

یا برج میں کچھو دیکھیوری ٹونا
 لے مٹکی سر چلی گجریا
 آگے ملے بابا تند جی کے چھونا
 ددھی کو نام بَسر گیو پیاری
 لے لیہوری کوئی سیام سلونا
 بندرابن کی کُنچ گلن میں آنکھ لگاڑے گیو من موہنا

मैं गिरधर के घर जाऊँ ॥

गिरधर म्हांरो सांचो प्रीतम

देखत रूप लुभाऊँ ॥

रैण पड़ै तब ही उठ जाऊँ

भोर भये उठ आऊँ ॥

रैण दिना वा के संग खेलूं

ज्यूं त्यूं ताही रिभाऊँ ॥

जो पहिरावै सोई पहिरूं

जो दे सोई खाऊँ ॥

मेरी उण की प्रीत पुराणी

उण बिन पल न रहाऊँ ॥

जहां बैठावैं तितही बैठूं

बेचै तो बिक जाऊँ ॥

‘मीरा’ के प्रभु गिरधर नागर

बार बार बलि जाऊँ ॥

میں گردھر کے گھر جاؤں
 گردھر مہاروں سانچو پریتم
 دیکھت روپ لُبھاؤں
 رین پڑے تب ہی اٹھ جاؤں
 بھور بھٹے اُٹھ آؤں
 رین دنا واکے سنگ کھیلوں
 جیوں توں تاہی رِجھاؤں
 جو پہراوے سوئی پہروں
 جو دے سوئی کھاؤں
 میری اُن کی پریت پرانی
 اُن بن پل نہ رہاؤں
 جہاں بیٹھاوے تَت ہی بیٹھوں
 بیچے تو بک جاؤں
 میرا کے پر بھو گردھر ناگر
 بار بار بلی جاؤں

स्याम ! मने चाकर राखो जी,
गिरधरिलाल ! चाकर राखो जी ॥

चाकर रह सूं बाग लगा सूं, नित उठ दरसण पासूं ।
बिन्द्राबन की कुंजगलिन में, तेरी लीला गासूं ॥
चाकरी में दरसण पाऊँ, सुभिरन पाऊँ खरची ।
भाव भगति जागीरी पाऊ, तीनूं बातां सरसी ॥
मोर मुगट पीताम्बर सोहे, गल बैजन्ती माला ।
बिन्द्राबन में धेनु चरावे, मोहन मुरली वाला ॥
हरे हरे नित बाग लगाऊँ, बिच बिच राखूं कयारी !
सांवरिया के दरसण पाऊँ, पहर कुसुम्मी सारी ॥
जोगी आया जोग करण कूं, तप करण सन्यासी ।
हरि भजन कूं साधु आयो, बिन्द्राबन के बासी ॥
'भीरा' के प्रभु गहिर गंभीरा, सदा रहो जी धीरा ।
आधी रात प्रभु दरसन दीन्हें, प्रेम नदी के तीरा ॥

U 4630

سیام منے چاکر راکھو جی
گردھری لال، چاکر راکھو جی

چاکر رہ سوں باگ لگاسوں، نت اُٹھ درسن پاسوں
بندرا بن کی کُنچ گلن میں، تیری لیل لگاسوں
چاکری میں درسن پاؤں، سُمرن پاؤں کھرچی
بھاؤ بھگتی جاگیری پاؤں، تینوں باتاں سرسی
مور مُگٹ پیتا مبر سو ہے، گل بیجنتی مالا
بندرا بن میں دھینو چراوے، موہن مُرلی والا
ہرے ہرے نت باگ لگاؤں، بیج بیج راکھوں کیاری
سانوریا کے درسن پاؤں، پھر کُسمبھی ساری
جوگی آیا جوگ کرن کُوں، تپ کرنے ستیاسی
ہری بھجن کُوں سادھو آیو، بندرا بن کے باسی
میرا کے پرہو گھر گنبھیرا، سدا رہو جی دھیرا
آدھی رات پرہو درسن دینھے، پریم ندی کے تیرا

मन रे परसि हरि के चरण ॥
 सुभग सीतल कंवल कोमल
 त्रिविध ज्वाला हरण ।
 जिन चरण प्रह्लाद परसे
 इंद्र पदती धरण ॥
 जिन चरण ध्रुव अटल कीन्हें
 राख अपनी सरण ।
 जिन चरण ब्रह्माण्ड भेंटयो
 नख सिखां सिरी धरण ॥
 जिन चरण प्रभु परस लीने
 तरी गोतम - धरण ।
 जिन चरण काली नाग नाथ्यो
 गोप लीला करण ॥
 जिन चरण गांवरघन धारयो
 गर्व मघवा हरण ।
 'दासि मीरा' लाल गिरधर अगम तारण तरण ॥

من رے پرسی ہری کے چرن
 سُبھگ سیتل کنول کومل
 تری ودھ جوالا ہرن
 جن چرن پرہلاد پرسے
 اندر پدتی دھرن
 جن چرن گھڑو اٹل کینیہیں
 راکھ اپنی سرن
 جن چرن برہمانڈ بھیٹیو
 نکھ سکھاں سیری دھرن
 جن چرن پرہو پرس لینے
 تری گوتم دھرن
 جن چرن کالی ناگ ناتھیو
 گوپ لیل کرن
 جن چرن گووردھن دھاریو
 گرو مگھوا ہرن
 داسی میرا لال کردھر آگم تارن ترن

बाला मैं वैरागण हूँगी ।
 जिन भेषां म्हारो साहिव रीके
 सोही भेष धरूँगी ॥
 सील संतोष धरूँ घट भीतर
 समता पकड़ रहूँगी ।
 जा को नाम निरञ्जन कहिये
 ता को ध्यान धरूँगी ॥
 गुरु के ज्ञान रंगू तन कपड़ा
 मन मुद्रा पैरूँगी ।
 प्रेम प्रीत से हरि गुण गाऊ
 चरणन लिपट रहूँगी ॥
 यातन की मैं करूँ कींगरी
 रसना नाम कहूँगी ।
 'मीरा' के प्रभु गिरधर नागर
 साधा संग रहूँगी ॥

بالا میں بیراگن ہونگی
 جن بھیشاں مہارو صاحب ریجھہ
 سوہی بھیش دھرونگی
 سیل سنتوش دھروں گھٹ بھیت
 سمتا پکڑ رہونگی
 جا کو نام نرتجن کہے
 تاکو دھیان دھرونگی
 گرو کے گیان رنگوں تن کپڑا
 من مُدرا پیرونگی
 پریم پریت سے ہری گُن گاؤنگی
 چرنن لپٹ رہونگی
 یاتن کی میں کروں کینگری
 رَسنا نام کہونگی
 میرا کے پرہو گردھر ناگر
 سادھا سنگ رہونگی

घर आंगण न सुहावे पिया बिन मोहि न भावे ॥

दीपक जोय कहा करूं सजनी

पिया परदेस रहावे ।

सूनी सेज जहर ज्यूं लागे,

सिसक सिसक जिय जावे ॥

नैण निंदरा नहि आवे ॥

कद की ऊभी मैं मग जोऊं

निस दिन विरह सतावे ।

कहा कहूं कछु कहत न आवे

हिवडो अति अकुलावे ॥

हरि कब दरस दिखावे ॥

ऐसो है कोई परम सनेही

तुरत सनेसो लावे ।

वा बिरियां कद होसी मुझ को,

हरि हंस कण्ठ लगावे ॥

‘मीरा’ मिल होरी गावे ॥

گھر آنکن نہ سُہاوے پیا بنا موہی نہ بھاوے

دیک جوئے کہا کروں سجنی

پیا پردیس رہاوے

سونی سیج جہر جیوں لاگے

سسک سسک جیا جاوے

نین نندرا نہیں آوے

کد کی او بھی میں مگ جوؤں

نس دن ورہ ستاوے

کہا کہوں کچھو کہت نہ آوے

ہوڈو اتی اکلاوے

ہری کب درس دکھاوے

ایسو ہے کوئی پر م سنیہی

تُرت سنیسو لاوے

وا بریاں کد ہوسی مجھ کو

ہری ہنس کٹھ لگاوے

میرا مل ہوری گاوے

अंग भभूत गले मृगछाला यो तन भसम करूं री ।

अजहुं न मिल्या राम अबिनासी बन-बन बीच फिरूं री ॥

रोऊं नित टेरी टेरी ॥

जन मीरा कूं गिरधर मिलिया दुख मेटण सुख भेरी ।

रूम-रूम साता भइ उरमें मिट गई फेरा फेरी ॥

रहूं चरननि तरचेरी ।

२५

पपइया रे पिव की वाणि न बोल ।

सुणि पावे ली विरहणी रे थारी गलेली पांख मरोड़ ॥

चांच कटाऊं पपइया रे ऊपर कालो रे लूण ॥

पिव मेरा में पिव की रे तू पिव कहै सु कूण ॥

थारा सबद सुहावणा रे जो पिव मेला आज ।

चांच मंदाऊं थारी सोवनी रे तू मेरे सिरताज ॥

प्रीतम कूं पतियां लिखूं रे कागा तू ले जाय ।

जाइ प्रीतम जी सुं यूं कहै रे थारी विरहण धानन खाय ॥

‘मीरा’ दासी व्याकुली रे पिव पिव करत विहाय ।

बेग मिलो प्रभु अंतरजामी तुम बिन रहचौय न जाय ॥

انگ بےبہوت گلے مِرگ چھالا یو تن بھسم کروں ری
 اجہوں نہ ملیا رام آبناسی بن بن بیچ پھروں ری
 روؤں نت ٹیری ٹیری
 جَن میرا کون گردھر ملیا دکھ میٹن سکھ بھیری
 رُوم رُوم سانا بھئی اُرمیں مٹ گئی پھیرا پھیری
 رہوں چرنن تر چیری

۲۵

پیارے پیو کی وانی نہ بول
 سنی پاوے لی وِ رہنی رے تھاری رالیلی پانکھ مروڑ
 چانچ کٹاؤں پیارے اوپر کالورے لون
 پیو میرا میں پیو کی رے تو پیو کہے سُو کون
 تھارا سبَد سُہاؤنا رے جو پیو میلا آج
 چانچ منڑھاؤں تھاری سوونی رے تو میرے سرتاج
 پریم کون پتیاں لکھوں رے کاگا تو لے جائے
 جائی پریم جی سوں یوں کہے رے تھاری ورہنی دھانن کھائے
 میرا داسی ویا کُلی رے پیو پیو کرت وہائے
 ویگ ملو پرہو انتر جامی تم بن رہیو نہ جائے

तुमरे कारण सब सुख छोड़या
 अब मोहि क्यूं तरसावौ हौं ।
 बिरह-विथा लागी उर अंतर
 सो तुम आय बुझावौ हौं ॥
 अब छोड़त नहिं बणै प्रभुजी
 हंस कर तुरत बुलावौ हौं ।
 मीरा दासी जनम-जनम की
 अंग से अंग लगावौ हौं ॥

करुणा सुणो स्याम मेरी ।
 मैं तो हांय रही चेरी तेरी ॥
 दरसण कारण भइ बावरी बिरह-विथा तन घेरी ।
 तेरे कारण जोगण हूंगी दूंगी नगर बिच फेरी ॥
 कुंज-बन हेरी-हेरी ॥

تُم رے کارن سب سُکھ چھوڈیا
 اب موہے کیوں تر ساؤو ہو
 برہ بتھیا لاگی اُر اُنتر
 سو تم آئے بچھاؤو ہو
 اب چھوڑت نہیں بنے پر بھوجی
 ہنس کر تُرت بلاؤو ہو
 میرا داسی جنم جنم کی
 انگ سے انگ ملاؤو ہو

کرونا سنو سیام میری
 میں تو ہوئے رہی چیری تیری
 درس کارن بھی باوری برہ وتھا تن گھیری
 تیرے کارن جو گن ہونگی دونگی نگریچ پھیری
 کنج بن پیری پیری

राम मिलण के काज सखी,

मेरे आरति उर में जागी री ॥

तड़फत-तड़फत कल न परत है,

बिरह बाण उर लागी री ।

निस दिन पंथ निहारूं पिवको,

पलक न पल भरि लागी री ॥

पीव-पीव मैं रटूं रात-दिन,

दृजी सुध - बुध भागी री ।

बिरह भुजंग मेरो डस्यो है कलेजो,

लहर हलाहल जागी री ॥

मेरी आरति मेटि गोसाई,

आय मिलौ मोहि सागी री ।

मीरा ब्याकुल अति उकलाणी,

पिया की उमंग अति लागी री ॥

رام ملن کے کاج سکھی
 میرے آرتی اُر میں جاگی ری
 تڑپت تڑپت کل نہ پرت ہے
 بَرہ بان اُر لاگی ری
 نیس دن پنتھ نہاروں پیو کو
 پلک نہ پل بھر لاگی ری
 پیو پیو میں رٹوں رات دن
 دوجی سُدھ بُدھ بھاگی ری
 بَرہ بھجنگ مروڈ سیو ہے کلیجو
 لہر ہلاہل جاگی ری
 میری آرتی میٹ گوسائیں
 آئے ملیو موہی ساگی ری
 میرا ییاکل اتی اُکلانی
 پیا کی اُنگ اتی لاگی ری

दादर मोर पपइया बोलै
 कोयल मधुरे साज ।
 उमंग्यो इंद्र चहुं दिसि बरसै,
 दामणि छोडी लाज ॥
 धरती रूप नवा-नवा धरिया
 इंद्र मिलण कै काज ।
 मीरा के प्रभु हरि अत्रिनासी
 बेग मिलो सिरराज ॥

२१

सोवत ही पलका में मैं तो
 पलक लगी पल में पिव आये ।
 मैं जु उठी प्रभु आदर देण कूं,
 जाग पड़ी पिव टूँढ न पाये ॥
 और सखी पिव सोय गमाये,
 मैं जू सखी पिव जागि गमाये ।
 मीरा के प्रभु गिरधर नागर,
 सब सुख होय स्याम घर आये ॥

دادر مور پییا بولے
 کوئل مُدھرے ساج
 اُنکیو اندر چھوں دسی برسے
 دامنی چھوڑی لاج
 دھرتی روپ نوا نوا دھریا
 اندر ملن کے کاج
 میرا کے پر بھو ہری آبِ ناسی
 ییگ ملو سراج

سووت ہی پلکا میں میں تو
 پلک لگی پل میں پو آئے
 میں جواٹھی پر بھو آدر دین کوں
 جاگ پڑی پو ڈھونڈ نہ پاتے
 اور سکھی پو سوئے گماتے
 میں جوسکھی پو جاگ گماتے
 میرا کے پر بھو گردھر ناگر
 سب سکھ ہوئے سیام گھر آئے

बरसै बदरिया सावन की,
 सावन की मन भावन की ॥
 सावन में उमग्यो मेरो मनवा
 भनक सुनी हरि आवन की ।
 उमड़ घुमड़ चहुं दिससे आयो
 दामण दमके भर लावन की ॥
 नान्हीं नान्हीं बूदन मेहा बरसै
 सीतल पवन सोहावन की ।
 मीरा के प्रभु गिरधर नागर,
 आनंद मंगल गावन की ।

२०

सुनी हो में हरि आवन कि अवाज ।
 महल चढ़-चढ़ जोऊं मेरी सजनी ।
 कब आवै महाराज ॥

برسے بدریا ساون کی
 ساون کی من بھاون کی
 ساون میں اُمکیو میرو منوا
 بھنک سنی ہری آون کی
 امڑ گھمڑ جھوں دس سے آيو
 دامنی دمکے جھر لاون کی
 نانھی نانھی بوندن مینھا برسے
 سیٹل پون سُہاون کی
 میرا کے پر بھو گردھر ناگر
 آتند منگل گاؤن کی

سنی ہو میں ہری آون کی آواج
 محل چڑھ چڑھ جوؤں مری سجنی
 کب آوے مہاراج

मैं अभागण रही सोय री ॥

फारुंगी चीर करुं गल कंथा

रहूंगी बैरागण होय री ।

चुड़ियां फोरुं मांग बखेरुं

कजरा मैं डारुं धोय री ॥

निस बासर मोहि बिरह सतावै

कल न परत पल मोय री ।

मीरा के प्रभु हरि अविनासी

मिल बिछड़ो मत कोय री ॥

१८

बादल देख डरी हो, स्याम ! मैं बादल देख डरी ॥

काली - पीली घटा ऊमड़ी बरस्यो एक घरी ।

जित जाऊं तित पाणी पाणी हुई सब भूम हरी ॥

जाका पिय परदेस बसत है भीजूं बहार खरी ।

मीरा के प्रभु हरि अविनासी कीजो प्रीत खरी ॥

میں ابھان رہی سوئے ری
 پہارونگی چیر کروں گل کتھا
 رہوں گی پیراگن ہوئے ری
 چوڑیاں پہوروں مانگ بکھیروں
 کجرا میں ڈاروں دھوئے ری
 نسِ باسر موہی برہ ستاوے
 کل نہ پرت پل موئے ری
 میرا کے پرہو ہری اِناسی
 مل بچھڑو مت کوئے ری

بادل دیکھ ڈری ہو سیام میں بادل دیکھ ڈری
 کالی پیلی گھٹا اوڑی برسو ایک گھری
 جت جاؤں ت پانی پانی ہوئی سب بھوم ہری
 جا کا پیا پردیس بست ہے بھیجوں بہار کھری
 میرا کے پرہو ہری اِناسی کیجو پریت کھری

जुगन जुगन से बिछड़ी मीरा

घर में लीनी लाय ।

१६

कोई कहियो रे प्रभु आवन की ।

आवन की मन भावन की ॥

आप न आवै लिख नहीं भेजै

बाण पडी ललुचावन की ।

ए दोउ नैण कहयो नहीं मानै

नदियां बहैं जैसे सावन की ॥

कहा करूं कछु नहीं बस मेरो

पांख नहीं उड़ जावन की ।

मीरा कहै प्रभु कब र मिलोगे

चेरी भई हूं तेरे दावन की ॥

१७

मैं जाण्यो नाहीं प्रभु मिलण कैसे होय री ।

आय मेरे सजना फिर गये अंगना

جُگن جُگن سے بچھڑی میرا
گھر میں لینی لائے

۱۶

کوئی کھوری پرہو آون کی
آون کی من بھاون کی
آپ نہ آویں لکھ نہیں بھیجیں
بان پڑی کَلُّچاون کی
اے دوؤ نین کھو نہیں مانے
ندیا ہے جیسے ساون کی
کھا کروں کچھو نہیں بس میرو
پانکھ نہیں اڑ جان کی
میرا کہے پرہو کبرے ملوگے
چیری بھٹی ہوں تیر دانون کی

۱۷

میں جانیوں ناہیں پرہو ملن کیسے ہوئے ری
آئے میرے سجن پھر گئے انگنا

गली तो चारों बंद हुई,
 मैं हरि से मिलूं कैसे जाय ॥
 ऊंची नीची राह रपटीली,
 पांव नहीं ठहराय ।
 सोच सोच पग धरूं जतन से,
 बार बार डिग जाय ॥
 ऊंचा नीचा महल पिया का,
 म्हांसूं चढयो न जाय ।
 पिया दूर पंथ म्हांरा भीणो,
 सुरत भकोला खाय ॥
 कोस कोस पर पहरा बैठया,
 पैँड पैँड बटमार ।
 हे विधना कैसी रच दीनी
 दूर बसायो म्हांरो गांव ॥
 मीरा के प्रभु गिरधर नागर
 सतगुरू दर्ई बताय ।

گلی تو چاروں بند ہوئی
 میں ہری سے ملوں کیسے جائے
 اونچی نیچی راہ ریٹیلی
 پاؤں نہیں ٹھہرائے
 سوچ سوچ پگ دھروں جتن سے
 بار بار ڈگ جائے
 اونچا نیچا محلِ پیا کا
 مہانسون چڈھیو نہ جائے
 پیا دور پتھہ مہارا جھینو
 سُرت جھکولا کھائے
 کوس کوس پر پہرا بیٹھیا
 پینڈ پینڈ بٹ مار
 ہے ودھنا کیسی رچ دینی
 دور بسایو مہارے گاؤں
 میرا کے پرہو گردھر ناگر
 ست گرو دئی بتائے

कयूं तरसावो अंतरजामी,
 आय मिलो किरपा कर स्वामी ।
 मीरा दासी जनम जनम की,
 पड़ी तुम्हारे पाय ॥

१४

अब तो निभायां सरेगी,
 बांह गहेकी लाज ॥
 समर्थ सरण तुम्हारी सइयां,
 सब सुधारण काज ॥
 भव सागर संसार अपरबल,
 जा में तुम हो जहाज ।
 निरधारा आधार जगत-गुरु,
 तुम बिन होय अकाज ॥
 जुग जुग भीर हरि भगतन की,
 दीनी मोक्ष समाज ।
 मीरा सरण गही चरणन की,
 लाज रखो महाराज ॥

کیوں ترساؤ انتر جامی
 آئے ملو کر پا کر سوامی
 میرا داسی جنم جنم کی
 پڑی تمہارے پائے

۱۴

اب تو نبھایاں سریگی
 بانہ گہے کی لاج
 سمر تھ سرن تمہاری سیٹاں
 سرب مُدھارن کاج
 بھو ساگر سنسار اپر بل
 جامیں تم ہو جہاج
 نردھاراں آدھار جگت گرو
 تم بن ہوئے اکاج
 جگ جگ بھیر پری بھگتن کی
 دینی موکش سماج
 میرا سرن گہی چرنن کی
 لاج رکھو مہاراج

जग माया सब सपनन की ॥
 भव सागर सब सूख गयो है
 फिकर नहीं मोहे तरनन की ॥
 मीरां के प्रभु गिरधर नागर
 उलट भई मेरे नैनन की ॥

१३

प्यारे दरसन दीज्यो आय
 तुम बिन रह्यो न जाय ॥
 जल बिन कमल चंद बिन रजनी,
 ऐसे तुम देख्यां बिन सजनी।
 आकुल व्याकुल फिरूं रैन दिन,
 बिरह कलेजो खाय ॥
 दिवस न भूख नींद नहि रैना,
 मुख सों कथत न आवै बैना।
 कहा कहूं कछु कहत न आवै,
 मिल कर तपत बुझाय ॥

جگ مایا سب سپنن کی
 بھوسا گر سب سوکھ گیو ہے
 پھکر نہیں مو ہے ترنن کی
 میرا کے پر بھو گر دھر ناگر
 الٹ بھٹی میرے نینن کی

۱۳

پیارے درس دیجیو آئے
 تم بن رہیو نہ جائے
 جل بن کنول چند بن رجنی
 ایسے تم دیکھیاں بن سجنی
 آکل ویا کٹل پھروں رین دن
 ورہ کلیجو کھائے
 دوس نہ بھوکھ نیند نہیں رینا
 سکھ سوں کتھت نہ آوے مینا
 کہا کہوں کچھ کہت نہ آوے
 مل کر تپت بجھائے

श्री गिरधर आने नाचूंगी ।

नाच नाच पिव रसिक रिभाऊँ, प्रेमी जन को जाचूंगी ।
 प्रेम प्रीत के बांध घूंघरू, सुरत की कछवी काछूंगी ॥
 लोक लाज कुल की मरजादा, या में एक न राखूंगी ।
 पिय के पलंगा जा पौढूंगी, मीरां हरि रंग राचूंगी ॥

बसो मेरे नेनन में नंदलाल ॥

मोहनी मूरत, सांवरी सूरत, नैना बने बिमाल ।
 अधर सुधा रस मुली राजत, उर बैजंती माल ॥
 छुद्रघंटिका कटितट सोभित, नूपुर सब्द रसाल ।
 मीरां प्रभु संतन सुखदाई भगत बल्लल गोपाल ॥

मांहे लागी लटक गुरु चरनन की
 चरन बिना मोहे कछु न भावे,

شری گردھر آگے ناچونگی
 ناچ ناچ پیو رسک رجھاؤں، پریمی جنکو جانچونگی
 پریم پریت کے باندھ گھونگرو، سُرَت کی کچھنی کاچھونگی
 لوک لاج کُل کی مر جادا، یامیں ایک نہ را کھونگی
 پیا کے پلنگا جا پوڑھوں گی، میرا ہری رنگ راچونگی

بسو میرے نینن میں نند لال
 موہنی مورت سانوری صورت، نینا بنے بسال
 ادھر سدھارس مُرلی راجت، اُر ییجنتی مال
 چھدر گھنٹگا گئی تٹ سو بیہت، نو پُر سبد رسال
 میرا پر بھو ستتن سُکھ دائی بھکت بچھل کوپال

موہے لاگی لٹک گورو چرنن کی
 چرن بنا موہے کچھ نہ بھاوے

कोई कहै कालो, कोई कहै गोरो

लियो है मैं आख्या खोल ।

कोई कहै हलको, कोई कहै भारी

लियो ह तराजू तोल ॥

तन का गहणा मैं सब कुछ दीनां

दियो है बाजू बंद खोल ।

मीरां के प्रभु गिरधर नागर

पूरब जनम को है कौल ॥

९

मैं अपने सैयां संग सांची ।

अब काहे की लाज सजनी, परगट हो नाची ॥

दिवस भूख नहिं चैन होय कबहूँ नींद निसि नासी ।

वेध वार को पार हो गयो, ग्यान गुन गांसी ॥

कुल कुटुंब सब ही आन बैठे, जैसे मधुमासी ।

दासी मीरां लाल गिरधर, मिटी जग हांसी ॥

کوئی کہے کالو، کوئی کہے گورو
 لیو ہے میں آنکھیا کھول
 کوئی کہے ہلکو، کوئی کہے بھاری
 لیو ہے تراجو تول
 تن کا گہنا میں سب کچھ دیناں
 دیو ہے باجو بند کھول
 میرا کے پرہو گردھر ناگر
 پورب جنم کو ہے کول

۹

میں اپنے سیٹاں سنگ سانچی
 اب کاہے کی لاج سجنی، پرگٹ ہو ناچی
 دوس بھوکھ نہیں چین ہوئے کبھوں نیند نسی ناسی
 ویدھوار کو پار ہوگیو، گیان گن گانسی
 کُل کٹمب سب ہی آن بیٹھے، جیسے مدھو ماسی
 داسی میرا لال گردھر، مٹی جگ ہانسی

एक टकटकी पंथ निहारं भई छमासी रैन ।
 विरह बिथा कासों कहुं सजनी, बह गई करवत ऐन ।
 मीरां के प्रभु कबहो मिलोगे, दुःख मेटन सुख दैन ॥

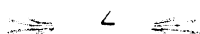


सखी मेरी नींद नसानी हो ।
 पिव को पंथ निहारत सिगरी रैन विहानी हो ॥
 सब सखियन मिल सीख दर्ई, मैं एक न मानी हो ।
 बिन देखे कल नहीं परत, जिय ऐसी ठानी हो ॥
 अंग छीन व्याकुल भई, मुख पिव पिव बानी हो ।
 अंतर वेदन विरह की वह पीर न जानी हो ॥
 ज्यों चातक धन कां रटै, मछरी जिमि पानी हो ।
 मीरां व्याकुल विरहणी सुध बुध बिसरानी हो ॥



माई मैं तो लियो रमैया मोल ।
 कोई कहै छानै, कोई कहै चवडै
 लियो है बजंता ढोल ॥

ایک ٹکٹکی پنتھ نہاروں، بھٹی چھماسی رین
 ورہ بتھا کاسوں کہوں سجنی، بہ گئی کروت این
 میرا کہے پر بہ-و کب ہو ملو گے، دکھ میٹن سکھ دین



سکھی میری نیند نہانی ہو
 پیو کے بٹھ نہارت سگری رین وہانی ہو
 سب سکھین مل سیکھ دئی، میں ایک نہ مانی ہو
 بن دیکھے کل نہیں پرت، جیا ایسی ٹھانی ہو
 انگ چھین ویاکل بھٹی، مکھ پیو پیو بانی ہو
 انتر ویدن ورہ کی وہ پیر نہ جانی ہو
 جیوں چاتک گھن کو رٹے، پھری جمی پانی ہو
 میرا ویاکل ورہنی سُدھ بُدھ بسرانی ہو



مائی میں تو لیو رمیا مول
 کوئی کہے چھانے، کوئی کہے چوڑے
 لیو ہے بجنتا ڈھول

सांभ भई मीरा सोवण लागी
 मानो फूल बिछाय ॥
 'मीरां' के प्रभु सदा सहाई
 राखो विघन हटाय ।
 भक्ति भाव में मस्त डोलती
 गिरधर पै बलि जाय ॥

५

मैं विरहिन बैठी जागू, जगत सब सोवे री आली ॥
 विरहिन बैठी रंग महल में, मोतियन की लड़ पोवे ।
 एक विरहिन हम ऐसी देखी, असुवन माला पोवे ॥
 तारा गिन गिन रैन विहानी, सुख की घड़ी कब आवे ।
 'मीरां' के प्रभु गिरधर नागर मिल के बिछुड़ न जावे ॥

६

दरस बिन दूखन लागे नैन !
 जब तें तुम बिछुरे पिव प्यारे, कबहुं न पायो चैन ॥
 सब्द सुनत मेरी छतियां कांपै, मांठे लागें बैन ।

سانجھ بھٹی میرا سوون لاکی
 مانو پھول بچھائے
 «میراں» کے پر بھو سدا سہائی
 راکھو ودھن ہٹائے
 بھکتی بھاؤ میں وست ڈولتی
 گردھر پہ بلی جائے

۵

میں ورہنی بیٹھی جاگوں، جگت سب سووے ری آلی
 ورہنی بیٹھی رنگ محل میں، موتئیں کی لڑی پووے
 ایک ورہنی ہم ایسی دیکھی، آنسوون مالا پووے
 تارا گن گن رین ویہانی سُکھ کی گھڑی کب آوے
 میراں کے پر بھو گردھر ناگر مل کے بچھڑ نہ جاوے

۶

درس بن دُکھن لاگے نین
 جب تیں تم بچھڑے پنیو پیارے، کبھوں نہ پایو چین
 سبد سُنت میری چھتیاں کانپیں، میٹھے لاگیں بین

अंसुवन जल सींच प्रेम वेल बोई ।
 अब तो वेल कैल गई, आनंद फल होई ॥
 दूध की मयनियां बड़े प्रेम में बिलोई ।
 माखन जब काढ़ लियां छाछ पियै कोई ॥
 आई मैं भगति काज, जगत देख मोही ।
 “दासी मीरां” लाल गिरधर तारो अब मोही ॥

४

सांप पिटारो राणा भेज्यो
 मीरां हाथ दियो जाय ।
 न्हाय धोय जब देखन लागी
 सालिगराम गई पाय ॥
 जहर का प्याला राणा भेज्यो
 अमरित दियो वणाय ।
 न्हाय धोय जल पीवण लागी
 अमर हो गई जाय ॥
 सुल सेज राणा ने भेजी
 दीजो मीरा सुवाय ।

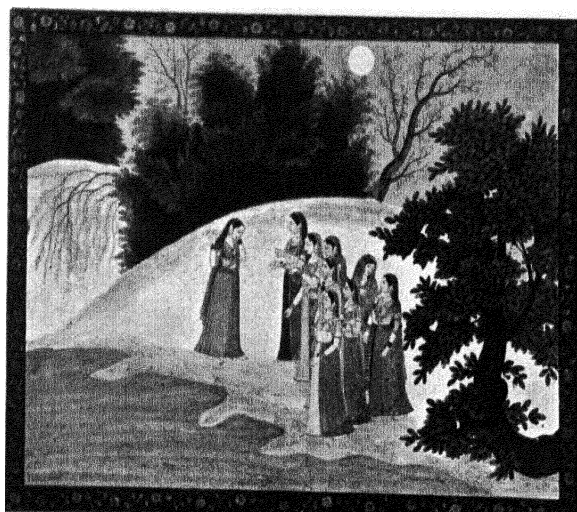
آنسوون جل سینچ سینچ پریم ییل بوئی
 اب تو ییل پھیل گئی، آنند پھل ہوئی
 دودھ کی مٹھنیاں بڑے پریم سے بلوئی
 ماکھن جب کاڑھ لیو چھاچھ پیشے کوئی
 آئی میں بھگتی کاج، جگت دیکھ موہی
 داسی میراں، لال گردھر تارو اب موہی

۴

سانپ پٹارو رانا بھیجیو
 میراں ہاتھ دیو جائے
 نہائے دھوئے جب دیکھن لاگی
 سالگرام گئی پائے
 جہر کا پیالہ رانا بھیجیو
 امرت دیو بنائے
 نہائے دھوئے جل پیون لاگی
 امر ہو گئی جائے
 سول سیج رانا نے بھیجی
 دیجو میرا سوائے

हे री में तो प्रेम दिवानी, मेरा दरद न जाने कोय ॥
 सूली ऊपर मेज हमारी, किस बिध सोना होय ।
 गगन मंडल पर मेज पिया की, किस बिध मिलना होय ॥
 घायल की गति घायल जानै, कि जिन लागी होय ।
 जौहरी की गति जौहरी जाने, कि जिन जौहरी होय ॥
 दरद की मारी बन बन डोलूं वैद मिल्यो नहीं कोय ।
 मीरा की प्रभु पीर मिटै जब वैद सांवलिया होय ॥

मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरा न कोई ॥
 जाके सिर मोर मुकुट मेरो पति सोई ।
 तात मात भ्रात बंधु, अपना न कोई ॥
 छांड दई कुल की कान, का करि हे कोई ।
 मंतन दिग बैठ बैठ लोक लाज खोई ॥
 चूनरी के किये दूक ओढ़ लई लोई ।
 मोती मूंगे उतार बन माला पोई ॥



ۛے رے میں تو پریم دوانے (۲)

ہے رے سے لہو لہو دیوانے (۲)

ہے ری میں تو پریم دوانی ، میرا درد نہ جانے کوئے
 سولی اوپر سیج ہماری ، کس بدھ سونا ہوئے
 گگن منڈل پر سیج پیا کی ، کس بدھ ملنا ہوئے
 گھائل کی گتی گھائل جانے ، کہ جن لاگی ہوئے
 جوہری کی گتی جوہری جانے ، کہ جن جوہری ہوئے
 درد کی ماری بن بن ڈولوں ، وید ملیو نہیں کوئے
 میراں کی پر بھو پیر مٹے جب وید سانولیا ہوئے

میرے تو گردھر گوپال دوسرو نہ کوئی
 جاکے سر مور مُکٹ میرو پتی سوئی
 تات سات بھات بندھو ، اپنو نہ کوئی
 چھانڈ دئی مُکل کی کان ، کا کری ہے کوئی
 سنتن ڈھگ بیٹھ بیٹھ لوک لاج کھوئی
 چُنری کے کئے ٹوک اوڑھ لئی لوئی
 موتی مونگے اُتار بن مالا پوئی

मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरा न कोई ॥
 माता छोड़ी पिता छोड़े, छोड़े मगा मोई ।
 माधां संग बैठ बैठ लोक लाज खाई ॥
 संत देख दौड़ि आई, जगत देख रोई ।
 प्रेम आंसू डार डार अमर बेल बाई ॥
 माग्न में ताग्न मिले संत नाम दाई ।
 संत सदा सीम पर नाम हदै होई ॥
 अथ तो बात फैल गई, जानै सब कोई ।
 दासि मीरा लाल गिरधर, होनी मा सो होई ॥

میرے تو گردھر کوپال دوسرو نہ کوئی
 ماتا چھوڑی پتا چھوڑے، چھوڑے سگا سوئی
 ساندھا سنگ بیٹھ بیٹھ لوک لاج کھوئی
 سنت دیکھ دوڑی آئی، جگت دیکھ روئی
 پریم آنسو ڈار ڈار امر بیل بوئی
 مارگ میں تارن ملے سنت نام دوئی
 سنت سدا سیس پر نام ہر دے ہوئی
 اب تو بات پھیل گئی جانے سب کوئی
 داسی میرا لال گردھر، ہوئی سو ہوئی

بہ جن भजन

ILLUSTRATIONS

1. RADHA AND KRISHNA, GOPIKAS AND COWHERDS

By kind courtesy of Allahabad Museum.

Facing Page 5.

2. RADHA KRISHNA PLAYING HOLI

(Jaipur School 18th century)

By kind courtesy of Mr. Ram Gopal Vijaywargiya.

Facing Page 9

3. THE FAVOURITE FORSAKEN

Plate 14 of the Bhagavatapurana

By kind courtesy of the National Museum, New Delhi.

Facing Page 36

4. LOVE LONGINGS

Plate 5 of Bihari Satsai

(Randhawa Kangra Paintings)

By kind courtesy of Lt. Col. His Highness

The Maharaja of Tehri Garhwal.

Facing Page 130

5. KRISHNA AND RADHA AND A FRIEND

BY A LOTUS POOL

Garhwal c. 1785

By the kind courtesy of Victoria and Albert Museum and George Allen & Unwin Ltd., London.

(Plate 29 of Love Songs of Vidyapati, Edited by W. S. Archer).

Facing Page 213.

درد محبت سے بے قرار ہو کر میرا نے ”رُورے“ یعنی لوگوں کو بین بھی
 سناٹے ہیں جیسے : ہمرے رُورے لاگی کیسے چھوٹے
 جیسے چنڈا ملت چکورا، تیسے رورے مل ہم جورا . ہمرے رورے
 لاگی کیسے چھوٹے

ایک بڑا حسین خیال . کرشن کی باؤلی برج کی گوالن دہی
 بیچنے چلی لیکن کھوئی ہوئی اور ”دہی لو“ کی جگہ شام منوہر لو
 کہنے لگی :

”کوئی شام منوہر لوری، سر دھرے مٹکیا ڈولے
 ددہی کو نام بسر گئی گوالن ”ہر لو . ہر لو“ بولے
 کرشن نے ایک گوہی کو چھیڑا اور وہ گوہی ماں سے شکایت کر رہی ہے
 آج اناری، لے گیو ساری، بیٹھ قدم کی ڈاری مائے
 سکھی سیانی موری ہنسٹ ہیں، ہنس ہنس دیں موہے ناری مائے
 برج میں سوہرے کرشن جگائے جا رہے ہیں . حسین منظر کشی
 کے سانھ دل کی شاعری دیکھئے

جاگو ہنسی والے للنا جاگو میرے پیارے
 رجنی بیٹی بھور بھو ہے گھر گھر کھلے کوارے
 گوہی ددہی متھت سنی یت کنگنا کے جھنکارے
 اٹھو لال جی بھور بھو ہے سر نہر کھڑے دوارے
 گوال بال سب کرت کلاہل جے جے سب اچارے
 اس منظر کشی کے سانھ میرا کے یہاں خیال آرائیاں بھی ہیں :
 صاحب کا گھر دور ہے جیسے لنگی کھچور
 چڑھے تے چاکھے پریم رس، پڑے تے چکنا چور

بہر حال میرا ہندوستان کی ایک ابدی شخصیت ہے . جب تک
 ہندوستان میں پریم ہے . جب تک ہندوستان میں گردھر ناگر کا نام ہے .
 جب تک ہندوستان میں شعر و ادب کا ذوق ہے . میرا کے گیت بھی آج
 ہی کی طرح فضا میں اہراتے رہینگے . لافانی گردھر ناگر کی میرا بھی
 اپنے بریم سے لافانی ہو گئی ہیں .

ڈاکٹر صفدر آہ سیٹاپوری

بمبئی اگست ۱۹۷۰ع

बुज में सवरे कृष्ण जगाए जा रहे हैं, हसीन दृश्यांकन के साथ हृदय की शायरी
देविये :-

जागो बंसी बाल ललना, जागोमें प्यारे।
रजनी बीती मांग आई है घर घर खुले किवारे ॥
गोपी ददही मथत सुनियत कंगना के भन मांग।
उठो लाल जी भीर भयो है, मुर नर खड़े दारंग।
ग्वाल बाल सब करत कुलाहल, जय जय शब्द उचारंग ॥
इस दृश्यांकन के साथ मीरा के यहां विचार सज्जा भी है जैसे :-

साहित्य का घर दूर है जैसे लंगी खजूर
चढ़ते चाखे प्रेम रस, चढ़ते चकना चूर ॥

बहर हाल मीरा भारत की एक अमर व्यक्तित्व हैं। जब तक भारत में
प्रेम है, जब तक भारत में गिरधर नागर का नाम है जब तक भारत में काव्य
रूचि है। मीरा के गीत भी आज ही की तरह इस देश में गूँजते रहेंगे।

अमर गिरधर नागर की मीरा भी गिरधर नागर के प्रेम से अपर हो गई हैं

वसुधैः अकम्त १९७०

डा० सफ़दर आह सीतापुरी

کرنا بھکیری ، کیا دلگیری ، سدا مگن میں رہنا جی
کوئی دن گاڑی ، کوئی دن بنگلہ ، کوئی دن جنگل بسنا جی

بہر حال اس میں کوئی شک نہیں کہ عوامی زبانوں کی یہ گونا گونیت
کبیر کے علاوہ کسی دوسرے ہندوستانی شاعر کے یہاں نہیں مل سکے گی۔
عوامی رنگ کبیر کا اصل مزاج ہے کیونکہ وہ معاشرے کے ایک ہست
طبقے میں پیدا ہوئے تھے۔ میرا کے پاس ایک رانی کی تہذیب اور ایک
ذی علم خاتون کا علم تھا۔ عوام سے انہیں کتنی محبت ہوگی کہ وہ خود
اتر کر عوامی سطح پر آگئیں۔ پھر اطف یہ کہ ان کے کلام میں سجاوٹ
اور تاثیر بھرپور ہے۔

میرا کی شاعری کسی کوئل کی کوک ، کسی بلبل کا گیت اور کسی
سریلے ساز کا نغمہ ہے جو قاری کے دل کی گہرائیوں میں اتر جاتی ہے۔
ان کے گیت سحرناظر کیوں ہیں؟ اس کا اہم سبب یہ ہے کہ گیت کی
عشقہ شاعری عورت کی طرف سے مرد کے لئے ہے اور میرا خود عورت ہیں۔
اُن کے گیتوں میں اُن کے لفظ ، اُن کا لہجہ اور ان کا دل ، یہ سب
نسوانی جذبے کے فطری ترجمان بن گئے ہیں۔ ذرا میرا کے یہ بھاؤ دیکھئے:

ع برہن بیٹھی رنگ محل میں موتن کی لڑ پونے
ع درس بن دوکھن لاگے نین پیہا پیو کی بانی نہ بول
ع میں تو سانورے کے رنگ رانجی۔

یہ بول ایک شاعر کے گیت میں وہ رنگ نہیں پیدا کر سکتے جو شاعرہ
کے یہاں ہوا ہے۔ میرا موسیقی اور رقص کی تعلیم پا چکی تھیں۔ لہذا
ان کے گیتوں میں ایک آہنگ اور لے ہے جیسے: ع
نپٹ بنکٹ چھب اٹکے مرے نین نپٹ بنکٹ چھب اٹکے

دیکھت روپ مدن موہن کو ، پت میوکھن منکے - مرے نین نپٹ چھب اٹکے۔
میرا کی زبان عوامی ہے۔ لیکن النکار کے زیور سے آراستہ ہے۔ جیسے:
موہن کے میں روپ لبھانی

سندر بدن ، کمل دل اوچن ، بانکی چتون ، مند مسکانی۔ موہن کے

میں روپ لبھانی

میرا کے کلام میں ایک بے قراری ہے جو قاری کو بھی تڑپا دیتی

ہے جیسے: تنک پر چتو ہمیری اور

ہم چتوت ، نم چتوت ناہیں ، دل کے بڑے کٹھور۔ تنک پر چتو ہمیری اور

मीरा का काव्य किसी कोयलकी कूक, किसी बुलबुल का गीत किसी सुगंधित साज की ध्वनी है जो श्रोता के दिल भीगहाइयों में उतर जाता है, उनके गीत प्रभावपूर्ण क्यों हैं इसका मुख्य कारण यह है कि गीत का प्रेम काव्य औरत की ओर से मर्द के लिए और मीरा मुख औरत हैं। उनके गीतों में उनके शब्द, उनका लहजा, और उनका दिल ये स्त्री भाव प्राकृतिक अभिव्यक्ति बन गये हैं जहाँ मीरा के यह भाव देखिये।

बिरहन बैठी रंग महलमें मोतिन की लड़ पोए -- या

दरस चिन दूखन लागे नैन -- या -- पपिहा पियों की वाणी न बोल --

या -- मैं तो सांवर के संग गंजी, आदि

ये बोल एक कवि के गीत में वह रंग पैदा नहीं कर सकते जो कवयित्री के यहां हुआ है।

मीरा संगीत और नृत्य की शिक्षा प्राप्त कर चुकी थीं, इसी कारण उनके गीतों में एक अनुकूलता और लय है।

निमट बिकट छवि भटके -- मेरे नैन निपट बिकट छत्री भटके।

देखता रूप मदन मोहन को पति म्योगन भटके :-

मेरे नैन निपट छत्री भटके।

मीरा की भाषा जन भाषा है लेकिन अलंकारों में भूषण से सुसज्जित जैसे

मोहन के मैं रूप लेख लुमानी

मुन्दर बदन कमल दल लोचन, बांकी चितवन, मन्द मुस्काती, मोहन के मैं रूप लुमानी। मीरा के काव्य में तड़प है जो श्रोता को भी तड़पा देती है। जैसे --

तनक हरी चितवो हमारी ओर

हम चितवत, तुम चितवत नहीं, दिल केबड़े कठोर, तबक हारे चितवी हमरी ओर। प्रेम पीड़ासे व्याकुल होकर मीरा ने लोगों को बैन भी सुनाए हैं।

जैसे हमरेदौर लागी कैसे छूटे।

जैसे चन्दा मिलता चकोरा, तैसे गैरे मिल हम जोग

हमरे गैरे लागी कैसे छूटे।

एक बड़ा मुन्दर भाव -- कृष्ण की दिवानी ब्रज की ग्यालन दही बेचने चली, लेकिन खोई और दही लो की जगह श्याम मनोहर लो कहने लगी।

काई श्याम मनोहर लागी -- गिबर मटकिया डोले

ददही को नाम बिसर गई ग्यालन हर लो हर लो बोले

कृष्ण ने एक गोपी को छेड़ा और वह गोपी अपनी मां से शिकायत कर रही है

आज अनारी, लोगियो सारी, बैठ मरम की डार माए

सखी सायनी नोगी हंसत हैं, हंस हंस दें मोहें तारी माए

۱۵۶۵ ع میں ہندوستان کی یہ بے عدیل شاعرہ جسم خاکی کو چھوڑ کر اپنے گردھر ناگر کی سیوا میں پہنچ گئی۔ آج میرا باقی نہیں، لیکن ان کے بھجن گھر گھر میں گونج رہے ہیں ع
 ”میں گردھر کے گھر جاؤں“

میرا میڑنا کے راج بنس میں پیدا ہوئی اور یساہ کر میواڑ کے راج محل میں گئیں۔ ظاہر ہے ان کی مادری اور سسرالی زبان شائستہ ترین محل کی زبان ہوگی۔ ساتھ ہی اُن کی تعلیم و تربیت اعلیٰ ترین پیمانے پر ہوئی۔ جس کے معنی یہ ہونے کہ اُس وقت کے رائج شاستروں کے ساتھ انہوں نے سنسکرت بھی اچھی خاصی پڑھی ہوگی۔ ایسی حالت میں میرا کا کلام سنسکرت آمیز شائستہ راجستھانی میں ہونا چاہئے تھا۔ لیکن حقیقت اس کے بالکل برعکس ہے۔ ان کے بھجن عام فہم ہیں اور ایسی زبان میں ہیں جو ہندوستان میں زیادہ سے زیادہ سمجھی جاسکے۔

بنیادی طور پر میرا کے کلام میں راجستھانی اور برج بھاشا کی آمیزش نظر آتی ہے، لیکن ریداس کی وجہ سے اودھی کا بھی اثر ہے راجستھانی: مہارامن۔ تھاری مَر جی۔ آپڑوں (اپنا)۔ اڑ (ان)۔ سن پاوے لی (گی)۔ رالیلی (ڈالے گی) وغیرہ

برج بھاشا: اُس پیا (ایسا پیا)۔ سُنئے چت لانے (سنئے چت لگانے)۔ کالندی کے تیر۔ کانھوگوں چرانے۔ ددھی کو نام (دہی کا نام)۔ ہون (میں)۔ اودھی: تمرے کارن سکھ چھوڑ دیا۔ تنک پر چتو و ہمری اُور۔ ہم چتوت تم چتوت ناہیں۔ ان حد (خاص کبیر کی وضع کی ہوئی اصطلاح) وغیرہ۔ میرا کی زبان پر ہمسایہ زبان گجراتی کا بھی گہرا اثر ہے گجراتی: پانچ پچاس نی تھیلی۔ دھن ملیا چھے۔ بھنکو چھو۔ چاکر رہ سوں باگ لگاسوں۔ ست سنگ نو رس۔ وغیرہ۔

مسلمانوں کے ورود ہندوستان کے بعد بالعموم اور مغلوں کے آنے کے بعد بالخصوص فارسی عربی الفاظ یہاں کی عوامی بولیوں میں پہنچ گئے۔ میرا کے یہاں بھی فارسی عربی الفاظ موجود ہیں فارسی عربی: صاحب۔ زہر (جہر)۔ حضور (حجور)۔ فکر (پھکر)۔ بازوبند (باجوبند)۔ مرضی (مرجی)۔ حاضر ناظر (ہاجر ناظر) وغیرہ۔

یہی نہیں، میرا کے یہاں ریختہ بھی موجود ہے۔ میرا سے پہلے کبیر کے ایک مجموعے کا نام ریختہ تھا جو اب نایاب ہے۔ ریختہ میرا:

“में गिरध के वर जाऊं”

मीरा मीड़िता के राजावंश में जन्मी और विवाहित हो कर वह मेवाड़ के राजमहल में गई। जादिर है उनकी मातृ औरस सुगली भाषा उच्च कोटि की महल की भाषा होगी, साथ ही उनकी शिक्षा दीक्षा ऊंचे स्तर पर हुई। जिसका अर्थ यह हुआ कि उस वक्त के प्रचलित शस्त्रों के साथ उन्होंने संस्कृत भी अच्छी ख़ासी पढ़ी होगी, ऐसी हालत में मीरा का काव्य संस्कृत मिश्रित उच्च राजस्थानी में होना चाहिये था, लेकिन दक्कीकृत इसके बिल्कुल विपरीत है, उनके भजन सहज सरल अतः ऐसी भाषा में हैं जो हिन्दुस्तान में ज्यादा से ज्यादा समझी जा सके। मूलतः मीरा के काव्य में राजस्थानी और वृजभाषा का मिश्रित रूप दिखाई देता है प्रन्तु रैदास के कारण अवधी का भी प्रभाव है

राजस्थानी :- म्हाग मन, थारी मर्जी, आपणों, (अपना) (इण) (इष्) (सुनपावेली) (मी) (गलेलली) (डालेगी) आदि।

वृज :- (अपसिया) (ऐसा पिया) (मुनिये चित लाग) (मुनिये चित लगण) कालथी केतीर कन्हों गोवें चगाउं, ददसी को नाम (दही का नाम है) (में) आदि।

अवधी :- तुमरे कारण मुख छोड़िया, तुनिक हर चितवो हमारी ओर, हम चितवत तुम चितवत नहीं, अनहद खासकर कबीर निर्मित विस्व आदि।

मीरा की भाषा पर पड़ोसी भाषा गुजराती का भी गहरा असर है :-

गुजराती :- पांच पचामनी थैली, धन मिलिया हे, मटको छा

चाकर रहसू, वाग लगा सूं, सत संग नगस, आदि

मुसलमानों के भारत आगमन के बाद आम तौर पर और सुगलों के आने के बाद ख़ास तौर पर फ़ारसी अरबी शब्द यहां की लोक बोलियों में पहुंच गये। मीरा के यहां भी फ़ारसी अरबी शब्द मिलते हैं।

फ़ारसी अरबी :- साहिब, जहर, हजर, फ़िक्र, बाजूबन्द, मर्जी, हाजिर, नाजिर आदि।

यही नहीं मीरा के यहां रेख़ता भी मौजूद है। मीरा से पहले कबीर के एक संकलन का नाम रेख़ता था जो अब नहीं मिलता है। रेख़ता मीरा --

करना फ़कीरी, क्या दिलगोरी, सदा मन में रहना जी।

कोई दिन गाड़ी, कोई दिन बंगला, कोई दिन जंगला सीता जी।

बहरहाल इसमें कोई सन्देह नहीं कि लो भाषाओं का रंगा रंगी कबीर के अनियत किसी दूसरे हिन्दुस्तानी कवि के यहां नहीं मिल सकेगा। जन भावना कबीर का मूल स्वभाव है। क्योंकि वह समाज के निचले वर्ग में जन्मे थे। मीरा के पास एक रानी की संस्कृति और एक विद्वान स्त्री का ज्ञान था, जनता से उन्हें कितना स्नेह होगा, कि वह स्वयं उतर कर जनस्तर पर आ गईं। फिर मज्जा यह कि उसके काव्य में सजावट और असर भरपूर है।

ویشنوؤں کے یہاں بھی یہ اصول وضع کیا گیا ہے کہ خالص محبت کی جگہ صرف عورت کا دل ہوسکتا ہے۔ لہذا کرشن کے تمام محبت کرنے والے گویوں کی طرح استری ہیں۔ پُرش صرف کرشن ہیں۔

میرا جب ورندا بن پہنچی تو چتوڑ کی راج بہو کے علاوہ بھگت اور شاعرہ کی حیثیت سے بھی ان کی کافی شہرت ہو چکی تھی۔ اس کے باوجود جیوگوسائیں نے عورت ہونے کی وجہ سے میرا سے ملنا قبول نہ کیا۔ اس پر میرا نے اُن کو پیغام بھیجا کہ میں تو سمجھتی تھی ورندا بن میں پرش صرف کرشن ہیں، باقی گویاں اور استری ہیں۔ یہ تو آج معلوم ہوا کہ ورندا بن میں کرشن کے علاوہ بھی پرش رہتے ہیں۔ جیوگوسائیں اس اصولی جواب پر کافی شرمندہ ہوئے اور خود میرا کے پاس پہنچ گئے۔ میرا کی بھگتی کی کہانیاں اور ان کے رسیلے بھجن عوام کی زبان پر چڑھ چکے تھے۔ یہاں تک کہ گرو نانک کے گرتھ صاحب اور کبیر پنٹھ کے گرتھ میں میرا کے بھجن شامل ہو چکے تھے۔

ورندا بن میں میرا کچھ دن ٹھہریں۔ آخر برداشتہ خاطر ہو کر وہ کرشن ہی کی طرح دوارکا چلی گئیں۔ یہاں پرانے کرشن مندر کے کھنڈر بڑے ہوئے تھے۔ میرا کی کوشش سے یہ مندر پھر تعمیر کیا گیا اور میرا اس مندر میں اپنے کرشن پر بھگتی کے پھول فچھاور کرنے لگیں۔

۱۵۴۶ع میں رانا اودے سنگھ نے برہمنوں کی ایک جماعت دوارکا بھیجی کہ میرا کو منا کر کسی طرح چتوڑ واپس لاؤ۔ میرا نے دوارکا چھوڑنے سے انکار کر دیا۔ اس پر برہمنوں نے فافہ کشی شروع کی۔ آخر میرا رات کو اس معاملے میں گردھر جی کا حکم لینے کے لئے مندر کے اندر چلی گئیں۔ سویرے جب مندر کھولا گیا تو مورتی کے ہاتھ پر میرا کے کپڑے تھے اور معلوم ہوتا تھا کہ گوی کا اوتار میرا خود مورتی میں سما گئیں۔ چیتنبہ کے لئے بھی یہی روایت ہے: برہمن مایوس ہو کر واپس آئے اور میرا ایک نامعلوم بیراگن کی شکل میں دکنی ہندوستان کی تیرنہ یا ترا پر نکل گئیں۔ چار سال ان کا کوئی پتہ نہ چلا۔ ۱۵۶۰ کے قریب ہم پھر اُنہیں شمالی ہندوستان میں دیکھتے ہیں۔ یہاں شہنشاہ اکبر اُن سے بڑے احترام سے ملا۔ اکبر کی ملکہ مریم زمانی میرا سے اتنی متاثر ہوئی کہ ان کی جیلی بن گئی۔ راجہ مان سنگھ، نان سین اور بیربل بھی میرا کے بڑے معتقد تھے۔ نوجوان تلسی داس نے بھی متیرا کے درشن کر کے کسب فیض کیا۔

हिन्दु दर्शन में आराध्य स्त्री और आराध्य मर्द हैं। हिन्दु साहित्य में आम तौर पर इसी नियम का पालन किया जाता है। इसी धारणा के अंतर्गत वैष्णवों के यहां भी यह सिद्धांत बनाया गया है कि स्वच्छ प्रेम का स्नान सिर्फ स्त्री का उदय हो सकता है, इसीलिए कृष्ण से समस्त मोहवृत्त करने वाले गोपीयों की तरह स्त्री स्वी हैं। पुरुष केवल कृष्ण हैं।

मीरा जब वृन्दावन पहुंचीं तो चितौड़ की राज बहू के अतिरिक्त भक्त और गवीयत्री की हैसियत से भी उनकी कफ़ी ख्याति हो चुकी थी। इसके बावजूद जीव गोसाईं ने स्त्री होने की वजह से मीरा से भेंट करना स्वीकार नहीं किया। इस पर मीरा ने उनको सन्देश भेजा कि मैं तो समझती थी वृन्दावन में पुरुष केवल कृष्ण हैं, गोपियाँ और स्त्री हैं, यह तो आज मालूम हुआ कि वृन्दावन में कृष्ण के अतिरिक्त भी पुरुष रहते हैं। जीव गोसाईं इस उमूली जवाब पर काफी शर्मिन्दा हुए और मीरा के पास पहुंच गये। मीरा की भक्ति की कथार्प और उसके रसीले भजन जनता की जवान पर चढ़ चुके थे, यहां तक कि गुरु नानक के ग्रंथ में मीरा के भजन शामिल हो चुके थे।

वृन्दावन में मीरा कुछ दिन ठहरीं, आखिर दृग्दो होकर वह कृष्ण ही की तरह दारका चली गयीं, यहां पुनः कृष्ण मन्दिर के सिर्फ खेडहर पड़ गए थे। मीरा की कोशिश से यह मन्दिर फिर निर्माण हुआ और मीरा इस मन्दिर में अपने कृष्ण पर भक्ति के फल निर्यात करने लगीं।

१५४६ में गण। उदय सिंह ने ब्रह्मणों की एक मंडली दारका भेजी कि मीरा को मनाकर किसी तरह चितौड़ वापस लाओ। मीरा ने दारका छोड़ने से इंकार कर दिया। इस पर ब्रह्मणों ने उपवास शुरू कर दी, आखिर मीरा इस मामले में गिरधरजी का आदेश लेने के लिए रात में मन्दिर के अन्दर चली गयीं। सबेर जब मन्दिर खोला गया तो मूर्ति के हाथ पर मीरा के वस्त्र थे और मालूम होता था कि गोपी का अवतार मीरा खुद मूर्ति में समा गयीं। चेतन्य महाप्रभु के लिए भी यही मशहूर है। ब्रह्मण निराश हो कर वापस आए और मीरा एक अज्ञात वैरागन के भेस में दक्षिण भारत की तीर्थयात्रा पर निकल गयीं, चार साल उनका कोई पता न चला।

१५६० के करीब हमफिर से उत्तर भारत में देखते हैं, यहां सम्राट अकबर उनसे बड़े आदर से मिला, अकबर की मलिका रय्यम जमाना मीरा से इतनी प्रभावित हुई कि उसकी चेली बन गई। राजा मान सिंह, तान सेन, और बांगल भी मीरा के बड़े अनुयायी थे, नवजवान तुलसी दास भी मीरा के दर्शन से लाभान्वित हुए।

१५८५ में हिन्दुस्तान की यह अद्वितीय कवयित्री मारती रूपी शरीर को त्याग कर अपने गिरधर नागर की सेवा में पहुंच गयीं, आज मीरा बाकी नहीं। लेकिन उनके भजन घर घर में गूंज रहे हैं :-

حد پر پہنچ گئی . سسرال والوں سے ان کی ٹکریں ہوئیں . شوہر نے انہیں سانپ سے ڈسوائے اور زہر دینے کی کوشش کی لیکن میرا اپنے راستے پر ڈٹی رہیں . اس مجموعے میں بھجن ۵۳ - ۱۰۲ - ۱۰۳ نیز بھجن ۱۱۲ سے ۱۱۹ تک ان واقعات کی وہ دستاویزیں ہیں جو خود میرا لکھ کر ہمارے لئے چھوڑ گئی ہیں .

۲۳ - ۱۵۲۱ع میں میرا کا شوہر بھوج راج ایک لڑائی میں زخمی ہو کر مر گیا اور میرا بیوہ ہو گئیں . میواڑ میں سازشیں چل رہی تھیں . لیکن رانا سانگا کی اپنی شخصیت کے سامنے کسی کی نہ چلتی تھی . آخر ۳۰ جنوری ۱۵۲۸ع کو رانا سانگا کو زہر دیکر مار دیا گیا اور ان کی جگہ میرا کا سوتیلا دیور رتن سنگھ (دوم) میواڑ کا رانا ہوا . یہ میرا کا دشمن تھا . اس نے میرا کو قلعے میں قید کر دیا اور نگرانی کے لئے دو عورتیں چمپا اور چنبیلی کو مقرر کیا . لیکن یہ دونوں میرا کی شخصیت سے مسحور ہو کر اُس کی چلی بن گئیں .

سازشی لوگوں نے رتن سنگھ کو قتل کر کے اس کی جگہ رانا خاندان کے ایک زنانے لڑکے بکرماجیت کو گدی پر بٹھا دیا . بکرماجیت نے میرا کو مار ڈالنا چاہا . لیکن ایک سنت عورت کو قتل کرنے پر کوئی تیار نہ ہوا . آخر اُس نے میرا کو دریا میں ڈبوئے کا حکم دیا . حکم کی تعمیل ہوئی . میرا دریا میں گریں . ان کے کپڑے پانی کی سطح پر تیرتے رہے اور میرا غائب ہو گئیں . ہوا یہ کہ ان کے چچا میڑنا کے راجہ انہیں بچا کر لے گئے . یہ واقعہ ۱۵۳۲ع کا تھا . اس کے صرف چار سال بعد ۱۵۳۶ع میں بکرماجیت بھی قتل کر دیا گیا .

میرا اپنے چچا ویرم دیو کے پاس میڑنا پہنچ گئیں . لیکن یہاں بھی اُن کی والہانہ بھگتی میں کوئی کمی نہ ہوئی . وہ ہر آنے والے سادھو کی سیوا کرتی تھیں اور بلا تکلف ہر طبقے کے آدمیوں سے ملتی تھیں . ویرم دیو کی نظر میں ایک راج گھرانے کی بیوہ کے لئے یہ باتیں مناسب نہ تھیں . آخر میرا میڑنا سے یاترا پر روانہ ہو گئیں . اس یاترا کی تفصیلات نامعلوم ہیں . ہم میرا کو ورندا میں اس وقت دیکھتے ہیں جب چیتنبہ کے ذی علم جانشین جیوگوساں سے ان کی ٹکر ہوئی .

ہندو فلسفے میں عاشق عورت اور مرد معشوق ہے . ہندو شعروادب میں عام طور پر اسی اصول کی پابندی کی گئی ہے . اسی تصور کے تحت

मीरा ने एक कृष्ण मन्दिर बनवा लिया था। न उन्हें सौत का डह था न पति से शिकायत। वह गिरधर जी का प्रेम अमृत पिये हुए हर वक्त उन्हींकी सेवामें लगी रहती थी, वह मस्ती के आलम में भजन करती और पांव में धुंवरू बांध कर नाचती थी। जैसा वह स्वयं कहती हैं :

“सज मिहार बांध पग धुंवरू, लोक लाज तज नाची”

मीरा जनता में तो प्रसिद्ध हुई और खुद उनके घर में झगड़े हद तक पहुँच गये। समुगाड वालों से उनकी टक्कों हुई। पति ने उन्हें माँप से डसवाने और जहर देने की कीशिशें कीं लेकिन मीरा अपने रास्ते पर डटती रही। इस संकलन में भजन ५३-१०२-१०३ और ११२ से ११९ तक इन घटनाओं की वे दस्तावेज हैं जो खुद मीरा लिख कर हमारे लिए छोड़ गयी हैं।

१५२१-२३ ई० में मीरा के पति भोजराज एक लड़ाई में जख्मी हो कर मर गये और मीरा विधवा हो गई। मेवाड़ में पड़यंत्र चल रहे थे। लेकिन राणा सांगा के लोह व्यक्तित्व के सामने किसी की न चलती थी। आखिर ३० जनवरी १५२८ को राणासांगाको विष देकर मार दिया गया और उनकी जगह मीरा का सोनेला देवर रतन सिंह (दूसरा) मेवाड़ का गणप हुआ। यह मीरा का दुश्मन था। उस ने मीरा को एक किले में कैद कर दिया और निगरानी के लिए दो औरतें चम्पा और चम्बेली को नियुक्त किया। लेकिन ये दोनों मीरा के व्यक्तित्व से प्रभावित हो कर उन की चेल्मी बन गयीं।

साजिशी लोगों ने रतन सिंह को कत्ल कर के उस की जगह राणा पेश के एक जनाने लड़के बिक्रमाजीत को गद्दी पर बिठा दिया। बिक्रमाजीत ने मीरा को मार डालना चाहा, लेकिन एक संत स्त्री की हत्या करने पर कोई तैयार नहीं हुआ।

आखिर उसने मीरा को दरिया में डूबानेका हुक्म दिया। आदेश पालन हुआ मीरा दरिया में गिरी, उनके कपड़े पानी के उपर तैरते रहे और मीरा राखब हो गई। हुआ यह कि उसका चचा मीड़ता का राजा उसे बचा कर ले गया। यह घटना १५३२ की थी, उसके सिर्फ चार साल बाद १५३६ में बिक्रमाजीत को कत्ल कर दिया गया।

मीरा अपने चाचा योगमंदेव के पास मीड़ता पहुँच गयीं, लेकिन यहां भी उनका उन्मादपूर्ण भक्ति में कोई कमी न हुई। वह हर आने वाले साधु की सेवा करती थीं और बिनाकिसी भिक्षक हर वर्ग के आदमियोंसे मिलती थीं। योगमंदेव की नजर में एक राजवराने की विधवा के लिए ये बातें अनुचित थीं। आखिर मीरा मीड़ता से यात्रा पर खाना हो गई। इस यात्रा का विवरण अज्ञात है।

हम मीरा को वृन्दावन में उस वक्त्र देवने हैं जब चितन्य के विद्वान जानशीन जीव गोसाईं से उनकी टक्कर हुई।

دادا دودامل کی زیر نگرانی میٹرنا کے راج کنور جیت مل کے ساتھ ہوئی اور انہیں رائج الوقت علوم، فنون جنگ اور فنون لطیفہ کی باضابطہ تربیت ملی۔ میرا بے پناہ حسن کے ساتھ ایک پر محبت دل لیکر پیدا ہوئی تھیں۔ ابھی وہ صرف پانچ سال کی تھیں کہ انہیں ایک بابا (غالباً ریداس) نے گردھر جی (شری کرشن) کی مورتی دیدی۔ معصوم میرا اس مورتی سے اتنا متاثر ہوئیں کہ وہ گردھر جی کی ہو کر رہ گئیں۔ اس عہد میں راجپوتانے کی افراتفری، جنگی پس منظر اور سازشوں کا رد عمل میرا کے شریف نفس اور شاعرانہ دل پر یہ ہوا کہ وہ اپنے وجود کو گردھر جی کی ذات میں جذب کر کے اپنا کی پرستار بن گئیں انہوں نے اپنے خاندان کی دیوی کالی کی خون ریز قربانیوں میں کبھی حصہ نہیں لیا۔

میرا کی قابلیت، حسن صورت اور حسن سیرت کا دور دور شہرہ تھا۔ ۱۵۱۶ع میں میرا کی شادی سب سے طاقتور راجپوت راجہ چتوڑ کے رانا سانگا کے راج کنور بھوج راج سے ہوئی۔ اس طرح میرا سانوت مت کے قدیم ترین مرکز ”مادھیمکا نگری“ کے پاس اپنی سسرال چتوڑ میں آگئیں۔ مادھیمکا نگری اب بھی ”نگری“ کہلاتی ہے اور وہاں کے ذرے ذرے میں اہل بصیرت کو شری مدبھاگوت کی روح درخشنده نظر آتی ہے۔ میرا ایسے تصورات اٹے ہوئے سسرال آئیں جو کسی بھی عورت کی ازدواجی زندگی کو تباہ کر دیتے۔ وہ اپنے شوہر کی خدمت کرنے پر تیار نہیں۔ لیکن ساتھ ہی یہ بھی کہتی تھیں کہ میرا بیاہ گردھر جی کے ساتھ ہو چکا ہے۔ نالخیاں بڑھتی گئیں۔ آخر یہ خبر رانا سانگا کو پہنچی اور وہ سخت برہم ہوئے۔ لیکن ان کی ماں رانی جھالی نے جو ریداس کی جیلی تھیں بیٹے کو سمجھا بجھا کر میرا کو بچا لیا۔ اس کشمکش کا نتیجہ یہ ہوا کہ میرا کے شوہر بھوج راج نے دوسری شادی کر لی۔ شاید چتوڑ ہی میں رانی جھالی کے گرو ریداس نے میرا کو دیکشادی۔ وہ اس وقت سو سال سے زیادہ ہو چکے ہونگے۔

میرا نے ایک کرشن مندر بنوا لیا تھا۔ وہ انہیں سوت کا ڈاھ تھا۔ نہ شوہر سے شکایت۔ وہ گردھر جی کا پریم امرت پئے ہوئے ہر وقت ان ہی کی سیوا میں لگی رہتی تھیں۔ وہ مستی کے عالم میں بھجن کرتیں اور پاؤں میں گھنگرو باندھ کر ناچتی تھیں۔ ”سج سنگار، باندھ پگ گھنگرو لوک لاج تحج ناچی“ میرا عوام میں مقبول ہوئیں اور خود ان کے گھر میں کشمکش

विशिष्टवर्ग ने उसके अस्तित्वको ऐसे दैवत्व ध्रुवको में पहुँचा दिया है कि सिर्फ साढ़े तीन सौ साल पहलेकी एक महत्वपूर्ण व्यक्तिको ऐतिहासिक वास्तविकताओं से प्रकाशमें लाना मुश्किल हो गया है।

मीराबाई राजपूतानाकी गिर्यामत मीड़ता के राजा योगम देव के छोटे साईं स्नान सिद्ध की एकलौती बेटी थी। मीड़ता का राजा राठोड़ परिवार में अपने शीशे के लिये मशहूर था, इस नामवर परिवार में १४६८ में मीराका जन्म हुआ।

मीरा की माता १५०३ में स्वर्गवासो हो चुकी थी। उनकी शिक्षा दीक्षा उनके दादा दीदामल के निरीक्षण में, राजकुंवर जीत मल के साथ हुई। और उन्हें युग प्रमाणित विद्या, शीशे शास्त्र तथा ललित शास्त्र की नियमित शिक्षा मिली।

मीरा असीम सौंदर्य के साथ एक मोहच्यत भरा दिल लेकर पैदा हुई थी।

अभी यह सिर्फ पांच साल की थी कि उन्हें एक बाबा (सम्भवतः) गैदास, ने गिरधर जी (वृष्ण) की मूर्ति देदी मामूम मीरा उस मूर्ति से इतनी प्रभावित हुई कि वह गिरधर जी की हो कर रह गई। उस साल में राजपूताना की उथलपुथल, गणप्रिय वातावरण और राजद्रोह वृत्तियों कीप्रतिक्रिया मीरा में निपल व्यक्तित्व और कवि हृदय पर यह हुआ कि वह अपने अस्तित्व को गिरधर जी की ज्ञान में समोहित करके अहिंसा की पूज्य बन गई। उन्होंने अपने परिवार की देवी काली की रक्तमयी बलियों में कभी भाग नहीं लिया।

मीरा के पांडित्य, सुवामर्पण और चमित्राकर्पण की दूर दूर चर्चा थी। १५१३ में मीरा का विवाह सबसे शक्तिशाली राजपूत राजा चित्तोड़ के गणासांगा के राज कुंवर भोज राज से हुआ, इस तरह मीरा सान्त्वतमत के प्राचीन केन्द्र माध्यमिका नगरी के पास अपनी समुगल चित्तोड़ में आ गई। माध्यमिका नगरी अब भी नगरी कहलाती है और वहाँ के कण कण में स्वच्छ दृष्टि वालों को श्रीमदभागवत की आत्मा जगमगाती नजर आती है।

मीरा ऐसे विचार लिये हुए समुगल आई जो किसी भी स्त्री के विवाहित जीवनको नष्ट कर देने। वह अपने पतिकी सेवा करने पर तैयार थी, लेकिन साथ ही यह भी कहती थी कि मेरा विवाह गिरधर जी के साथ हो चुका है। मनमुटाव बढ़ता गया, आखिर यह खबर गणा सांगा को पहुँची और वह मरुत नाराज हुआ, लेकिन उसकी माता गानी भाली ने जो गैदास की चेती थी, बेटेको समझा बुझा कर मीरा को बचा लिया, इस झगड़े का नतीजा यह हुआ कि मीरा के पति भोजराज ने दूसरी शादी कर ली, शायद चित्तोड़ ही में। गानी भाली के गुरु गैदास ने मीरा को शिक्षा दी। वह उस वक़्त सौवर्ष से ज्यादा हो चुके होंगे।

کی مورتی کو دیکھ کر انہوں نے سر نہیں جھکایا اور یہ دوبا نظم کیا
 کیا چھب ورنون آجکی بھلے بنے ہو ناتھ
 نلسی مستک تب نوے دھنس بان لیو باتھ

یعنی اے کرشن بلاشبہ تم بھی وشنو ہی کے اوتار ہو۔ لیکن میں تو سر نب
 ہی جھکاؤں گا جب دھنس بان باتھ میں لے کر تم چتر کوٹ کے رمتے رام بن جاؤ۔
 اس زمانے میں یوں تو ان گنت سمپردائے اور دھرم مارگ ہو گئے
 تھے۔ لیکن تین مت کافی وسیع اور ہر طرف مقبول تھے۔ شیوک، شاکت
 اور وشنو۔ شیوک، شیوک کے بھگت تھے اور ان میں زیادہ تر برہمن تھے۔
 یہ ہندوستان کا قدیم ترین مت ہے اور اس کے بنیادی تصورات بڑے فکر انگیز
 ہیں۔ شاکت، شکتی یعنی دیوی کے پجاری ہیں۔ دیوی کے سامنے بلی
 اور قربانی کی وجہ سے اس میں قدیم قبائلی تصورات کی جھلک نظر آتی ہے۔
 لیکن اس کے اصولوں میں کافی معقولیت ہے۔ شاکت زیادہ تر چھتری یا
 پھر ادنیٰ ذات والے ہوتے ہیں۔ یہ بھی ہندوستان کا قدیم مت ہے۔
 شیوک اور شاکت دونوں مت غالباً غیر آریائی ہیں۔

اس زمانے کا سب سے شائستہ مت ویشنومت تھا۔ جس نے
 ہندوستانی روح کے ساتھ ہندوستانی شعر و ادب اور فنون لطیفہ کو بھی
 ایک نئی زندگی بخش دی۔ میرا اسی مت کی ایک مخلص پیرو ہیں۔

ہندوستانی ذہن کی یہ خصوصیت ہے کہ وہ جن شخصیتوں کو
 عظیم سمجھتا ہے ان کے چاروں طرف توہمات، معتقدات اور روایات
 کے ایسے تانے بانے بن دیتا ہے کہ محققین کے لئے اس شخصیت کی
 بازیافت سخت دشوار ہوجاتی ہے۔ میرا بھی اسی ستم ظریفی کا شکار ہیں۔
 ان کے معتقد اور چاہنے والے عوام تو ایک طرف، خود خواص نے
 ان کے وجود کو ایسے ابھام کے دھندلکوں میں پہنچا دیا ہے کہ صرف
 ساڑھے تین سو سال پہلے کی ایک اہم ہستی کو تاریخی حقائق کی روشنی
 میں لانا مشکل ہو گیا ہے۔

میرا بانی راجپوتانے کی ریاست میڑنا کے راجہ ویرم دیو کے چھوٹے
 بھائی رتن سنگھ کی اکلوتی بیٹی تھیں۔ میڑنا کا حکمران راٹھور خاندان
 راجپوتانے میں اپنی شجاعت کے لئے مشہور تھا۔ اسی نامور خاندان میں
 ۱۴۹۸ ع میں میرا کی ولادت ہوئی۔

میرا کی ماں ۱۵۰۳ ع میں مر گئیں۔ ان کی تعلیم و تربیت ان کے

वल्लभाचार्य ने भक्ति और प्रेम में एक विशिष्टता पैदा की। यह विशिष्टता केवल इसी हद तक नहीं गई कि राम और कृष्ण की भक्ति अलग हो गई। अतः बात यहां तक पहुंची कि अगर बाल कृष्ण तुम्हारे इष्ट हैं तो मन्दिर में बाल कृष्ण या किसी दूसरे वैष्णव के घर से बाल कृष्ण तुम्हारे लिये केवल आदर्शनीय हैं, लेकिन तुम्हारा वास्तविक इष्ट बाल कृष्ण भी वह मूर्ति है जो गुल्म ने तुम को दी है और जिसे अपने घर में स्थापित करके तुम उसकी पूजा करते हो। अपने दुःख सुख तुम उसी मूर्ति से कह सकते हो, किसी और मूर्ति के सामने प्रार्थना करना या कुल्लू मांगना वर्जित है।

तुलसीदास के इष्ट देवता बालराम या राजा राम न थे। वह चित्रकूट के रमते राम को अपना इष्ट मानते थे, जिनके व्यक्तित्वपूर्णता धनुषबाण के बिन नहीं होती, एक दिन वह कृष्ण मन्दिर में गये, कृष्ण की मूर्ति को देख कर उन्होंने सिर नहीं झुकाया और यह दोहा यथा समय शब्द बड़ किया।

क्या छत्र बनो आजुकी भले बने हौ नाथ

तुलसी मस्तक कब नितै धनुष बाण लेव हाथ

यानी ऐ कृष्ण निश्चय तुम भी विष्णु ही के अवतार हो लेकिन मैं तो सिर तब ही झुकाऊंगा जब धनुषबाण हाथ में लेकर तुम चित्रकूट के रमते राम बन जाओ।

उसकाल में यूं तो अनगिनत संप्रदाय प्रथा धर्मार्थ प्रचलित थे लेकिन तीन मत अधिक विस्तृत और हर तरफ लोक प्रसिद्ध थे शैव शक्ति, और वैष्णव शिव के भक्त थे और उनमें ज्यादातर ब्राह्मण थे। ये भागनका प्राचीन मत है और इसके मूल सिद्धांत बड़े विचारोन्मत्त हैं। शक्ति शक्ति अर्थात् देवी के पुजारी हैं, देवीके सामने बलि या कुर्बानी के कारण इससे प्राचीन कथायुगीन विचारों की भूलक नजर आती है। लेकिन इसके सिद्धांतोंमें काफी सन्तुलन है। शक्ति ज्यादातर श्रद्धिय या फिर नीची जाति के लोग होते हैं। यह भी हिंदुस्तान का प्राचीन मत है। शैव और शक्ति दोनों मत संभवतः अनार्य हैं।

उस समय का सबसे सुसम्भ्यमत वैष्णव मत था जिसने हिंदुस्तानी आत्मा के साथ, हिंदुस्तानी काव्य और ललित कलाओं को भी एक नया जन्मदानी दे दी है। मीरा इसी मत की एक सच्ची अनुयायी हैं।

हिन्दुस्थानी विचार धारा की यह विशेषता है कि वह जिन को महान सम्भूता है उनके चारों ओर गृहविश्वासों, श्रद्धाओं और परम्परागतिकों में ऐसे तानेबाने बुन देता है कि शोषकताओं के लिये उन व्यक्तित्वकी आविष्कार बहुत कठिन हो जाता है मीरा भी इसी अनुलित ब्रह्माचार का शिकार रहीं, उसके अनुयायी और चाहनेवाले आम लोग तो एक तरफ खुद

ان کے علاوہ اس عہد میں صوفیائے کرام ہندوستان میں شمال سے لیکر جنوب تک اور مغرب سے لیکر مشرق تک پھیل چکے تھے۔ خود میرا کے راجستھان میں کئی سو سال سے خواجہ معین الدین چشتی کی درگاہ موجود تھی۔ ان سب بزرگوں کا پیغام محبت بھی بھگتی تحریک کا موید ہوا۔ بھگتی تحریک اور ویشنومت کے عظیم رہنما چیتنہ مہاپربھو (۱۴۵۶ء سے ۱۵۲۴ء تک) کبیر ہی کے عہد میں بنگال میں پیدا ہوئے اور اپنی والہانہ شخصیت کے اثر سے سارے بنگال کو کرشن پریم میں رنگ دیا۔ اپنے وجدان سے چیتنہ ہی نے برندابن دریافت کیا۔ جہاں ویشنو عقیدت کے مطابق راس لایلا میں جیوانما اور پرمانما کا ابد الآباد تک وصال ہوتا رہے گا۔ یہی ورندابن آج بھی سارے ویشنوں کا مرکزی معبد ہے۔ خود چیتنہ نے اس جگہ کو اپنا تبلیغی مرکز بنایا۔ اور ان کے بعد ان کے شش بھی یہیں مقیم رہے۔

چیتنہ ہی کی طرح ویشنوسمیردائے (ویشنو فرقہ) کی دوسری عظیم شخصیت ولہہ آچاریہ (۱۴۷۸ء سے ۱۵۳۰ء تک) کی تھی۔ جو ویشنوں کے مستند عالم اور گرو ہیں۔ شاعر اعظم سورداس ولہہ آچاریہ ہی کے شش تھے۔ آج بھی ویشنوں میں ولہہ سمیردائے غالباً سب سے بڑا گروہ ہے۔ ولہہ آچاریہ کا اشٹ دیوتا کرشن کا وہ معصوم بال روپ تھا جو بشودھا کی گود میں رہتا تھا۔ ولہہ سمیردائے والے کرشن کے اس روپ کو »لال« کے پیارے نام سے پکارتے ہیں۔

ولہہ آچاریہ نے بھگتی اور پریم میں ایک تخصیص پیدا کی۔ یہ تخصیص صرف اسی حد تک نہیں گئی کہ رام اور کرشن کی بھگتی الگ ہو گئی۔ بلکہ بات یہاں تک پہنچی کہ اگر بال کرشن تمہارے اشٹ ہیں تو مندر کے بال کرشن یا کسی دوسرے ویشنو کے گھر کے بال کرشن تمہارے لئے صرف واجب تعظیم ہیں۔ لیکن تمہارا حقیقی اشٹ بال کرشن کی وہ مورتی ہے جو گرو نے تم کو دی ہے اور جسے اپنے گھر میں استھاپت کر کے تم اس کی پوجا کرتے ہو۔ اپنے دکھ۔ سکھ تم اسی مورتی سے کہہ سکتے ہو۔ کسی اور مورتی کے سامنے دعا یا التجا منع ہے۔

تلسی داس کے اشٹ دیوتا بال رام یا راجہ رام نہ تھے۔ وہ چترکوٹ کے رمتے رام کو اپنا اشٹ مانتے تھے جن کی شخصیت کی تکمیل دھنش بان کے بغیر نہیں ہوتی۔ ایک دن وہ کرشن مندر میں گئے۔ کرشن

जयदेव से प्रभावित होकर मैथिली के महान कवि विश्वामित्र (१३८० ई० से १४४८ ई० तक) ने राधा और कृष्ण के गीत लिखे, जिनमें कवि के श्रृंगारित स्वभाव ने राधा को अति सुंदर रूप में पेश किया है ।

भक्ति आंदोलन को यथाक्रम दर्शाने में रामानुज ने आरंभ किया जिसको उनके शिष्य रामानंद काशी में लाए, रामानंद राम भक्त थे । लेकिन उनमें था उनके सम्प्रदाय में राम और कृष्ण का विभाजन न था, वह उन दोनों को एक ही समझते थे, क्योंकि ये दोनों विष्णु के अवतार हैं । रामानंद का पंथ यूनो बहुत विस्तृत है लेकिन उनके शिष्यों में कबीर और रैदास का विशेष महत्त्व प्राप्त है । कबीर एक मुसलमान जुलाहे थे और रैदास चमार थे यही रैदास मीरा के गुरु हैं, जैसा स्वयं मीरा ने कहा है ।

“रैदास सन्त मिले मोहे सनगुरु देही सुगत सहदानी”

कबीर का काव्य एक संगम गुरुदस्ता है, जिसमें वैष्णव मत का श्रृंगार नयनाकृता क्रान्तिकारी की ललकार, तमोवृक्ष का बाहिरद्वलवृद्ध या निर्गुण ब्रह्म और देश काल में अवतार लेनेवाला समुगल परमेश्वर राज सच हो कुल भोज है, अपनी अंतीम अवस्था में वह एक नये धर्म कबीरपंथ के संस्थापक बने ।

कबीर की अंतिम अवस्था में प्रभाव में गुरुनानक का उदय हुआ । इनके अनिग्रित उस समय तक, सूफ़ी समुदाय हिन्दुस्तान में उत्तर से लेकर दक्षिण तक और पूरब से पश्चिम तक फैल चुका था । खुद मीरा के राजस्थान में कई सौ साल से ख्वाजा मुईनुद्दीनचिश्ती की दरगाह भोज्य थी । उन सब महानुभावों का प्रेम संदेश भी भक्ति आंदोलन का अनुमोदक बना ।

भक्ति आंदोलन और वैष्णव मत से महान गुरु चैतन्यमहा प्रभु (१४७६ से १५३४) तक कबीर की के युग में बंगाल में पैदा हुए और अपने उन्नत व्यक्तित्व से सारे बंगाल को कृष्ण प्रेम में लाने का दिया, अपनी अंतः प्रेरणा में चैतन्य ही ने वेदावन का पता लगाया, जहाँ वैष्णव मतानुसार जीवात्मा और परमात्मा का अनेककाल तक मिलन होता रहेगा । यही वेदावन आज भी सारे वैष्णवों का केंद्रिय पूज्य स्थान है । स्वयं चैतन्य ने इसी स्थान को अपना प्रचार केंद्र बनाया, और उनके बाद उनके शिष्य भी यहीं निवास करने रहे ।

चैतन्य ही की तरह वैष्णव सम्प्रदाय की दूसरी महान व्यक्ति बल्लभाचार्य (१४७८ से १५३० तक) भी थे जो वैष्णवों के महान पीढ़ित और गुरु हैं महाकवि मुरदाम बल्लभाचार्य ही के शिष्य थे । आज भी वैष्णवों में बल्लभ सम्प्रदाय समर्थतः सबसे बड़ा भिन्न है । बल्लभाचार्य का इष्ट देवता कृष्ण था वह मनमोहित बालरूप था जो यशोधा की गोद में रहता था । बल्लभ सम्प्रदाय वाले कृष्ण के इस रूप को ‘ लाल ’ के प्यारे नाम से पुकारते हैं ।

ویشنو کے پیار کا نمائندہ ہے اور آخرالذکر کردار ویشنو کی طاقت اور حکمت کا مظہر ہے ۔

گوالے کرشن کا کردار گیارھویں اور بارھویں صدی عیسوی میں کافی مقبول ہوا اور ان کی محبوبہ گوالن رادھا کا نام بھی لیا جانے لگا۔ رادھا اور کرشن کے ملاپ کو روح اور خدا کا وصال بتایا گیا ہے رادھا اور کرشن کی رومانی اور روحانی کہانی کے ایک جزو کو سب سے پہلے بارھویں صدی کے آخر میں سنسکرت شاعر جے دیو نے گیت گووند کے نام سے اعلیٰ ادبی قالب بخشا۔ اس تمثیلی (ڈرامائی) نظم میں سنسکرت ڈرامے کے نائک (ہیرو) اور نایکہ (ہیروئن) کو کرشن اور رادھا کی صورت میں پیش کیا گیا ہے ۔ سنسکرت ڈرامے میں بنیادی کردار نایک کا ہونا ہے ۔ لہذا جے دیو نے یہ نظم کرشن کے زاویے سے کہی ہے ۔ گیت گووند نے رادھا اور کرشن کے رومانی تصور کے لئے نئی راہیں تیار کر دیں ۔

جے دیو سے متاثر ہو کر میتھلی کے عظیم شاعر ودیپتی (۱۳۸۰ سے ۱۶۴۸ء تک) نے رادھا اور کرشن کے گیت لکھے جن میں شاعر کے رومانی مزاج نے رادھا کو حسین ترین صورت میں پیش کیا ہے ۔ بھگتی کی تحریک باضابطہ دکن میں رامانج نے شروع کی جس کو ان کے چیلے رامانند کاشی میں لانے ۔

رامانند رام بھگت تھے ۔ لیکن ان میں یا ان کے خاندانے میں رام اور کرشن کی تقسیم نہ تھی ۔ وہ ان دونوں کو ایک ہی سمجھتے تھے ۔ کیونکہ یہ دونوں ویشنو کے اوتار ہیں ۔ رامانند کا خاندانہ یوں تو بہت وسیع ہے لیکن ان کے چیلوں میں کبیر اور ریداس کو خاص اہمیت حاصل ہے ۔ کبیر ایک مسلمان جولاہے تھے اور ریداس میرا کے گرو ہیں ۔ جیسا خرد میرا نے کہا ہے ع

”ریداس سنت ملے موہے ست گرو دینہی سرت سہدانی“

کبیر کا کلام ایک رنگا رنگ گلدستہ ہے ۔ جس میں ویشنو مت کا شریکار مجدد انقلابی کی للکار ، تصوف کا واحد الوجود یا ”نرگن برمہ“ اور زمان و مکان کے حدود میں اوتار لینے والا ”سگن پریشور“ غرض سب ہی کچھ موجود ہے ۔ آخر عمر میں وہ نئے مذہب کبیر پنتھ کے موجد بنے ۔ کبیر کے آخر عہد میں پنجاب میں گرو نانک کا ظہور ہوا ۔

हनुमान का दास भाव ग्वालों का सखाभाव और यशोधर का वत्सल्य भाव और बाल लीलाएं सब मौजूद हैं, साथ ही प्रभीभक्त की आत्मा, परमात्मा में समाहित होकर उसी की हो जाती है।

वैष्णवमत की एक मुख्य विशेषता यह भी है कि इस की भक्ति में शृंगार रस भरा हुआ है शरीर और आत्मा का कष्ट पहुँचाने वाली तपस्याएं (नासक्तिक तपस्या) इस धर्म में वर्जित हैं एक वैष्णव सन्त का गस्ता आनंद और हर्षोन्माद का है जिस पर चल कर वह मोक्ष पद तक पहुँचता है।

श्रीमद् भागवत के बाद वैष्णव विचार धारण समय के क्रोध में थोड़े रहीं, छठी शताब्दी में वैष्णव मत की दो पुस्तकों का पता चलता है, हरीवंश (कृष्ण वंशमूर्ति) और वैष्णव पुगण अर्थात् वैष्णव का कृष्ण के रूप में अवतार ग्रहण करने की घटना। इन पुस्तकों से यह अनुमान होता है कि लगभग षट् हजार वर्ष पहले भी वैष्णव मत का अस्तित्व था।

द्वी शताब्दी में अबसे बारह सौ साल पहले एक और वैष्णव ग्रंथ भागवत पुगण मिलता है। जिसमें कृष्णके अवतार लेनेकी घटना का विस्तार से उल्लेख किया गया है। इस ग्रंथ में कृष्ण का प्रेम एक ग्वालन से बताया गया है। लेकिन राधा का नाम नहीं लिया गया है। भागवत पुगण में कृष्ण का मथुरा में पैदा होना गोकुल में ग्वालों के साथ पाठनपोषण होना, एक ग्वालन से उनका प्रेम फिर इस ग्वालन को छोड़ कर मथुरा जाना, वहाँ से द्रागका पहुँचना और राजा होना आदि किसी क्रम विस्तार से व्यान हुआ है। इस पुस्तक में कृष्ण के दो रूप हैं, एक ग्वाले कृष्ण का और दूसरा द्रागका के राजा कृष्ण का, पहला रूप वैष्णव प्रेम का प्रतिनिधित्व करता है और दूसरा पात्र वैष्णव शक्ति तथा बुद्धि का प्रतिबिंब है।

ग्वाले कृष्ण की कथा ११वीं और १२वीं शताब्दी में अधिक लोकप्रिय हुई और कृष्ण का प्रेमिका ग्वालन राधा का नाम भी लिया जाने लगा, राधा और कृष्ण के मिलाप को आत्मा और ईश्वर का सम्मिलन बताया गया है। और इस सम्मिलन को इतना महत्व दिया गया कि युग स्थापित नैतिक मूल्य उनके रास्ते में खड़े नहीं हो सकते थे।

राधा और कृष्ण की शृंगारित और आध्यात्मिक कहानी के एक नाम को, सबसे पहले १२वीं शताब्दी के अंत में संस्कृत कवि जयदेव ने गीत गोविन्द के नाम से श्रेष्ठ साहित्यिक रूप प्रदान किया, इस रूपक काव्य में संस्कृत नाटक के नायक (हीरो) और नायिका (हीरोइन) को कृष्ण और राधा के रूप में लाया गया है। संस्कृत नाटक में प्रमुख पात्र नायक का होता है; इस लिये जयदेव ने यह कविता कृष्ण को प्रमुख पात्र बना कर लिखी है। गीत गोविन्द ने राधा और कृष्ण के शृंगारित काव्य के लिये नई गहँ तैयार कर दीं।

ہوتا ہے اور جس کی مدد سے وہ رام اور کرشن کو ذرے ذرے میں موجود پاکر ان کی بھگتی کرتے ہیں . ۲ - داس بھاؤ وہ ہے جب بھگت ایک داس کی طرح رام یا کرشن کی بھگتی کرتا ہے . اس کی بہترین مثال بھگت پنومان ہیں . ۳ - سکھا بھاؤ وہ ہے جب بھگت ایک دوست کی صورت میں بھگتی کرتا ہے . اس کی مثال وہ گوالے ہیں جو کرشن کے ساتھ کھیلتے تھے . ۴ - واتسلیہ بھاؤ وہ ہے جب بال رام یا بال کرشن کی بھگتی کی جائے . یہ ایک بڑا لطیف بھاؤ ہے . جس کی رو سے دشرت ، کوشلیا بلکہ خود شیو بال رام کے بھگت ہیں اور تند ، یشودھا اور ولبھہ اچاریہ بال کرشن کے بھگت ہیں . ۵ - پریم بھاؤ سب سے اہم بھاؤ ہے . اس میں رشی کا شانت بھاؤ ، پنومان کا داس بھاؤ ، گوالوں کا سکھا بھاؤ اور یشودھا کا واتسلیہ بھاؤ اور بال لیلانی سب موجود ہیں . ساتھ ہی پریمی بھگت کی آتما پرمانما سے واصل ہو کر اُسی کی ہو جاتی ہے .

ویشنومت کی ایک اہم خصوصیت یہ بھی ہے کہ اس کی بھگتی میں شرننگارس بھرا ہوا ہے . جسم اور روح کو ایذا پہنچانے والی ریاضتیں (نامسک تپسیا) اس مذہب میں سخت ممنوع ہیں . ایک ویشنو سالک کا راستہ آند اور سرور ہے جس سے وہ اپنی اعلیٰ منزل تک پہنچتا ہے . شری مد بھاگوت کے بعد ویشنو تصورات وقت کے اندھیرے میں کھوئے رہے . چھٹی صدی عیسوی میں ویشنو مت کی دو کتابوں کا پتہ چلتا ہے . ہری وش (کرشن کا نسب نامہ) اور وشنو پران یعنی وشنو کا کرشن کی صورت میں اوتار لینے کا واقعہ . ان کتابوں سے یہ اندازہ ہوتا ہے کہ تقریباً ڈیڑھ ہزار سال پہلے بھی ویشنومت موجود تھا .

نویں صدی عیسوی میں اب سے بارہ سو سال پہلے ایک اور ویشنو گرتھ بھاگوت پران ملتا ہے . جس میں کرشن کے اوتار لینے کا واقعہ مزید تفصیلات سے بیان ہوا ہے . اس گرتھ میں کرشن کا پریم ایک گوالں سے بتایا گیا ہے . لیکن رادھا کا نام نہیں لیا گیا ہے . بھاگوت پران میں کرشن کا متھرا میں پیدا ہوا . گوکل میں گوالوں کے ساتھ پرورش پانا . ایک گوالں سے ان کا پریم پھر اس گوالں کو چھوڑ کر متھرا جانا . وہاں سے دوارکا پہنچنا اور راجہ ہونا وغیرہ کسی قدر تفصیل سے بیان ہوا ہے . اس کتاب میں کرشن کے کردار کے دو پہلو ہیں . ایک گوالے کرشن کا اور دوسرا دوارکا کے راجہ کرشن کا اول الذکر کردار

और भागा और उधर को स्वयंभू प्रमाणित करके उसकी पूजा का आनन्द लेना चाहा, यहाँ से भक्ति-आंदोलन का प्रारम्भ होता है। जिस के दो रूप हैं (१) नरनागयण मत (२) सात्वत मत

नरनागयण मत में शौर्य और कर्म पर जोर दिया गया है और इस मत का प्रतिनिधि ग्रंथ महाभारत (गीता सहित) है। अथवा इस भक्ति के प्रतिनिधि भक्त अर्जुन हैं। नरनागयण मत का केन्द्रमथल मथुरा और उसके निकट बंती क्षेत्र थे। सात्वतमत प्रेम मत है। और उसका प्रतिनिधि ग्रंथ श्री मदभागवत है। इस मत का केन्द्र चितौड़ के करीब “माध्यमिका” नगरी में था जो अब सिर्फ नगरी कहलाता है।

श्रीमदभागवत गीता के लिए एक बड़ी रोचक कहानी विख्यात है जिस से भक्ति की वास्तविकता समझ में विदित होती है। व्यास मोग महान हिन्दू ग्रंथों के लेखक हैं। लेकिन इन असंख्य अमूल्य ग्रंथों की रचना के बाद भी उनका मन अशांत रहता था। एक दिन देव ऋषि नारद से उन्होंने ने अपनी अशांती की शिकायत की।

नारद ने कहा कि अभी तक तुमने ज्ञानग्रंथ लिखे हैं। अब प्रेम ग्रंथ लिखो मनकी शान्ति मिल जाएगी। इसके बाद व्यास ने अपने महान ग्रंथ श्रीमद भागवत का सृजन किया।

भक्ति किसी भी देवी या देवताकी हो सकती है। लेकिन भक्ति आन्दोलनका अर्थ केवल वैष्णव धर्म है यह माना जाता है कि संसार में जब जब पाप और अत्याचार बढ़ता है तो स्वयं विष्णु भौतिक शरीर में अवतार लेकर सुधार के लिये आते हैं। इस तरह नौ बार धरती पर विष्णुका अवतार हो चुका है। लेकिन वैष्णव मत का सम्बंध केवल राम और कृष्ण के अवतारिय अस्तित्व से है और उन्हीं से अधिक प्रेम इस धर्मका मूल उद्देश्य है। इस भक्तिमें पांच भाव हैं। (१) शांतभाव (२) दासभाव (३) सखाभाव (४) वात्सल्यभाव (५) प्रेमभाव

१ - शांत भाव वह है जो ऋषियों और वनवासी भक्तों में होता है। और जिस की सहायता से वह राम और कृष्ण को कण कण में उपस्थित पाकर उनकी भक्ती करते हैं। २ - दास भाव वह है जब भक्त एक दास की तरह रामया कृष्ण की भक्ती करता है, इस का अति उत्तम उदाहरण भक्त हनुमान हैं। ३ - सखा भाव वह है जब भक्त एक मित्र के रूप में भक्ति करता है, इस का उदाहरण वह गयाले हैं जो कृष्ण के साथ खेलते थे। ४ - वात्सल्य भाव वह है जब बाल राम या बाल कृष्ण की भक्ति की जाय। यह एक बड़ा सूक्ष्म भाव है जिस के अनुसार दशरथ, कौशल्या बलिक स्वयं शिव बाल राम के भक्त हैं। और नंद यशोदा तथा वल्लभाचार्य बाल कृष्ण के भक्त हैं। ५ - प्रेम भाव सब से महत्वपूर्ण भाव है, इस में ऋषि का शांत भाव,

ہمارے ملک میں جب سے تاریخ نویسی کا آفتاب طلوع ہوا ہے اور واقعات زمان و مکان کے تعین کے ساتھ بیان ہونے لگے ہیں اسی وقت سے مانکھ، جین اور بدھ مت کے کوہ پیکر فلسفے بہ شکل مذہب ہمارے سامنے ہیں جن کی غربال کاری نے خدا پر بھی اعتقاد کی گنجائش نہیں رکھی۔ ذہن، دانش اور استدلال کی اس تیز دھوپ سے رس کا پیاسا ہو کر دل کی طرف بھاگا اور خدا کو قائم بالذات قرار دے کر اس کی پرستش کے مزہ لینا چاہے۔ یہیں سے بھگتی کی تحریک کا آغاز ہوتا ہے جس کی دو شکلیں ہیں۔ نرنارائن مت، سائوت مت۔

نرنارائن مت میں شجاعت اور کرم پر زور دیا گیا ہے اور اس کی نمائندہ کتاب مہا بھارت (مع گیتا) ہے۔ نیز اس بھگتی کے نمائندہ، بھگت ارجن ہیں۔ نرنارائن مت کا مرکز متھرا اور اس کے نواح تھے۔ سائوت مت پریم مت ہے اور اس کی نمائندہ کتاب شری مدد بھاگوت ہے۔ اس مت کا مرکز چتوڑ کے قریب ”مادھیکا نگری“ میں تھا جو اب صرف نگری کہلاتا ہے۔

شری مدد بھاگوت کے لئے ایک بڑی دلچسپ روایت مشہور ہے جس سے بھگتی کی حقیقت سمجھ میں آتی ہے۔ ویاس سارث عظیم ہندو گرتھوں کے مصنف ہیں۔ لیکن ان لاتعداد گراں قدر تصانیف کے بعد بھی ان کا دل سکون سے محروم تھا۔ ایک دن دیورشی نارد سے انہوں نے اپنی بے سکونی کی شکایت کی۔ نارد نے کہا کہ ابھی تک تم نے دانش کے گرتھ لکھے ہیں۔ اب پریم گرتھ لکھو، دل کو شانتی مل جائے گی۔ اس کے بعد ہی ویاس نے اپنا عظیم گرتھ شری مدد بھاگوت تصنیف کیا بھگتی کسی بھی دیوی یا دیوتا کی ہو سکتی ہے۔ لیکن بھگتی تحریک کی اصطلاح کا مطلب صرف ویشنو مذہب ہے۔ یہ مانا جاتا ہے کہ دنیا میں جب جب گناہ اور ظلم بڑھتا ہے تو خود وشنو مادی جسم میں اوتار لے کر اصلاح کے لئے آتے ہیں۔ اس طرح نو بار زمین پر وشنو کا اوتار ہو چکا ہے۔ لیکن ویشنو مت کا تعلق، صرف رام اور کرشن کے اوتاری وجود سے ہے اور ان ہی سے والہانہ عشق اس مذہب کا اصل مقصد ہے۔ بھگتی کے پانچ بھاؤ ہیں۔

۱ شانت بھاؤ۔ ۲ داس بھاؤ۔ ۳ سکھا بھاؤ۔ ۴ واتسلیہ بھاؤ۔ ۵ پریم بھاؤ۔
۱۔ شانت بھاؤ وہ ہے جو رشیوں اور صحرا نشین بھگتوں میں

भूमिका

यह तो नहीं कहा जा सकता कि मीरा हिन्दुस्तानी कवियों में सर्व श्रेष्ठ स्थान की अधिकारी हैं लेकिन इस विचार के सत्य होने में किन्तमात्र भी सन्देह की संभावना नहीं कि मीरा में बड़ी कवयित्री हिन्दुस्तान की धरती आज तक नहीं पैदा कर सकी। किसी भी प्राचीन या अधुनिक हिन्दुस्तानी भाषा में ऐसी कोई कवयित्री नजर नहीं आती जिस हम मीरा के मुक़ाबले में ला सकें। मीरा के भावना लीन प्रभाव पूर्ण गीत आज लगभग साढ़े तीन सौ साल बीतने के पड़चात भी करगड़ों इनसानों के दिल की आवाज बने हुए हैं।

बात को थोड़ा सा और विस्तार दे कर यूँ भी कहा जा सकता है कि सारे विश्व की कवयित्रियों में दो प्रतिभाएँ उस स्थान पर हैं जहाँ कोई कवयित्री नहीं पहुँच सकी है। इन में से एक कवयित्री ईसा से ७०० वर्षपूर्व यूनान की सफ़ो है और दूसरी १६ वीं शताब्दी में हिन्दुस्तान की मीरा। दोनों ने प्रेम कव्य का सूत्रन किया है, दोनों में भावों की तीव्रता है, दोनों के काव्य में एक टीस, एक पीड़ा और एक वेदना है, लेकिन मीरा इस दृष्टि से सफ़ो से श्रेष्ठ हैं कि सफ़ो का प्रेम हाइनास के त्रिस्म और उस के विदित सौन्दर्य से है, जबकि मीरा के प्रेम में एक आध्यात्मिक चित्रता और प्रिय लता है उनके काव्य में शरीर और शरीरियता केवल लक्षण तथा चिह्न रूपों हैं जिनकी सहायता से वह अपने भाव उन दिलों तक पहुँचाती हैं जो कृष्ण के अदृश्य सौन्दर्य को पूरी तरह अनुभव नहीं कर सकते।

मीरा के काव्य और उनके आध्यात्मिक विचारों का महत्त्वपूर्ण आधार भक्ति आंदोलन है जिसको संक्षेप में समझलेना आवश्यक है। मनुष्य ज्ञान के मार्ग पर चलते चलते अन्त में उस स्थान पर आ जाता है जहाँ ज्ञान स्मृतिकोष की एक अड़ पृंजी बन कर रह जाते हैं, इस शैथिल्य अवस्था में बचकर जीव दिल की ओर आकृष्ट होता है और उन आवाजों का आनन्द लेना चाहता है जो जीवन के अमूल्य उपहार हैं। हिन्दुस्तानी बुद्धि धारा का भी यही इतिहास है।

हमारे देश में जब से इतिहास लेखन का सूर्योदय हुआ है और बरनाएँ देश का लियुक्त करके वक्तव्य देने लगी हैं उसी समय से सांख्य, जैन और बौद्धमत के विशाल दर्शन शास्त्र धर्म के रूप में हमारे सामने हैं जिन में बुद्धि की छान फटकने ईश्वर विश्वास की भी जगह नहीं छोड़ी। जीव ज्ञान और प्रेम की इस तेज धारा से हमका प्यासा होकर दिल की

دیباچہ

یہ تو نہیں کہا جاسکتا کہ میرا ہندوستانی شعرا میں بلند ترین مرتبہ رکھتی ہیں۔ لیکن اس نظریے کی صحت میں ذرہ برابر بھی شبہ کی گنجائش نہیں کہ میرا سے بڑی شاعرہ ہندوستان کی سرزمین آج تک نہیں پیدا کرسکی۔ کسی بھی قدیم یا جدید ہندوستانی زبان میں ایسی کوئی خاتون شاعرہ نظر نہیں آئی جسے ہم میرا کے مقابلے میں لاسکیں۔ میرا کے جذبات میں ڈوبے ہوئے سراپا ناثر گیت آج تقریباً ساڑھے تین سو سال گزرنے کے بعد بھی کروڑوں انسانوں کے دل کی آواز بنے ہوئے ہیں۔

بات کو تھوڑی سی وسعت دے کر یوں بھی کہا جا سکتا ہے کہ سارے عالم کی شاعرات میں دو ہستیاں اُس جگہ پر ہیں جہاں کوئی شاعرہ نہیں پہنچ سکی ہے۔ ان میں سے ایک شاعرہ ۷۰۰ قبل مسیح میں یونان کی سیفو ہے اور دوسری سولہویں صدی عیسوی میں ہندوستان کی میرا ہیں۔ دونوں نے عشقہ شاعری کی ہے۔ دونوں میں شدت جذبات ہے۔ لیکن دونوں کے کلام میں ایک ٹیس، ایک درد اور ایک کرب ہے۔ لیکن میرا کو اس اعتبار سے سیفو پر فضیلت حاصل ہے کہ سیفو کا عشق گوشت پوست کے جسم اور اس کے ظاہری حسن سے ہے۔ جبکہ میرا کے عشق میں ایک الہیاتی تقدس اور طہارت ہے۔ اُن کے کلام میں جسم و جسمانیات صرف علامتی حیثیت رکھتے ہیں اور ان علامات کی مدد سے وہ اپنے جذبے کو ان دلوں تک پہنچاتی ہیں جو کرشن کی غیر مرئی شخصیت کے حسن کا پوری طرح درک نہیں کرسکتے۔

میرا کی شاعری اور معتقدات کے پس منظر میں اہم ترین شے بھگتی کی تحریک ہے۔ جس کو اجمالاً سمجھ لینا ضروری ہے۔ انسان دانش کے راستے پر چلتے چلتے آخر اُس منزل پر آجانا ہے جہاں علم ذخیرہ اندوز حافظے کا ایک پُرجمود سرمایہ بن جاتا ہے۔ اس یک رنگی سے گھبرا کر ذہن دل کی طرف متوجہ ہوتا ہے اور اُن کیفیات کا مزہ لینا چاہتا ہے جو حیات کے گراں قدر عطیے ہیں۔ ہندوستانی ذہن کی بھی یہی سرگذشت ہے۔

جو میں ایسا جانی کے پیت کیے 'دکھ ہوئے
نکر ڈھنڈھورا پیتی کے پیت نہ کیجو کوئے

جو میں ऐसा जानती कि पीत किये दुख होय
नगर दैदौग पीततः कि पीत न किजो कोय

ہولی آنی پیاری رنگ سوں بھری دی (۱۲۰)
 ہولہی آئی پیاہی رنگ سوں بھری دی (۱۲۰)

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥



پیر میاؤں

میرا بائی کی ایک سو باون نظمیں

مرتبہ

سردار جعفری

دیباچہ اور فرہنگ :

ڈاکٹر صفدر آہ سیٹاپوری

ہندوستانی بک ہرسٹ

ایف - شری نکتین - شیو ساگر اسٹیٹ

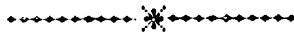
ڈاکٹر اپنی ہسٹن روڈ بمبئی - ۱۸

U 4630

नाम : मीगबाई

जन्म : १४९८

मृत्यु : १५६३ अथवा १५६५



نام : میرا بانی

پیدائش : ۱۴۹۸ء

وفات : ۱۵۶۳ یا ۱۵۶۵

प्रेम वाणी

(मीराबाई के एक सौ बावन पदों का संकलन)

सम्पादन

सरदार जाफरी

भूमिका और शब्दावली :

डॉ. सफ़दर “आह” सीतापुरी

हिन्दुस्तानी बुक ट्रस्ट

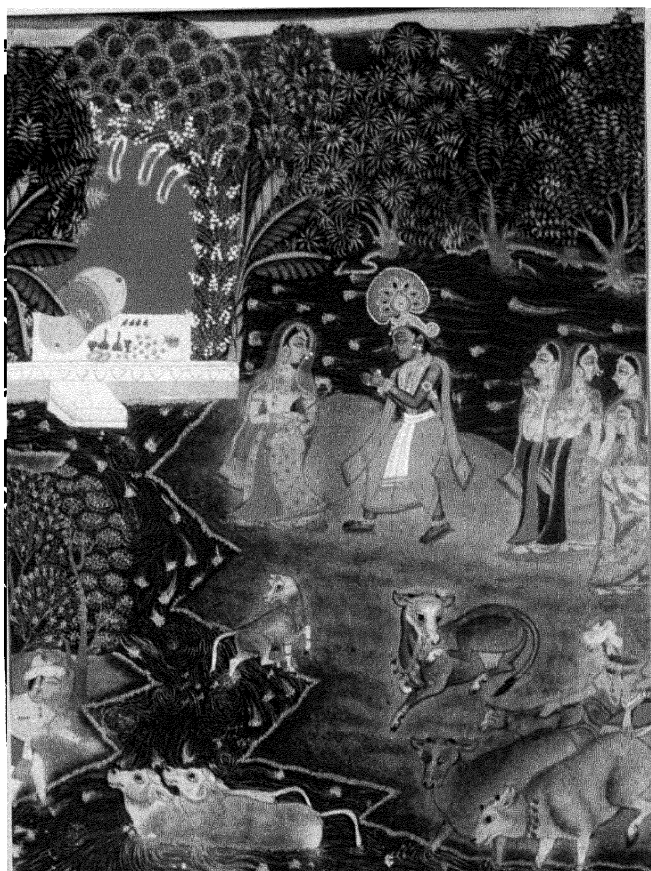
“एफ़” श्री निकेतन शिवसागर इस्टेट

डा. एनीबेसिन्ट रोड बम्बई — १९

شاہ علی بندہ، حیدرآباد
مکتبہ سید سلیمان
الکاشمیری

ہمرو پرنام بانکے بہادی کو (۷۴)

ہمراگو پرنام بانکے بیہادی کو (۷۵)



हिन्दुस्तानी बुक ट्रस्ट (बम्बई) एक साहित्यिक संस्था है जिसका उद्देश्य व्यापार नहीं है और जिसके सब खर्चे निजी अनुदान से पूरे किये जाते हैं। उसके तत्वाधान में हिन्दी, उर्दू और फ़ारसी के उच्चकोटि के कवियों का काव्य उर्दू और देवनागरी लिपी में एक साथ प्रकाशित किया जाता है। आधुनिक साहित्य भी इस संस्था का एक आवश्यक विभाग है। हिन्दी और उर्दू पढ़ने और बोलने वालों के बीच भावनात्मक एकता पैदा करना और छुपाई के स्तर को ऊँचा करना हिन्दुस्तानी बुक ट्रस्ट के उद्देश्यों में शामिल है।

ट्रस्टी
विद्या शंकर
लाला योधराज
सैयद शहाबुद्दीन दसनवी

एडीटर
डा० मुल्कराज आनन्द
सरदार जाफ़री

U4630

۸۹۱۵۴۳۱۱

م
پ

نہ

ہندوستانی بک ٹرسٹ (بمبئی) علم و ادب کا
ایک غیر تجارتی ادارہ ہے جس کے اخراجات ذاتی عطیات
سے پورے ہوتے ہیں اس کے زیر اہتمام ہندی ، اردو اور
فارسی کے برگزیدہ شعرا کا کلام بیک وقت اردو اور
دیوناگری رسم خط میں شائع کیا جاتا ہے ۔ جدید ادب
بھی اس ادارے کا ایک ضروری شعبہ ہے ۔ ہندی اور اردو
بولنے اور پڑھنے والوں کے درمیان ہم آہنگی پیدا کرنا اور
طباعت کے معیار کو بلند کرنا ہندوستانی بک ٹرسٹ کے
اہم ترین مقاصد میں شامل ہے ۔

U

891.4311

M P

ٹرسٹی

ودیا شنکر

لالہ یودھ راج

سید شہاب الدین دستوی

ایڈیٹر

ڈاکٹر ملک راج آنند

سردار جمعری

ہندوستانی بک ٹرسٹ پرکاشن - ۱

مطبوعات ہندوستانی بک ٹرسٹ ' سلسلہ نمبر - ۱

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. ۸۹۱۵۹۳۱۱

Accession No. U4630

Author

Title

میر
پریم وانی مرتبه د مترجم سردار حفوی

This book should be returned on or before the date last marked below.
